केलि कुञ्ज

KELI KUNJ KI LEELA

॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

निवेदन

इस संग्रहमें संकलित लीलाएँ एक परमरसिक संतका कृपा-प्रसाद है। किन्हीं महासिद्ध संतके अनुरोधपर व्रजभावके एक भावुक भक्तके लिये इन रसिक संतने स्वानुभूत लीलाओंको लिपिबद्ध किया था। सत्त्व-रज-तमकी छायासे विरहित निर्ग्रन्थ संतके मानसपटलपर ही दिव्य वृन्दावन अवतरित हुआ करता है। भोगकी स्पृहासे, यहाँतक कि मोक्षकी कामनासे सर्वथा शून्य संतके त्रिगुणातीत महाशुद्ध सत्त्वमय मानसकी ही परिणति हो जाती है दिव्य वृन्दावनके रूपमें, जो बन जाता है लीलाधाम अद्भुत-से-अद्भुत उत्तम-से-उत्तम मधुर-से-मधुर भगवल्लीलाओंका। महाभावमयी श्रीराधा एवं परमरसस्वरूप श्रीकृष्णकी जो-जो, जैसी-जैसी लीलाएँ संतकी उस मानस-लीलाभूमिपर आविर्भूत होती हैं, इन परम गहन, परम पवित्र एवं परम सरस लीलाओंकी ओर वाणीसे भी संकेत कर पाना सम्भव नहीं होता। वास्तविकता भी यही है कि स्वानुभूत गहन लीलाओंकी यह रहस्यमयता वाणीका विषय है भी नहीं। यह रहस्यमयता वाणीसे सदा ही परे रही है और भविष्यमें सदा रहेगी भी।

परंतु लीलाओंके ऐसे अंश, जो वाणी द्वारा व्यक्त किये जा सकते थे, वे भी सम्पूर्ण रूपसे लिपिबद्ध नहीं हो पाये। महासिद्ध संतके अनुरोधपर जिनके लिये ये लीलाएँ लिखी गयी थीं, उनके मानसके स्तरको देखकर ही वर्णनपर अंकुश लगाये हुए शब्दाभिव्यक्तिको सीमाके भीतर रखना पड़ा था। अतः श्रीराधाकृष्णकी परम रसमय लोकोत्तर लीलाओंके जो-जो दृश्य दृष्टि-पथपर आये अथवा जो-जो संवाद श्रुति-पथपर आये, उन सबका पर्याप्त अंश इन रसिक संतने लिपिबद्ध किया ही नहीं। वस्तुतः वैसे-वैसे गम्भीर रहस्यमय अंशके पठन-श्रवणके हम अधिकारी ही कहाँ हैं? जिन्होंने गङ्गाजलसे धोकर अपनी दृष्टिको मलरहित सत्त्वसम्पन्न तथा स्नेहस्निग्ध नहीं बना लिया है, ऐसे व्यक्तियोंके द्वारा निज-निज दृष्टिदोषके कारण यह सम्भव ही नहीं है कि वे इन दिव्य

लीलाओंकी निर्दोषता-निर्मलता-अनिन्द्यता-अलौकिकताकी परिधिका स्पर्श भी कर सकें। यही हेतु है कि उन लीलाओंकी दिव्यता-पवित्रताको अक्षुण्ण बनाये रखनेके लिये बहुत-से हृदयस्पर्शी प्रसंग अवर्णित ही रह गये ।

कुछ प्रसंग तो इस प्रकार अभिव्यक्त होनेसे रह गये और कुछ लीलाओंकी अभिव्यक्ति चाह करके भी हो नहीं पायी। मूलतः योजना थी अड़तीस (३८) लीलाओंके लेखनकी। लीला-लेखनकी मूल योजना सम्पूर्ण रूपसे आगे दी जा रही है। इन अड़तीस लीलाओंमेंसे केवल उन्तीस (२९) लीलाएँ ही लिखी जा सकीं, जो इस संग्रहमें संकलित हैं। इन रसिक संतने लीला-चिन्तनकी दृष्टिसे कहीं-कहीं कुछ सांकेतिक निर्देश भी दिये हैं कि किस लीलाका चिन्तन किस तिथिको किस समय करना चाहिये। ये सांकेतिक निर्देश भी आगे लिखे जा रहे हैं, जिससे लीला-चिन्तनमें सहायता मिल सके ।

मूल योजना तथा लिखित लीलाओंका विवरण

* प्रथम दिवसका ध्यान *

१– श्रीललिताजीके निकुञ्जमें श्रीप्रिया-प्रियतमकी जागरण लीला

१– लीला-शीर्षक — जागरण लीला
२– लीला-क्रमाङ्क — १
३– पृष्ठ-संख्या — १

२– श्रीप्रिया-प्रियतमका अपने-अपने घर आकर शय्यापर सो जाना

३– श्रीराधारानीका शय्यासे उठकर अपने महलमें सखियोंद्वारा उबटन, स्नान, ललिताका राधारानीको चित्राका स्वप्न सुनाना

१– लीला-शीर्षक — स्नान लीला
२– लीला-क्रमाङ्क — २
३– पृष्ठ-संख्या — १७

४– श्रीप्रियाका सखियोंद्वारा शृङ्गार, तुलसी-पूजन एवं नन्दभवनकी ओर प्रस्थान

५– नन्दभवनमें प्रियतम श्यामसुन्दरके लिये श्रीप्रियाका भोजन बनाना, श्यामसुन्दरका भोजन, श्रीप्रिया एवं सखियोंका श्यामसुन्दरके

अधरामृत-सिक्त प्रसादका सेवन, गो-चारणके लिये श्यामसुन्दरका वन पधारना, श्रीप्रियाका अपने भवन लौटना

६– श्रीप्रियाकी वन-गमन लीला

१– लीला-शीर्षक — असीमानुराग लीला
२– लीला-क्रमाङ्क — ३
३– पृष्ठ संख्या — २६

७– श्रीललिता-कुञ्जमें मिलन लीला

१– लीला-शीर्षक — भावावेश लीला
२– लीला-क्रमाङ्क — ४
३– पृष्ठ-संख्या — ४०

८– श्रीप्रियाको श्रीश्यामसुन्दरका पतंग उड़ाना सिखाना

९– मधुपान लीला एवं निकुञ्जमें विश्राम

१०– श्रीराधाकुण्डमें जल विहार लीला

१– लीला-शीर्षक — जलकेलि लीला
२– लीला-क्रमाङ्क — ५
३– पृष्ठ-संख्या — ५२
४– चिन्तन-निर्देश — एक-एक लीला पढ़नेके बाद वह लीला प्रतिपदा, तृतीया, पञ्चमी, सप्तमी, नवमी, एकादशी, त्रयोदशी, अमावस्या एवं पूर्णिमा तिथियोंको दोपहरके समय पढ़नी चाहिये।

११– निकुञ्जमें श्रीप्रियाका श्रीश्यामसुन्दरके द्वारा शृङ्गार

१– लीला-शीर्षक — वेणीगूँथन लीला
२– लीला-क्रमाङ्क — ६
३– पृष्ठ-संख्या — ६१

१२– फल भोजन लीला

१– लीला-शीर्षक — फल भोजन लीला
२– लीला-क्रमाङ्क — ७
३– पृष्ठ-संख्या — ६६

१३– श्रीप्रिया एवं सखियोंका प्रसाद-सेवन, श्रीश्यामसुन्दरकी कपट-निद्रा तथा शुक-सारी विवाद लीला

१– लीला-शीर्षक — शुक-सारी विवाद लीला
२– लीला-क्रमाङ्क — ८
३– पृष्ठ-संख्या — ८०

१४– अक्षक्रीड़ा लीला

१– लीला-शीर्षक — अक्षक्रीड़ा लीला
२– लीला-क्रमाङ्क — ९
३– पृष्ठ-संख्या — ९५

१५– सूर्य पूजन लीला

१– लीला-शीर्षक — सूर्य पूजन लीला
२– लीला-क्रमाङ्क — १०
३– पृष्ठ-संख्या — १०९

१६– श्रीप्रियाका वनसे लौटना, प्रियतम श्यामसुन्दरके लिये मिष्टान्न बनाना, स्नान, शृङ्गार एवं प्यारेके वनसे लौटनेकी राह देखना

१७– आवनी लीला

१– लीला-शीर्षक — आवनी लीला
२– लीला-क्रमाङ्क — ११
३– पृष्ठ-संख्या — १२२
४– चिन्तन-निर्देश — यह लीला प्रतिदिन संध्याके समय पढ़नी चाहिये ।

१८– श्रीश्यामसुन्दरका मैया यशोदाद्वारा स्नान, सखाओंके साथ कलेवा

१९– श्रीश्यामसुन्दरकी गोदोहन लीला

१– लीला-शीर्षक — गोदोहन लीला
२– लीला-क्रमाङ्क — १२
३– पृष्ठ-संख्या — १२७

२०– श्रीप्रियाका अभिसार

२१– श्रीयमुना-तटपर श्रीप्रियाके द्वारा श्रीश्यामसुन्दरकी प्रतीक्षा, मञ्जरीका श्रीप्रियाको कथा सुनाना

१- लीला-शीर्षक — प्रेमाप्लावन लीला
२- लीला-क्रमाङ्क — १३
३- पृष्ठ-संख्या — १३४

२२- वन-विहार लीला

१- लीला-शीर्षक — निशानुरञ्जन लीला
२- लीला-क्रमाङ्क — १४
३- पृष्ठ-संख्या — १४५
४- चिन्तन-निर्देश — यह लीला द्वितीया, पञ्चमी, अष्टमी, एकादशी एवं चतुर्दशी तिथियोंको सोनेके पहले रातमें पढ़नी चाहिये।

२३- श्रीयमुना-जलमें कमल-वन-विहार लीला

२४- श्रीयमुना-पुलिनपर रासलीला एवं निकुञ्जमें विश्राम

१- लीला-शीर्षक — रासनृत्य लीला
२- लीला-क्रमाङ्क — १५
३- पृष्ठ-संख्या — १५६
४- चिन्तन-निर्देश — यह लीला तृतीया, षष्ठी, नवमी, द्वादशी एवं पूर्णिमा तिथियोंको सोनेसे पहले रातमें पढ़नी चाहिये।

* द्वितीय दिवसका ध्यान *

२५- श्रीविशाखा-कुञ्जमें श्रीश्यामसुन्दरके द्वारा श्रीप्रियाका शृङ्गार

१- लीला-शीर्षक — शृङ्गार लीला
२- लीला-क्रमाङ्क — १६
३- पृष्ठ-संख्या — १७८
४- चिन्तन-निर्देश — यह लीला द्वितीया एवं दशमी तिथियोंको दोपहरके समय पढ़नी चाहिये।

* तृतीय दिवसका ध्यान *

२६- श्रीचित्राजीके कुञ्जमें आँखमिचौनी लीला

१– लीला-शीर्षक — आँखमिचौनी लीला

२– लीला-क्रमाङ्क — १७

३– पृष्ठ-संख्या — १८३

४– चिन्तन-निर्देश — यह लीला तृतीया एवं तिथियोंको पढ़नी चाहिये।

२७– श्रीयमुना-पुलिनपर श्रीप्रियाके द्वारा श्रीश्यामसुन्दरको श्रीप्रियाका भावावेशमें अपना हृदय खोलकर सुनाना

१– लीला-शीर्षक — प्रस्फुटिता लीला

२– लीला-क्रमाङ्क — १८

३– पृष्ठ-संख्या — १९७

४– चिन्तन-निर्देश — यह लीला प्रतिपदा, चतुर्थी, दशमी एवं त्रयोदशी तिथियोंको पहले याममें पढ़नी चाहिये।

* चतुर्थ दिवसका ध्यान *

२८– श्रीइन्दुलेखाजीके कुञ्जमें मान लीला

१– लीला-शीर्षक — मान लीला

२– लीला-क्रमाङ्क — १९

३– पृष्ठ-संख्या — २१२

४– चिन्तन-निर्देश — यह लीला चतुर्थी एवं द्वादशी तिथियोंको दोपहरके समय पढ़नी चाहिये।

* पञ्चम दिवसका ध्यान *

२९– श्रीचम्पकलता-कुञ्जमें श्रीप्रियाके द्वारा श्रीश्यामसुन्दरकी प्रतीक्षा

१– लीला-शीर्षक — मिलनोत्कण्ठा लीला

२– लीला-क्रमाङ्क — २०

३– पृष्ठ-संख्या — २२३

४– चिन्तन-निर्देश — यह लीला पञ्चमी एवं त्रयोदशी तिथियोंको दोपहरके समय पढ़नी चाहिये।

* षष्ठ दिवसका ध्यान *

३०— श्रीरङ्गदेवीजीके कुञ्जमें श्रीश्यामसुन्दरकी प्रतीक्षामें बैठी हुई श्रीप्रियाकी विचित्र दशा

१— लीला-शीर्षक — प्रतीक्षा लीला
२— लीला क्रमाङ्क — २१
३— पृष्ठ-संख्या — २२५
४— चिन्तन निर्देश — यह लीला षष्ठी एवं चतुर्दशी तिथियोंको दोपहरके समय पढ़नी चाहिये।

* सप्तम दिवसका ध्यान *

३१— श्रीतुङ्गविद्याजीके कुञ्जमें मधुमङ्गलकी विनोद लीला

१— लीला-शीर्षक — विनोद लीला
२— लीला-क्रमाङ्क — २२
३— पृष्ठ-संख्या — २४२
४— चिन्तन-निर्देश — यह लीला सप्तमी एवं पूर्णिमा तिथियोंको दोपहरके समय पढ़नी चाहिये।

* अष्टम दिवसका ध्यान *

३२— श्रीसुदेवीजीके कुञ्जमें-वंशी-गोपन लीला

१— लीला-शीर्षक — वंशी गोपन लीला
२— लीला-क्रमाङ्क — २३
३— पृष्ठ-संख्या — २५२

नवम दिवसका ध्यान

दशम दिवसका ध्यान

एकादश दिवसका ध्यान

द्वादश दिवसका ध्यान

त्रयोदश दिवसका ध्यान

चतुर्दश दिवसका ध्यान

३३– श्रीरङ्गदेवीजीके कुञ्जमें श्रीप्रियाके द्वारा श्रीश्यामसुन्दरकी प्रतीक्षा

१– लीला-शीर्षक — पाद संवाहन लीला
२– लीला-क्रमाङ्क — २४
३– पृष्ठ-संख्या — २६६
४– चिन्तन-निर्देश — यह लीला षष्ठी एवं चतुर्दशी तिथिको दोपहरके समय पढ़नी चाहिये। षष्ठी एवं चतुर्दशीके दिनकी एक और लीला है। मनमें जो सबसे प्यारी उसे पढ़ लेना चाहिये, अथवा पन्द्रह दिनमें षष्ठी एवं चतुर्दशीके दिन, समय निकालकर तीन-तीन लीलाएँ पढ़ लेनी चाहिये।

३४– श्रीरङ्गदेवीजीके कुञ्जमें वंशी-ध्वनिका चमत्कार, अपनी प्रियाकी इच्छा पूर्ण करते हुए श्रीश्यामसुन्दरका वंशी बजाना, वंशी-ध्वनिसे कुण्डके जलका अत्यधिक बढ़ जाना, उस बढ़े हुए जलमें सखी-मण्डली सहित श्रीप्रिया-प्रियतमका निमग्न हो जाना

१– लीला-शीर्षक — वेणु निनाद लीला
२– लीला-क्रमाङ्क — २५
३– पृष्ठ-संख्या — २७४

* अमावस्या दिवसका ध्यान *

३५– श्रीतुङ्गविद्याजीके कुञ्जमें हिंडोला-झूलन लीला

१– लीला-शीर्षक — झूलन लीला
२– लीला-क्रमाङ्क — २६
३– पृष्ठ-संख्या — २८२

* अन्य लीलाएँ *

३६– वर्षामें श्रीराधाकुण्डकी नौकाविहार लीला

१- लीला-शीर्षक — नौकाविहार लीला
२- लीला-क्रमाङ्क — २७
३- पृष्ठ-संख्या — २८५
४- चिन्तन-निर्देश — यह लीला द्वितीया, चतुर्थी, षष्ठी, अष्टमी, दशमी, द्वादशी एवं चतुर्दशी तिथियोंको दोपहरके समय पढ़नी चाहिये। यदि सम्भव हो तो एक-एक लीला पढ़ लेनेके बाद इस नौकाविहार लीलाको भी पढ़ लेना चाहिये।

३७- दीपावली लीला

१- लीला-शीर्षक — दीपावली लीला
२- लीला-क्रमाङ्क — २८
३- पृष्ठ-संख्या — २९२

३८- योगिनी लीला

१- लीला-शीर्षक — योगिनी लीला
२- लीला-क्रमाङ्क — २९
३- पृष्ठ-संख्या — ३०२

इन लीलाओंके साथ इन्हीं रसिक संतद्वारा संकलित पचपन पदोंको भी 'मधुपर्क' शीर्षकके अन्तर्गत अर्थसहित प्रकाशित किया जा रहा है, जो लीला-चिन्तनमें बड़े सहायक सिद्ध हो सकते हैं। इस सारी सामग्रीको प्रकाशित करते समय प्रयास यही रहा है कि कहीं कोई त्रुटि न रह जाये, इसपर भी भूल हो जाना स्वाभाविक है। इस प्रकारकी सभी न्यूनताओंके लिये विनम्र क्षमा-याचना है।

—प्रकाशक

लीला मालिका

१- जागरण लीला	[illegible]
२- स्नान लीला	[illegible]
३- यशोमानुराग लीला	[illegible]
४- भावावेश लीला	[illegible]
५- जलकेलि लीला	[illegible]
६- वेणीगूंथन लीला	६१
७ फलभोजन लीला	६६
८- शुक-सारी विवाद लीला	८०
९- जलक्रीड़ा लीला	९५
१०- सूर्य पूजन लीला	१०९
११- भावनी लीला	१२२
१२- गोदोहन लीला	१२७
१३- प्रेमाप्लावन लीला	१३५
१४- चित्रानुरंजन लीला	१४५
१५- रासनृत्य लीला	१५९
१६- शृंगार लीला	१७८
१७- आँखमिचौनी लीला	१८३
१८- वस्तुविक्रय लीला	१९७
१९- मान लीला	२१३
२०- मिलनोत्कण्ठा लीला	२२२
२१- प्रतीक्षा लीला	२३५
२२- विनोद लीला	२४२
२३- वंशी गोपन लीला	२५५
२४ - पाद संमलन लीला	२६९
२५- वेणु निनाद लीला	२७४
२६- झूलन लीला	२८२
२७- नौका विहार लीला	२८५
२८- दीपावली लीला	२९२

२६- योगिनी लीला ३०२
३०- विशेष ज्ञातव्य ३११
३१- अनुपर्क ३१५
१- जय राधा जय सब सुख राधा ३१६
२- प्रात समय नव कुंज द्वार हूँ ३१६
३- परी बलि कौन अनोखी बान ३१७
४- मंगल आरति हरख उतारी ३१७
५- कुंज द्वार ललना अरु लालन ३१८
६- झूमक सारी हो तन गोरें ३१८
७- लटकत आवत कुंज भवन तें ३१९
८- जयति श्री राधिके सकल सुख साधिके ३२०
९- नवल ब्रजराज को लाल ठाढो सखी ३२१
१०- सुमिरो नट नागर वर सुंदर गोपाल लाल ३२२
११- आज इन दोउन पै बलि जैये ३२३
१२- आज सिंगार निरखि स्यामा को ३२४
१३- सारी सँवारी है सोनजुही ३२४
१४- सोनजुही की बनी पगिया ३२५
१५- आजु राधिका भोरहीं जसुमति घर आई ३२५
१६- महरि कह्यो री लाडिली किन मथन सिखायो ३२६
१७- प्रगटी प्रीति न रही छपाई ३२६
१८- या घर प्यारी आवति रहियो ३२७
१९- हरि सों धेनु दुहावति प्यारी ३२८
२०- धेनु दुहत अति ही रति बाढ़ी ३२८
२१- सिर दोहनी चली लै प्यारी ३२९
२२- खेलन के मिस कुँवर राधिका ३३०
२३- जसुमति राधा कुँवरि सँवारति ३३०
२४- मैं हरि की मुरली बन पाई ३३१
२५- बनी राधा गिरधर की जोरी ३३२
२६- सघन कुंज की छाँह मनोहर ३३३
२७- बैठे हरि राधा संग कुंज भवन अपने रंग ३३३
२८- इक टक रही नारि निहार ३३४

२९– देखन देत न बैरिन पलकैं [illegible]
३०– तेरी भौंह की मरोरन तें ललित त्रिभंगी भये [illegible]
३१– जैसे तेरे नूपुर न बाजहीं [illegible]
३२– चलो क्यों न देखें री खरे दोऊ [illegible]
३३– राधिका आज आनंद में डोलै [illegible]
३४– कदम बन बीथिन करत बिहार [illegible]
३५– पासा खेलत हैं पिय प्यारी [illegible]
३६– आज तेरी फबी अधिक छबि न्यारी नागरी ३[illegible]
३७– भाग्यवान बृषभान सुता सी ३४[illegible]
३८– राधा मोहन करत बियारी ३४[illegible]
३९– अँचवन करत लाडिली लाल ३४[illegible]
४०– बीरी सरस सखी रचि दीनी ३४[illegible]
४१– प्यारी पियहि सिखावति बीना ३४[illegible]
४२– आज गुपाल रास रस खेलत ३४२
४३– रास मंडल रच्यो रसिक हरि राधिका ३४३
४४– राधिका सम नागरी नवीन को प्रवीन सखी ३४५
४५– बेसर कौन की अति नीकी ३४६
४६– तुव मुख कमल नैन अलि मेरे ३४७
४७– तुव मुख चंद चकोर ए नैना ३४७
४८– राधा प्यारी तुम्हीं लगत हौ मैं कैसो ३४८
४९– प्रीतम तुम मेरे दृगन बसत हो ३४८
५०– आज बने सखि नंदकुमार ३४८
५१– खंजन नैन रूप रस माते ३४९
५२– अब पौढ़न कौ समय भयो ३५०
५३– बिहारिनि अलकलड़ैती हो ३५०
५४– चाँपत चरन मोहन लाल ३५०
५५– चलि चलि लाडिली के चरन ३५१

पद तालिका

१– झलकत आवत कुंज भवन ते १
२– आजु गई हुती कुंज लौं ३०
३– कोई एक साँवरो री इत है आवे आई ३८
४– एरी आज काल्ह सब लोक लाज त्याग दोउ ४१
५– हौं बलि जाऊँ नागरि स्याम ५१
६– बैनी गूँथि कहा कोऊ जानै ६१
७– रीझि रीझि रहसि रहसि हँसि हँसि उठै ७३
८– पहिले तो देखो आय मानिनी की सोभा लाल ८९
९– ओठ जीवबंधु वारौं हाँसी सुधाकंद वारौं ९१
१०– कृष्णतामपरं कदापि सवेदणं न करोमि ९१
११– राधिका कान्ह को ध्यान धरे ९२
१२– लाल मज भूषन मन भावते नेक बन ते बेगे आव हो १२३
१३– त्वमसि मम भूषणं त्वमसि मम जीवनम् १३०
१४– रहसि संविदं हृच्छयोदयम् १३१
१५– बसो मोरे नैनन में नंदलाल १३२
१६– ऐसो पिय मान न कीजै हो १३५
१७– चालौं वाही देस प्रीतम १३८
१८– नव-कुल-चंद वृषभानु-कुल-कौमुदी १४४
१९– सखि हौं स्याम रंग रँगी १५१
२०– प्यारी तेरे नैननि को ब्यौहार १५५
२१– मन रूप के रंग रँगी सजनी १५६
२२– चख कोर चकोर बनाय भटू १५६
२३– बन्यौ मोर मुकुट नटवर वपु १६८
२४– देखो देखो री नागर नट १६९
२५– तू है सखी बड़भाग भरी १८२
२६– कैसे जाऊँ री बीर ! पद भरिये नीर १८५

४७– बसो मोरे नैनन में दोउ चंद	२१२
४८– राधा प्यारी माय सुनो एक मेरी	२१६
४९– जयति नव नागरी [illegible]	२२०
५०– मैं अपनो रिझवार लखे री	२२४
५१– मो मन गिरिधर छवि पै अटक्यौ	२३५
५२– स्याम दृगन की चोट बुरी री	२४०
५३– चकि चकि चकि चकि कुँवरि राधिके	२४१
५४– बाँसुरी तू कवन गुमान भरी	२४६
५५– स्याम रूप में तेज अधर रस चाखहिं निचाऊँ	२६०
५६– राजत निकुंज धाम ठकुरानी	२६५
५७– कोई दिलवर की डगर बताय दे रे	२७०
५८– मोहन मुखारविंद पै मनमथ कोटिक वारौं री माई	२७२
५९– रे मन भज नित निज नंद प्यारे	२७५
६०– मानिनि को मन रूप को योवन	२८०
६१– कुञ्ज नागरि नागर छैल	[illegible]
६२– अधरं मधुरं वदनं मधुरम्	[illegible]
६३– पिया तोहि नैनन ही में राखूँ	२९१
६४– मोहन भूली हौं नहीं	[illegible]
६५– मुख मुख चंद चकोर मेरे नयना	[illegible]

॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

जागरण लीला

लटकत आवत कुंज भवन तें।
ढुरि ढुरि परत राधिका ऊपर आलस सिथिल गवन तें॥
चौंक परत कबहूँ मारग बिच चलत सुगंध पवन तें।
भर उसाँस राधा बियोग भय सकुचे दिवस रवन तें॥
आलस मिसं न्यारे न होत हैं नेकहु प्यारी तन तें।
'रसिक' टरौ जिन दसा स्याम की कबहूँ मेरे मन तें॥

विश्राम-निकुञ्जमें श्रीप्रिया-प्रियतम अत्यन्त सुन्दर शय्यापर लेटे हुए हैं। विश्राम-निकुञ्जकी सजावट अत्यन्त मनोहर है। मणियोंका हलका धीमा नीला प्रकाश फैल रहा है। खिड़कियोंपर पीले मखमलके पर्दे लगे हुए हैं, जो यमुना-पुलिनपर प्रवाहित होते हुए मन्द समीरके झोंकोंसे थोड़े-थोड़े हिल रहे हैं। समस्त निकुञ्ज दिव्यतम सुगन्धिसे भरा है।

निकुञ्जके पूर्व एवं दक्षिणके कोनेमें सुन्दर मणिजटित सोनेकी चौकी है, जिसपर सुन्दर जलसे भरी हुई दो सुन्दर झारियाँ रखी हुई हैं। कुछ सुन्दर-सुन्दर गिलास रखे हैं। उसी चौकीके बगलमें एक और भी चौकी है, जिसपर चौड़े मुँहके सोनेके दो गमजे (प्रक्षालन-पात्र) हैं। निकुञ्जके पश्चिम एवं दक्षिणके कोनेमें भी अत्यन्त सुन्दर चौकी है, जिसपर तरह-तरहके शृंगारके समान रखे हैं। उसीकी बगलमें एक अन्य चौकीपर बहुत बड़ा दर्पण रखा हुआ है।

निकुञ्जकी समस्त दीवालपर पीले रंगकी मखमली चादर इस ढंगसे लगायी गयी है मानो पीले मखमली वस्त्रोंका ही निकुञ्ज बना हुआ हो। उस वस्त्रपर अत्यन्त सुन्दर ढंगसे श्रीप्रिया-प्रियतमकी निशाकालीन विहार-लीलाके सुन्दर चित्र इस ढंगसे बने हुए हैं कि जिन्हें देखकर

ऐसा प्रतीत होता है मानो ये चित्र नहीं, सजीव मूर्ति हों। निकुञ्जके पूर्वी हिस्सेमें सोनेका पिंजरा है, जिसमें श्रीराधारानीकी प्रिय सारी (मैना) बैठी है।

ऊषाकाल उपस्थित हो गया है। वृन्दा हाथमें सोनेका एक पिंजरा लिये हुए निकुञ्जके दरवाजेके पास बहुत धीरे-धीरे आकर खड़ी हो जाती हैं। मञ्जरियाँ पहलेसे ही उठकर अपनी-अपनी शय्यापर बैठी हैं। वृन्दा इशारेसे धीरे-धीरे उन्हींसे कुछ पूछती हैं। मञ्जरियाँ इशारेसे ही उन्हें मन्द मुस्कानके साथ जवाब देती हैं। वृन्दा निकुञ्जके पूर्वकी तरफ चली जाती हैं तथा जहाँपर भीतर सारी पिंजरेमें बैठी थी, उसी जगह खिड़कीके छिद्रसे भीतर दृष्टि डालकर सारीको कुछ इशारा करती हैं। सारी भी इशारेमें आँख घुमाती है। वृन्दाके हाथमें जो पिंजरा था, उसमें एक तोता एवं एक सारी बैठी थी। वृन्दा उस पिंजरेके दरवाजेको खोल देती हैं। सारी एवं तोता धीरेसे उड़कर उस खिड़कीकी राहसे भीतर चले जाते हैं तथा जिस पिंजरेमें राधारानीकी प्रिय सारिका बैठी थी, उसपर जाकर बैठ जाते हैं।

निकुञ्ज-महलके चारों ओर सघन कदम्ब-वृक्षावली लगी हुई है। उसपर तरह-तरहके पक्षी बैठे हैं, पर सभी बिल्कुल शान्त हैं। सभी एकटक तथा कान लगाकर वृन्दाके इशारेकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। वृन्दा सारी और तोतेको भीतर भेजकर पासके कदम्बके वृक्षपर बैठे हुए एक कुक्कुट पक्षीसे कुछ इशारा करती हैं। उनके ऐसा इशारा करते ही वह कुक्कुट जोरसे बोल उठता है। उसके बोलते ही समस्त पक्षी यह जान जाते हैं कि श्रीवृन्दादेवीका आदेश हो गया है और अब हमलोग मधुर स्वरमें गान करते हुए श्रीप्रिया-प्रियतमकी निद्रा भङ्ग करें। अतः धीरे-धीरे समस्त वन पक्षियोंके मधुर कलरवसे गुञ्जरित होने लग जाता है।

इधर वृन्दादेवीके हाथसे उड़कर सारी एवं तोता जैसे ही भीतर पहुँचकर रानीकी सारीके पिंजरेपर बैठते हैं, वैसे ही रानीकी सारी अत्यन्त मधुर स्वरमें बोल उठती है—आओ बहिन! विराजो! मेरे जीवनसर्वस्व प्रिया-प्रियतमकी अनुपम रूप-सुधाका पानकर नयनोंको कृतार्थ करो! अहा! किंचित् दृष्टि डालकर देखो तो सही, आज ये दोनों कितने सुन्दर दीख रहे हैं। मेरी प्यारी रानी, मेरे प्यारे श्याम-

सुन्दर—दोनोंकी रूप-सुधाका मैं सारी रात निर्निमेष नयनोंसे पान करती रहती हूँ, पर आँखें तृप्त नहीं होतीं। बहिन! ये आँखें तृप्त हो भी नहीं सकतीं। इस अशेष रूप-सागरकी एक बूँद भी तो मेरी दो आँखोंमें नहीं समा पाती, फिर तृप्त हो तो कैसे?

सारीकी यह आवाज श्रीप्रिया-प्रियतमके कानोंमें भी जा पहुँचती है। उनकी निद्रा टूट जाती है, परंतु वे एक-दूसरेको हृदयसे लगाये हुए उसी तरह लेटे रहते हैं। कोई भी आँखें नहीं खोलता। पर दोनोंके शरीर किंचित् हिल जानेके कारण सारी समझ जाती है कि दोनों ही जग गये हैं। इसी समय वृन्दाकी सारी कहने लगती है—बहिन! तुम्हारे सौभाग्यकी सीमा नहीं है। अहा! सचमुच इन दोनों मुख-चन्द्रोंपर आँखें पड़ते ही उनसे आँखें चिपट जाती हैं, फिर हटना चाहती नहीं। बहिन! मैं अभी बाहरसे उड़कर आयी हूँ। मैंने देखा कि पश्चिम आकाशमें चन्द्र तेजीसे बढ़ते जा रहे थे। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ बहिन! मानो चन्द्रदेव श्रीप्रिया-प्रियतमके मुख-चन्द्रकी शोभा देखकर अतिशय लज्जाके कारण अपना मुँह छिपानेके लिये शीघ्रतासे भागे जा रहे हैं।

सारीकी इस बातको सुनकर श्रीप्रिया-प्रियतम समझ जाते हैं कि चन्द्रमा अस्त होने जा रहे हैं और प्रभात होनेवाला है। पर दोनोंके ही हृदय प्यारसे इतने भरे हैं, दोनों एक-दूसरेसे ऐसे मिले हुए हैं मानो उन्होंने एक-दूसरेसे कभी अलग न होनेकी प्रतिज्ञा कर ली हो।

अब तोता बोल उठता है—सारी! तू बता, मेरे प्यारे श्यामसुन्दर रातमें सुखकी नींद सोये हैं न? इस वनके चकवा-चकवियोंके आनन्द-कलरवसे मेरे प्यारे श्यामसुन्दरकी नींद तो नहीं टूट गयी है? मैं देखकर आया हूँ कि चकवा-चकवी पुलिनपर बैठे शोर मचा रहे हैं। सारी रात ये आनन्दमें भरकर शोर मचाते रहे हैं। अब पूर्व-मुख बैठकर ये प्रिया-प्रियतमकी गुणावली गाते हुए अस्तोन्मुख चन्द्रमासे बातें कर रहे थे।

चकवी कहती थी—चन्द्रदेव! जाओ, सुखसे जाओ, फिर आना, मैं तुझे गाली नहीं दूँगी। इस वनमें मेरी प्यारी राधारानी एवं मेरे प्यारे श्यामसुन्दरका राज्य है। यह राज्य अनन्त कालतक रहेगा एवं अनन्त कालतक ही यहाँके सभी नियम पलटे रहेंगे। चन्द्र! ऐसा सुना है कि तुम्हारे दर्शन होते ही प्यारे चकवेसे चकवी अलग हो जाया करती है;

पर मैं तो कभी भी अलग नहीं हुई। देखो चन्द्रदेव ! मेरी आँखोंमें, पता नहीं, क्या हो गया है कि मुझे चकवेमें, तुममें, यमुनाकी प्रत्येक तरंगमें प्यारे श्यामसुन्दरकी ही झाँकी दीख पड़ती है। मुझे कभी-कभी भ्रम हो जाता है कि उज्ज्वल गगनमें तुम्हारा प्रकाश नहीं,मेरे प्यारे श्यामसुन्दरके ही मुख-चन्द्रका प्रकाश है; इसलिये मैं उड़कर उधर ही दौड़ने लग जाती हूँ। पर चकवा भी साथ-साथ उड़ने लग जाता है। वह मुझसे आगे बढ़ जाता है। मैं देखती हूँ, अहा ! श्यामसुन्दर इस चकवेके अन्तरालमें भी छिपे हैं; अतः विचारमें पड़कर फिर मैं आकाशसे नीचे उतर आती हूँ और सोचती हूँ—ना, मुझे भ्रम हो गया था; मेरी आँखोंमें ही प्यारे श्यामसुन्दरकी छवि बस गयी है। बहुत सोचती रही कि ऐसा क्यों हो गया है ? फिर कुछ-कुछ समझ पायी कि हम सभी वनवासियोंपर रानीकी छाया पड़ती है, रानीकी दृष्टि पड़ती है। रानीकी दृष्टिमें, रानीके अणु-अणुमें श्यामसुन्दर भरे हैं, इसलिये हम सभी वनवासियोंकी भी यही दशा हो गयी है। अतः चन्द्रदेव ! रानीपर बलिहार जाती हुई तुमसे प्रार्थना कर रही हूँ कि शीघ्र-से-शीघ्र पूर्व गगनमें लौट आना। तुम्हारे आनेपर मेरी प्यारी रानी मेरे प्यारे श्यामसुन्दरके साथ मिलेंगी। देर मत करना भला ! हम वनवासी रानीकी इस अनन्त करुणाके चिर ऋणी हैं। रानीकी छाया पड़कर ही हम इस अनन्त असीम सौभाग्यकी अधिकारिणी बनी हैं। मैं भला रानीकी क्या सेवा कर सकती हूँ ? हाँ, तुमसे हृदय खोलकर प्रार्थना कर सकती हूँ। मेरी ओरसे शङ्का मत करना कि चकवी हमें गाली देगी। शीघ्र-से-शीघ्र पूर्व गगनमें उदित होना। मैं हृदयसे तुम्हारा स्वागत करूँगी।

तोता बोलता ही जा रहा था—सारी ! चकवेने भी ठीक इसी प्रकारकी प्रार्थना चन्द्रसे की। मैं सुनकर यहाँ आया हूँ। इसलिये चित्तमें आया कि इस आनन्द-कलरवसे मेरे प्यारे श्यामसुन्दरकी नींदमें तो कहीं बाधा नहीं आयी ?

तोतेकी बात सुनकर श्रीप्रिया-प्रियतमके मुखारविन्दपर मुस्कान छा जाती है। तोता एवं दोनों सारी इस मुस्कानको देख लेती हैं।

रानीकी सारी बोलती है—अहा ! देख तोता ! मेरी रानीके मुखपर मन्द मुस्कानकी शोभा देख ! इस मुस्कानको देखनेके लिये समस्त वनवासी आँख फाड़े प्रतीक्षा कर रहे हैं।

सारीकी बात सुनकर श्यामसुन्दरकी आँखें एक बार खुल जाती हैं। सारी फिर कहती है—तोता! प्यारे श्यामसुन्दरके मुखारविन्दकी ओर देख! इन अलसभरे नयनोंकी ओर देख! बिखरी हुई अलकावलीकी ओर देख! ताम्बूल-रञ्जित अधरोंकी ओर देख·····!

अपनी प्यारी सारीकी बात सुनकर रानी भी मुस्कुराती हुई एक बार आँखें खोलकर देखती हैं। दोनों सारिकाएँ एवं तोता देख लेते हैं। अतः तीनों ही एक साथ बोल उठते हैं—जय हो वृन्दावनेश्वरीकी! जय हो वृन्दावनेश्वरकी!!

तोता कहता है—व्रजजीवन घनश्यामकी जय!

दोनों सारी कहती हैं—घनश्याम-अभिरामिनी राधारानीकी जय!

तोता कहता है—वृन्दावन-चन्द्र श्यामसुन्दरकी जय!

सारिकाएँ कहती हैं—वृन्दावन-चन्द्रिका श्यामारानीकी जय!

तोता कहता है—विश्वविमोहन नन्दनन्दनकी जय!

सारिकाएँ कहती हैं—नन्दनन्दन-विमोहिनी राधारानीकी जय!

इस जय-जयकारसे रानी एवं श्यामसुन्दरके मुखारविन्दपर जोरसे हँसी आने लगती है, पर वे उसे रोकते हैं। सखियाँ उधर खिड़कीके छिद्रोंसे दृष्टि डाल-डालकर श्रीप्रिया-प्रियतमकी शोभा निहार-निहारकर आनन्दमें डूब रही हैं।

फिर सारी कहती है—मेरी प्यारी रानी! मेरे प्यारे श्यामसुन्दर!! चन्द्रदेवकी किरणें मलिन हो गयी हैं। तारिका-पंक्ति भी आकाशमें विलीन होती जा रही है। पूर्व गगनमें अरुणिमाकी झलक दीख पड़ने लग गयी है। अतः मेरे जीवनसर्वस्व! उठो, हम वनवासी तुम्हें आँखें भरकर देखें।

श्रीश्यामसुन्दर एवं प्रिया, दोनों ही सारीकी सब बात सुन रहे हैं, पर उनमें एक-दूसरेके आनन्दको भङ्ग करनेका साहस नहीं हो रहा है। अतः दोनों उसी प्रकार एक-दूसरेसे लिपटे हुए मन्द-मन्द मुस्कुराते सोये हुए हैं।

वृन्दाकी सारी कहती है—बहिन सारिके ! देख, यह प्रभात होना हमें अच्छा नहीं लगता। यह मेरे प्राणाधार प्रिया-प्रियतमको प्रतिदिन अलग कर देता है। तू कोई उपाय जानती है कि जिससे प्रभात हो ही नहीं।

रानीकी सारी कहती है—बहिन ! उपाय क्यों नहीं है; पर रानीकी आज्ञाके बिना मैं किसीको यह उपाय बतला नहीं सकती। देख, यह प्रभात हमें भी बड़ा अखरता है। मेरी रानीके प्राणोंको तो व्याकुल कर देता है। फिर भी रानी इसका प्रतिदिन स्वागत ही करती हैं।

सारीकी बात सुनकर रानी कुछ लज्जित-सी होकर श्रीश्यामसुन्दरके बाहुपाशमें अपना सिर छिपा लेती हैं। इसी समय मन्द समीरका झोंका लगनेसे खिड़कीका पर्दा जोरसे हिल जाता है। उसी समय श्यामसुन्दरकी आँखें खुल जाती हैं। श्यामसुन्दर देखते हैं कि सचमुच प्रभात हो गया है। इसलिये अत्यन्त प्यारभरी दृष्टिसे श्रीप्रियाके मुखारविन्दको देखते हुए धीरेसे कहते हैं—प्रिये ! प्रभात हो गया है।

श्यामसुन्दरकी बात सुनकर श्रीप्रियाका मुख दुःखमिश्रित गम्भीरताकी मुद्रा धारण कर लेता है। वे धीरे-धीरे उठकर शय्यापर बैठ जाती हैं। उनके उठते ही श्यामसुन्दर भी उठकर शय्यापर बैठ जाते हैं। दोनोंके ही मुखारविन्दपर अलकावलियाँ बिखरी हुई हैं। दोनोंके नयनोंमें प्रेम एवं आलस्य भरा हुआ है। श्रीश्यामसुन्दर अपने दोनों हाथोंसे एक बारमें ही अपने मुखारविन्दसे अलकावलीको हटा लेते हैं तथा बायें हाथकी मुट्ठी बाँधकर, उसी मुट्ठीपर श्रीप्रियाकी ठोढ़ीको टिकाकर दाहिने हाथसे श्रीप्रियाकी अलकावलीको ठीक करने लगते हैं। श्रीप्रियाका मुख इस समय पश्चिमकी ओर है तथा श्यामसुन्दरका मुख पूर्वकी ओर। श्रीप्रिया अपने दोनों हाथोंसे अपने अङ्गोंके वस्त्रोंको ठीक कर रही हैं।

इसी समय दासियोंकी, मञ्जरियोंकी एवं सखियोंकी टोली हँसती हुई, मुस्कुराती हुई किवाड़ोंको धक्का दे देती हैं। किवाड़ खुल जाते हैं तथा ललिता सबसे आगे मुस्कुराती हुई भीतर प्रवेश करती हैं। उनके पीछे बगलमें सभी सखियाँ चल रही हैं। ललिता तेजीसे चलकर शय्याके पास पहुँच जाती हैं। सखियोंको आयी देखकर श्रीप्रिया लज्जित-सी होकर जल्दीसे शय्यासे उठती हैं, पर ललिता उनके हाथोंको पकड़कर, जहाँ वे

बैठी थीं, वहीं बैठा देती हैं। रूपमञ्जरी आ करके शय्यापर पड़ा हुआ रानीका मोतियोंका हार उठा लेती है तथा उसे अपने अञ्चलमें बाँधकर गाँठ लगाती है। गुणमञ्जरी शय्याके पास पड़ी हुई पीकदानीको उठाकर सिरसे लगाती तथा मुस्कुराती हुई उसे बगलमें लिये हुए खड़ी रहती है।

ललिता-विशाखा आदि सखियाँ रानीसे अत्यन्त प्रेमका विनोद प्रारम्भ करती हैं। रानी आलस्यभरी आँखोंसे ताकती हुई बीच-बीचमें ललिताके मुँहको अपने हाथसे बंद कर देती हैं। श्यामसुन्दर बीच-बीचमें मुस्कुराकर श्रीप्रियाके कंधोंको पकड़कर हिला देते हैं तथा ललिताके बहुत विनोद करनेपर रानीके कानमें कुछ धीरेसे कह देते हैं। रानी सुनकर मुस्कुराने लगती हैं। ललिता भी मुस्कुरा देती हैं; पर फिर लज्जित-सी होकर चुप रह जाती हैं।

लवङ्गमञ्जरी हाथमें जलकी झारी लिये हुए खड़ी है। विमलामञ्जरीके हाथमें कुल्ला करनेका चौड़े मुँहका गमला (प्रक्षालन-पात्र) है। श्रीप्रिया-प्रियतम उसी गमलेमें बारी-बारीसे हाथ एवं आँखें धोते हैं। फिर कुल्ला करते हैं। चित्रा शीतल जलसे भरा हुआ अत्यन्त सुन्दर गिलास रानीके हाथमें पकड़ा देती हैं। रानी गिलासको श्यामसुन्दरके होठोंसे लगा देती हैं। श्यामसुन्दर श्रीप्रियाके मुखपर दृष्टि जमाये हुए धीरे-धीरे आधा गिलास जल पी लेते हैं। फिर गिलासको पकड़कर श्यामसुन्दर श्रीप्रियाके होठोंसे लगा देते हैं। श्रीप्रिया शर्मायी-सी होकर पीना नहीं चाहतीं; पर श्यामसुन्दर बायें हाथसे प्रियाका दाहिना कंधा पकड़कर दबा देते हैं एवं गिलासको प्यारभरी जबर्दस्तीसे प्रियाके होठोंके पास रखे रहते हैं। आँखोंसे प्रेम झर रहा है। आखिर श्रीप्रिया भी कुछ घूँट शीतल जल धीरे-धीरे पी लेती हैं। फिर सखियाँ दोनोंका शृङ्गार करती हैं।

वृन्दादेवी निर्निमेष नयनोंसे श्रीप्रिया-प्रियतमकी झाँकीकी शोभा निहार रही हैं। वृन्दाकी दासियोंने खिड़कीके पर्दोंको उठा दिया है। शीतल-मन्द-सुगन्ध पवन खिड़कीकी राहसे प्रवाहित होता हुआ श्रीप्रिया-प्रियतमके अङ्गोंका स्पर्श करके कृतार्थ हो रहा है।

सूर्योदयमें तो अभी भी कुछ विलम्ब है। वनश्रेणीपर ऊषाकालीन सौन्दर्य छाया हुआ है। निकुञ्जके इधर-उधर हरिण-हरिणी चौंकड़ी भर

रहे हैं। कदम्बपर बैठी हुई कोयलें कुहू-कुहूकी मधुर तान अलाप रही हैं। मालती-जूही आदि नाना प्रकारके पुष्प-वृक्षोंकी पंक्तियाँ निकुञ्जके चारों ओर लगी हुई हैं। सबमें फूल खिले हुए हैं। उनपर भ्रमर गुञ्जार कर रहे हैं।

अब वृन्दाकी भाव-समाधि टूटती-सी है। वे कहती हैं -प्यारे श्यामसुन्दर! मेरी वनवासिनी बहिनोंने वनको तुम्हारे लिये ही आज अद्भुत साजसे सजाया है। अपनी दृष्टि डालकर उनकी प्यारभरी सेवा स्वीकार करो!

वृन्दाकी बात सुनकर सभी सखियोंमें आनन्द छा जाता है। सखियोंमें कोई श्यामसुन्दरकी शय्यापर, कोई नीचे बैठी हुई थीं तथा कुछ घेरे हुए खड़ी थीं। उन सबके बीचमें प्रिया-प्रियतमकी अनिर्वचनीय शोभा समस्त निकुञ्जको आनन्दसे प्लावित कर रही थी।

वृन्दाकी प्रार्थना सुनकर दुपट्टा सँभालते हुए श्यामसुन्दर एवं चम्पई रंगकी साड़ी सँभालती हुई श्रीप्रिया उठ पड़ती हैं। सखी-मण्डलीके सहित दोनों ही निकुञ्जके बरामदेमें आकर खड़े हो जाते हैं। पुष्पोंसे लदी हुई सघन लताएँ बरामदेको चारों ओरसे घेरकर शोभा पा रही हैं। रानी एवं श्यामसुन्दर उसी बरामदेसे होते हुए निकुञ्जके बहरी सहनमें आकर खड़े हो जाते हैं।

मन्द समीरके झोंकोंसे हिलती हुई लताएँ मानो प्रिया-प्रियतमसे प्रार्थना कर रही हों—मेरे जीवनाधार! रातभर तुम्हें हृदयमें छिपाये रही हूँ। क्या अब जा रहे हो? ना, ना, मत जाओ!

आगे सहनमें बड़ी-बड़ी क्यारियोंमें सुन्दर-सुन्दर गुलाबकी बेलें फैली हुई हैं, जिनपर बड़े-बड़े गुलाब खिले हुए हैं। श्रीप्रिया-प्रियतम उन्हीं गुलाबोंके बीचसे होकर बढ़ रहे हैं। अभी भी श्यामसुन्दरके शरीरपर आलस्यके चिह्न बने हुए हैं। वे रह-रहकर श्रीप्रियाकी ओर झुक जाते हैं तथा अत्यन्त प्यारसे श्रीप्रियाके कंधेको दबाकर उनके मुखारविन्दको ओर देखने लग जाते हैं। कभी-कभी चौंके हुए-से इधर-उधर देखने लग जाते हैं। श्रीप्रियाजी उस समय घबरायी-सी मुद्रामें उधर ही देखने लग जाती हैं।

श्रीप्रिया-प्रियतम अब एक-दूसरेके गलेमें बाँह डाल देते हैं तथा क्षण एक-दूसरेके मुखारविन्दको अतृप्त नयनोंसे देखते रहते हैं। फिर वियोगकी बात स्मरण करके दोनों ही एक बार अतिशय गम्भीर श्वास लेते हैं। दोनोंके मुखपर उदासी छा जाती है। कुछ क्षणोंके लिये सखियाँ भी अतिशय गम्भीर हो जाती हैं।

ललिता इसी समय दोनोंको प्रसन्न करनेके उद्देश्यसे रानीसे कहती हैं—री! याद है कि भूल गयी? आज प्रतिदिनकी अपेक्षा सूर्य-पूजाके लिये शीघ्र ही बन जाना है। तीन दिनकी सूर्य-पूजाका व्रत आज ही प्रारम्भ करना है, पर तू तो बिल्कुल चींटीकी चाल चल रही है।

ललिताकी इस बातको सुनकर रानी एवं श्यामसुन्दर दोनों ही शीघ्र पुनर्मिलनकी कल्पनासे आनन्दमें भर जाते हैं। दोनोंके मुखपर उल्लास छा जाता है। सखियाँ भी उल्लसित हो जाती हैं। श्यामसुन्दर अतिशय कृतज्ञताभरी दृष्टिसे ललिताकी ओर ताकने लगते हैं एवं कुछ शीघ्र गतिसे बढ़ने लग जाते हैं।

मन्द समीरका स्पर्श पाकर यद्यपि श्यामसुन्दर एवं रानीमें आलस्य बिल्कुल नहीं रह गया है, पर दोनों ही चतुराईसे आलस्यका बहाना लेकर बीच-बीचमें अँगड़ाई लेते समय इतनी ललकसे एक-दूसरेके साथ सट जाते हैं मानो एक-दूसरेमें सर्वथा मिल जाना चाहते हैं।

गुलाबकी क्यारियोंसे होते हुए सखी-मण्डलीके सहित श्रीप्रिया-प्रियतम कदली-वनमें प्रवेश करते हैं। इसके बाद तरह-तरहके अत्यन्त सुगन्धित पुष्पोंकी क्यारियोंमेंसे होते हुए विश्राम-कुञ्जके फाटकपर पहुँच जाते हैं। फाटकसे कुछ ही कदम हटकर यमुनाका निर्मल प्रवाह प्रवाहित हो रहा है। श्रीप्रिया-प्रियतम फाटकसे निकलकर सड़कके किनारे एक सुन्दर वटवृक्षके नीचे खड़े होकर यमुनाकी शोभा निहारने लग जाते हैं।

॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

स्नान लीला

निकुञ्जसे लौटकर श्रीप्रिया अपने महलके कमरेमें सुन्दर पलंगपर लेटी हुई हैं। श्रीप्रियाका सिर दक्षिणकी तरफ है एवं पैर उत्तरकी ओर। आँखें बंद हैं। हलकी नीली चादरसे श्रीप्रियाको गर्दनके नीचेके अङ्ग ढके हुए हैं। देखनेसे प्रतीत हो रहा है कि श्रीप्रियाजी सो रही हैं; पर वस्तुतः प्रिया जगी हुई हैं। एक मञ्जरी श्रीप्रियाके तलुएके पास पलंगपर बैठी है। मञ्जरीके पैर नीचेकी ओर लटक रहे हैं, मञ्जरीकी दृष्टि श्रीप्रियाजीकी ओर लगी हुई है।

मञ्जरियाँ एवं सखियाँ विभिन्न कार्योंमें व्यस्त हैं। कोई उबटन तैयार कर रही है, कोई चन्दन घिस रही है, कोई झारियोंमें जल भर रही है, कोई छोटी-छोटी कटोरियोंमें विभिन्न तेल-फुलेल डाल रही हैं, कोई दन्तमञ्जन निकालकर छोटी-सी कटोरीमें रख रही है, कोई श्रीप्रियाके पहननेके वस्त्रोंको निकाल-निकालकर सजा रही है, कोई स्नान करने जा रही है और कोई स्नान करके लौट रही है तथा इस प्रक्रियामें रानीके महलसे लेकर यमुनाके घाटतक आने-जानेका ताँता लग रहा है। कोई सुन्दर चमचम करती हुई अलगनीपर कपड़े फैला रही है, कोई अपने केशोंमें कंघी कर रही है, कोई शीघ्रतासे केशोंको गूँथ रही है, कोई आँखोंमें अञ्जन लगा रही है। कुछ मञ्जरियाँ बिलोये हुए दूधमेंसे अभी-अभी निकले मक्खनको सुन्दर-सुन्दर बड़े-बड़े बर्तनोंमें सजा रही हैं, कोई दूधके बर्तनोंको चूल्हेपर गर्म करनेके लिये चढ़ा रही है, कोई भिन्न-भिन्न चीजोंको यथास्थान सजा-सजाकर रख रही है। दो-तीन मञ्जरियाँ प्रियाके पहननेके लिये पुष्पमाला शीघ्रतासे तैयार करनेमें लगी हैं, कोई प्रियाके तुलसी-पूजनकी सामग्री इकट्ठी कर रही है। इस तरह सम्पूर्ण महलमें चहल-पहल-सी है। अवश्य ही सारे कार्य अतिशय शान्तिके साथ हो रहे हैं। सभी इस चेष्टामें हैं कि शब्द न हो, नहीं तो यदि प्रियाकी

आँखें कदाचित् लगी भी हों तो खुल जायँगी। बीच-बीचमें कङ्कण ठन् शब्द एवं सखियों-मञ्जरियोंके कङ्कण-करधनोंके झन्-झन् शब्द सुन पड़ते हैं। नूपुरका रुनझुन-रुनझुन शब्द भी रह-रहकर सुन पड़ता है। सखियोंको-मञ्जरियोंको स्वयं अपना ही रुनझुन-रुनझुन शब्द भ्रममें डालने लगता है कि कहीं प्यारे श्यामसुन्दर तो नहीं आ रहे हैं।

श्रीप्रिया जिस कमरेमें लेट रही हैं, उसी कमरेमें उत्तरके हिस्सेमें खड़ी होकर ललिता शीघ्रतासे अपना शृङ्गार कर रही हैं। एक मञ्जरी चाहती है कि मैं सहायता करूँ, पर मुस्कुराती हुई वे धीरे-से हाथके इशारेसे कहती हैं— तू ठहर जा! मैं शीघ्र ही अपना शृङ्गार स्वयं कर ले रही हूँ।

शीघ्रतासे ललिता अपने हाथोंसे ही अपने केशोंको गूँथ लेती हैं तथा सिरपर अञ्चल डाल लेती हैं। मञ्जरी थालमें शृङ्गारका बहुत-सा सामान लिये खड़ी है। ललिता उसमेंसे किसी भी वस्तुको नहीं लेतीं। हाँ, केवल घिसी हुई कस्तूरीकी छोटी कटोरीमें अपने दाहिने हाथकी अनामिका अँगुली डाल देती हैं तथा अपने ललाटपर सुन्दर गोल बिंदी लगा लेती हैं। बिंदी लगाकर मुस्कुरा पड़ती हैं। फिर उसी अँगुलीसे उस मञ्जरीके ललाटपर भी वैसी ही बिंदी बना देती हैं। ललिता उसी मञ्जरीके कानमें कुछ धीरेसे कहती हैं। मञ्जरी परातको वहीं दीवालके सहारे एक किनारे रखकर शीघ्रतासे कमरेके बाहर चली जाती है तथा ललिता, जिस पलंगपर रानी लेटी हुई हैं, उसके पास जा पहुँचती हैं।

ललिता धीरेसे रानीके कंधेके पास बैठ जाती हैं तथा उनके मुखारविन्दकी ओर देखने लग जाती हैं। कुछ क्षण देखती रहकर अतिशय प्यारसे रानीके ललाटको सहलाने लगती हैं। रानी आँखें खोल देती हैं। ललिता अतिशय प्यारसे रानीके मुँहके पास झुक जाती हैं तथा धीरेसे कहती हैं—नींद आयी थी कि नहीं, ठीक-ठीक बता!

रानीके मुखपर गम्भीर मुस्कान छा जाती है। वे कुछ नहीं बोलतीं, केवल एक क्षणके लिये पुनः आँखें मूँद लेती हैं। फिर आँखें खोलकर ललिताके बायें कंधेको अपने दाहिने हाथसे पकड़ लेती हैं। ललिता फिर पूछती हैं —क्यों! नहीं बतायेगी?

रानी कुछ गम्भीरताकी मुद्रामें कहती हैं -नींद नहीं आती तो क्या करूँ ?

रानीकी बात सुनकर ललिताकी आँखें प्रेमसे भर जाती हैं, पर अपनी इस दशाको छिपाती हुई वे कहती हैं—सूर्योदय हो गया है। कुन्द या धनिष्ठा शीघ्र आ पहुँचेगी। तू तैयार हो जा।

यह सुनते ही रानी शीघ्रतासे कपड़ा समेटती हुई तथा बायें हाथसे ललिताके कंधेका सहारा लेकर उठकर पलंगपर बैठ जाती हैं। उठकर बैठते ही श्यामसुन्दरकी वह मोहिनी सूरत आँखोंके सामने नाचने लगती है मानो सचमुच श्यामसुन्दर प्रत्यक्ष खड़े हों। कलसे रानीकी दशा विचित्र-सी हो गयी है। वे श्यामसुन्दरके प्रति रह-रहकर जोरसे सम्बोधन करने लग जाती हैं। ललिता कई प्रकारकी युक्तियाँ रच-रचकर रानीकी यह दशा बड़ी कठिनाईसे रानीके गुरुजनोंसे छिपाती रही हैं। अवश्य ही बीच-बीचमें रानीको यह होश भी आ जाता है कि मैं अनाप-शनाप बक जाती हूँ तथा उस समय ललिताकी कठिनता-दिक्कतें समझकर ललितासे चिपटकर रोने लग जाती हैं; पर फिर भूल जाती हैं। ललिता प्रातःकालसे ही सावधान है कि श्यामसुन्दरके पास हम-सब जबतक नहीं पहुँच जायँ, तबतक जिस-किस प्रकारसे भी यह बावली राधा शान्त बनी रहे; इसलिये ही रानीके पलंगपर बैठते ही ललिता शीघ्रतासे उठ खड़ी होती हैं तथा धीरेसे रानीके हाथको पकड़कर कहती हैं—तू हाथ-मुँह धोती रह और मैं तुझे एक बड़ा सुन्दर समाचार सुनाऊँगी।

रानीका मन उत्कण्ठासे भर जाता है तथा चित्तवृत्ति बँट जाती है। यद्यपि श्यामसुन्दरकी ध्यान-छवि उन्हें दीख रही है, पर ललिताकी बात सुननेकी लालसाने उन्हें तल्लीन होने नहीं दिया। रानी चटपट उठ खड़ी होती हैं। शीघ्रतासे चलकर हाथ-मुँह धोनेके लिये वे सुन्दर सजी हुई एक चौकीके पास जा पहुँचती हैं। उत्तरकी ओर मुँह करके उस पाटेपर बैठ जाती हैं। एक मञ्जरी हाथोंपर जल देने लग जाती है। श्रीप्रिया हाथोंको धोकर कुल्ला करती हैं। फिर लाल रंगका अतिशय सुगन्धित मञ्जन अपने दाँतोंपर लगाती हैं। श्रीप्रियाके निज मुखसे ही इतनी दिव्य एवं इतनी मनोहर सुगन्धि निकल रही है कि

मञ्जनकी सुगन्धि उसके सामने फीकी पड़ गयी। पुनः कुल्ला करके श्रीप्रिया सुवर्ण-तारकी चमकती हुई चिपटी-पतली जीभीसे जीभ साफ करने चलती हैं; पर उसे हाथमें लेकर चुपचाप बैठ जाती हैं मानो बिल्कुल यह बात भूल गयी हों कि मैं मुँह साफ करने बैठी थी।

ललिता कुछ मुस्कुराती हुई रानीके पास आकर खड़ी हो जाती हैं तथा झुककर रानीके हाथको हिलाकर कहती हैं—तो अब सुनाने जा रही हूँ। तू ध्यानसे सुनना भला!

रानी कुछ अकचकायी-सी होकर कहती हैं—हाँ, हाँ, मैं तो भूल ही गयी थी, सुना। — यह कहकर रानी शीघ्रतासे जीभ साफ करके कुल्ला कर लेती हैं तथा अपने अञ्चलसे हाथ पोंछती हुई कहती हैं—अब बता, क्या समाचार बताना चाहती है?

ललिता रानीका हाथ पकड़कर उठा लेती हैं और पकड़े हुए उत्तर-पश्चिमकी ओर कुछ दूर ले जाती हैं, जहाँ एक अतिशय सुन्दर लम्बी चौकी है। चौकीपर गद्दा है तथा गद्देपर उजले रंगकी झालरदार सुन्दर रेशमी चादर बिछी है। रानीको ललिता उसीपर बैठा देती हैं। रानी उत्तरकी ओर मुँह करके बैठ जाती हैं तथा अपने दोनों पैर फैला देती हैं। ललिता राधारानीके शरीरसे कञ्चुकी उतार देती हैं तथा चारों ओरसे सखियाँ एवं मञ्जरियाँ यथास्थान बैठकर रानीके शरीरमें उबटन एवं तेल लगाने लगती हैं। विशाखा रानीके केशोंका बन्धन खोलकर उसकी प्रत्येक सुन्दर लटमें तेल लगा रही हैं। ललिता रानीकी ओर मुँह किये हुए बैठी हैं तथा बहुत धीमे स्वरमें कहना प्रारम्भ करती हैं। आवाज इतनी धीमी है कि पासमें बैठी मञ्जरियोंको भी ध्यान देनेसे सुनायी पड़ रहा है। ललिता बोलीं—रात चित्राने एक स्वप्न देखा है। बड़ा ही विचित्र स्वप्न है। उसे सुनकर तू खूब हँसेगी।

रानीकी उत्कण्ठा बढ़ जाती है। वे बड़ी सरलतासे भोली बालिकाकी तरह ललिताके मुखकी ओर झुक पड़ती हैं एवं कहती हैं—शीघ्र सुना, कैसा स्वप्न था?

ललिता कहती हैं—चित्राने मुझसे कहा कि बहिन! ठीक प्रातः कालके

समय मैं स्वप्न देखने लगी। देखा कि मैं किसी सर्वथा अपरिचित देशमें आ गयी हूँ। अवश्य ही वह देश यमुनाके किनारेपर हो बसा है। मैं सोचने लगी कि यहाँ मुझे कौन लाया? प्यारे श्यामसुन्दर कहाँ हैं? सखियाँ कहाँ हैं?— सोचते-सोचते मैं अधीर हो उठी। पास ही यमुना प्रवाहित हो रही थी। मैं वहाँसे चलकर उसके किनारे जा पहुँची। आश्चर्य तो यह था कि वहाँ सुन्दर-सुन्दर महल थे, रमणीय उद्यान थे; पर मुझे कोई भी मनुष्य नहीं दीखता था। मैं इसी उधेड़-बुनमें पड़ी हुई विकल होकर सोचने लगी कि किससे पूछूँ? मुझे यहाँ कौन लाया है? ऐसा कौन है, जो मुझे प्यारे श्यामसुन्दरका पता बता सके?

उसी समय मनमें आया कि पृथ्वी तो व्यापक तत्त्व है। यदि यह बोलती होती तो बता सकती थी कि मेरे प्रियतम कहाँ हैं? हाँ, जल भी बता सकता है; क्योंकि सुना है, यह भी सर्वत्र है; पर यह भी नहीं बोलता। हाय! मेरे प्यारे श्यामसुन्दर! तुम्हारा पता कहाँ पाऊँ?..... अच्छा ठीक! ठीक!! तेज-तत्त्व अतिशय निर्मल है। यह अवश्य ही यहीं रहकर मेरे प्यारे श्यामसुन्दरको देख रहा होगा; पर हाय रे दुर्भाग्य! यह भी बोलना नहीं जानता!..... तो क्या मैं यों ही तड़प-तड़पकर मर जाऊँगी? प्यारे श्यामसुन्दरके पास मेरा संदेश भी नहीं पहुँचेगा?

इसी समय पत्तेके खड़-खड़ करनेकी आवाज मेरे कानमें आयी। मैं सोचने लगी कि निश्चय ही मेरे प्यारे श्यामसुन्दर मुझे ढूँढ़ते हुए आ पहुँचे हैं। उत्कण्ठावश उधर देखने लगी, पर कोई नहीं दीखा। फिर विचारने लगी कि कोई तो नहीं आया; पर जिसने यह खड़खड़ाहट मेरे कानोंमें पहुँचा दी, वह भी तो नहीं दीखा! अयँ! यह खड़खड़ाहट मेरे कानोंमें जैसे आ पहुँची, वैसे ही मेरा संदेश भी तो प्यारे श्यामसुन्दरके कानोंमें पहुँच सकता है। अवश्य-अवश्य पहुँच सकता है।.....किसने यह आवाज मेरे पास पहुँचायी? पवनने! बस, बस, पवन बोल नहीं सकता; पर इसने करुणावश इशारा कर दिया कि मैं मूक सेवा कर सकता हूँ; तुम्हारा संदेश प्रियतमके पास पहुँचा सकता हूँ।..... तो यही सही। पर ना, यह तो उचित नहीं। क्या पता, प्यारे श्यामसुन्दरने मुझे अलग रखना चाहा हो, इसीलिये मुझे कहीं दूर भेज दिया हो। फिर मेरा संदेश पाकर तो वे निश्चय ही व्याकुल हो जायेंगे; मुझे बुला ही लेंगे या स्वयं पवनके

साथ उड़कर मेरे पास आ जायेंगे। ना, ना, यह मैं नहीं सह सकती कि अपने सुखके लिये उनके सुखमें बाधा हो। पर.....आह! यह निर्णय कैसे हो कि वास्तवमें मैं क्यों अलग हुई? यदि मैं प्यारे श्यामसुन्दरके हृदयकी इच्छा जान जाती, यदि मैं जान पाती कि वे मेरे लिये व्याकुल हैं तो पवनके द्वारा संदेश भेज देती।

अहा! एक उपाय तो है। यह आकाश शब्दात्मक है। यह बोल सकता है, सर्वत्र है भी। ठीक! ठीक!!.....अरे आकाश! बता, मेरे प्यारे श्यामसुन्दर कहाँ हैं? मेरी सखियाँ कहाँ हैं?— इस प्रकार बार-बार मैं स्वप्नमें ही पुकारने लगी —अरे आकाश! मेरे प्यारे श्यामसुन्दर कहाँ हैं? जल्दी बता!

कुछ ही क्षण बाद देखती हूँ कि यमुनाके घाटपर पाँच देवता प्रकट हुए। वे पाँचों मेरे पास आये। दूरसे ही पाँचोंने सिर टेककर मुझे प्रणाम किया। मैं सकुचा गयी। मेरी-जैसी साधारण गोप-बालिकाको ये देवता प्रणाम क्यों कर रहे हैं? मैं कुछ बोली नहीं। इसी समय उनमेंसे एकने कहा—देवि! हम पाँचों तत्त्व (पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश) के अधिष्ठातृ देवता आपके सम्मुख उपस्थित हैं। आप आज्ञा करें, आपकी कौन-सी सेवा करके हम अपना जीवन कृतार्थ करें।

उनकी बात सुनकर मैं और भी शर्मा गयी; पर प्यारे श्यामसुन्दरका संदेश पानेकी उत्कण्ठासे मैंने हाथ जोड़कर कहा—देवताओं! मैं प्यारे श्यामसुन्दरके विषयमें जानना चाहती हूँ कि वे इस समय कहाँ हैं? मैं उनकी दासी हूँ।

मेरी बात सुनकर मुझे ऐसा अनुमान हुआ कि पाँचों ही उदास हो गये। कुछ क्षणतक वे सभी चुप रहे। मैं कुछ घबराकर बोली --क्यों; आप जानते हों तो बता देनेकी कृपा करें।

देवताओंने कहा—देवि! आपकी यह सेवा हमारी सामर्थ्यके बाहर है। श्यामसुन्दरके विषयमें हमलोग कुछ भी नहीं जानते। आपने हम पाँचोंका संकल्प किया, इसी कारण हम पाँचोंमें यह योग्यता आ गयी कि हम सब आपके प्रत्यक्ष दर्शनके अधिकारी हुए; नहीं तो आप-जैसी

बड़भागिनी गोपसुन्दरियोंकी छायाके दर्शन भी हमलोगोंके लिये असम्भव है।

उन देवताओंकी बात सुनकर मैं विचारमें पड़ गयी। कुछ देर बाद बोली—देव! आप लोग जायें। मुझे और किसी प्रकारकी सेवा नहीं चाहिये।

देवताओंने कुछ सोचकर कहा—देवि! एक उपाय हो सकता है।

मैं—क्या उपाय है?

देवता—यदि आप अपने चरणोंकी धूलि हमें प्रदान करें तो हम पाँचों उस पवित्रतम धूलिको अपनी आँखोंमें आँज लें, फिर हमलोग देख सकते हैं कि प्यारे श्यामसुन्दर कहाँ हैं?

देवताओंकी बात सुनकर मैं तो विस्मयमें पड़ गयी और बोली—आपलोग तो बहुत आश्चर्यकी बात कह रहे हैं। भला, मैं तो प्यारे श्यामसुन्दरको नहीं देख रही हूँ और मेरी धूलि आँखमें आँजनेपर आप प्यारे श्यामसुन्दरको देखने लगेंगे? यह तो अजब-सी बात है।

देवताओंने पुनः घुटने टेक दिये और बोले—हाँ, देवि! सर्वथा यही बात है।

अब मैं कुछ विचारमें पड़ गयी। अन्यमनस्का-सी होकर जहाँ खड़ी थी, वहाँसे कुछ दूर हटकर खड़ी हो गयी। मैंने देखा कि पाँचों देवता, जहाँ मैं पहले खड़ी थी, वहाँ लोटने लगे तथा वहाँकी धूलि उठा-उठाकर अपनी आँखोंमें मलने लगे। मैं जोरसे बोल उठी—कृष्ण! कृष्ण!! क्या कर रहे हैं? आपलोग पागल तो नहीं हो गये हैं, जो इस प्रकार धूलिमें लोट रहे हैं?

कुछ देरके बाद देवता खड़े होकर बोलने लगे—जय हो देवि! तुम्हारी जय हो!! प्यारे श्यामसुन्दर यहाँ आने ही वाले हैं। अब हम-लोगोंको आज्ञा हो।—यह कहते-कहते वे पाँचों अन्तर्धान हो गये।

फिर मैं देखती हूँ कि मन्द-मन्द मुस्कुराते हुए प्यारे श्यामसुन्दर

चले आ रहे हैं। मैं शीघ्रतासे उनकी ओर बढ़ गयी। उनके हाथोंको पकड़कर बोली— मैं यहाँ कैसे आ गयी ? तुम कहाँ चले गये थे ?

श्यामसुन्दरने मुस्कुराते हुए कहा·····, यह कहते-कहते ललिता हठात् चुप हो गयीं।

ललिता चित्राके स्वप्नकी बात सुना रही थीं तथा रानी अतिशय शान्त मुद्रामें सुनती जा रही थीं। तभी एक मञ्जरीने ललिताको कुछ इशारा किया, इससे ललिता चुप हो गयीं। इसी समय एक मञ्जरी पूर्व एवं दक्षिणके कोनेकी तरफसे आती है तथा ललिताको दूरसे ही पुकारकर कहती है— ललिता रानी ! तुम्हें माँ बुला रही हैं।

मञ्जरीकी बात सुनकर ललिता चित्राके कानमें धीरेसे कहती हैं— शेष तू सुना दे, मैं जा रही हूँ। —यह कहती हुई वे पूर्व एवं दक्षिणके कोनेकी तरफ चली जाती हैं तथा उसी मञ्जरीके पीछे दक्षिणकी तरफ दालानकी ओर बढ़ती हुई आँखोंसे ओझल हो जाती हैं।

अब चित्रा स्वप्नका शेष अंश स्वयं सुनाती हैं।

चित्रा बोलीं— हाँ, तब श्यामसुन्दर आये और मैंने उनसे पूछा कि मैं यहाँ कैसे आ गयी ? तुम कहाँ चले गये थे ?

प्यारे श्यामसुन्दरने मुस्कुराकर कहा—मैं तो देवीकी पूजा करने गया था।

मैं— किस देवीकी पूजा ?

श्यामसुन्दर— भगवती त्रिपुरसुन्दरीकी।

मैं— क्यों ?

श्यामसुन्दर— यों ही।

मैं— नहीं, ठीक बताओ। पूजा करने क्यों गये थे ?

श्यामसुन्दर— भगवतीसे शक्ति माँगने गया था।

मैं -- किसलिये ?

श्यामसुन्दर- तू जानकर क्या करेगी ?

मैं श्यामसुन्दरसे इस बार चिढ़ी-सी होकर बोली-- ठीक है, जाओ ! मत बताओ !! -- यह कहती हुई मैं वहीं मुँह फेरकर बैठ गयी।

प्यारे श्यामसुन्दर हँसने लगे। फिर कुछ क्षणके बाद बोले-- अच्छा, देख ! बता देता हूँ; पर तू किसीसे बताना मत।-- यह कहकर प्यारे श्यामसुन्दर मेरे सामने चले आये एवं बैठ गये।

मैंने टेढ़ी चितवनसे प्यारेकी ओर देखा; पर देखते ही मेरी रुखाई दूर हो गयी और मैं हँस पड़ी। प्यारे श्यामसुन्दर भी पुनः हँसने लगे। मैं प्यारेके कंधेपर हाथ रखकर बोली-- बताओ !

श्यामसुन्दरने कहा-- चित्रे ! जिस समय मैं प्रियाको देखता हूँ, उस समय नेत्र स्थिर हो जाते हैं। कल तुम सब मेरे आनेके पहले प्रियाको माला पहना रही थीं। मैं छिपकर देख रहा था और सोचने लगा कि ओह ! मेरी प्रियाके अङ्ग कितने सुकोमल हैं। हाय, पुष्पोंके भारको प्रिया किस प्रकार सहती होंगी ! पुष्पोंकी पँखुड़ी प्रियाके कोमल हृदयको बींधती तो नहीं होगी !-- यह सोचते-सोचते मेरी आँखें बंद हो गयीं। अब तो विचारोंका ताँता लग गया-- आह ! अञ्जन मेरी प्रियाकी आँखोंको अवश्य कष्ट देता होगा। हाय ! हाय !! आभूषण तो बड़े ही कठोर हैं; ये मेरी प्रियाके अङ्गमें गड़ जाते होंगे। यह साड़ी भी बहुत खुरदरी है, प्रियाके अङ्गमें निश्चय ही चुभती होगी। ओह ! प्रिया तो मेरे कारण अपने आपको भूल गयी हैं, पर मुझसे यह सहा नहीं जाता। नहीं, नहीं, मैं मना कर दूँगा कि मेरी हृदयेश्वरि ! तू माला मत पहन, अञ्जन लगाना छोड़ दे, आभूषण मत धारण कर। फिर मेरी प्रिया कभी भी इन्हें स्पर्शतक नहीं करेंगी ! मैं ठीक जानता हूँ, उसके हृदयको जानता हूँ। वह पुष्पमाला मेरे लिये पहनती है, आभूषणसे अपने आपको मेरे लिये ही सजाती है, अञ्जन आँखोंमें मेरे लिये ही आँजती है। उसका सारा साज-शृङ्गार इसीलिये है कि मैं चाहता हूँ कि मेरी प्रिया अपने अङ्गोंको सजाये। आह ! वह तो मेरे प्रेममें विवेक खो बैठी है और सोचती है कि अञ्जन, आभूषण, मालाएँ उसे सुन्दर बना

देंगी और प्यारे श्यामसुन्दर उसे देखकर और भी प्रसन्न होंगे; पर सच्ची बात कुछ और ही है। अञ्जन प्रियाकी आँखोंको सुन्दर नहीं बनाता, बल्कि प्रियाकी आँखोंमें पड़कर यह अञ्जन सुन्दर बन जाता है; आभूषणोंसे प्रियाके शरीरकी सुन्दरता नहीं बढ़ती, बल्कि प्रियाके अङ्गोंसे जुड़कर ये आभूषण अनन्त गुना सुन्दर बन जाते हैं; पुष्पमालासे प्रियाके वक्षःस्थलकी शोभा नहीं बढ़ती, बल्कि प्रियाके सुन्दर वक्षःस्थलपर झूलकर पुष्पमालाकी शोभा अनन्त-असीम हो जाती है। मैं प्रियाको इन्हें इसीलिये धारण करने देता हूँ कि इनका सृजन सफल हो जाये प्रियाके अङ्गका स्पर्श पाकर ये कृतार्थ हो जायें, निहाल हो जायें; पर अब सहा नहीं जाता! बस, बस, बहुत हो गया। आज मना कर दूँगा कि मेरी प्राणेश्वरि! तू शृङ्गार करना छोड़ दे। इतनी ही बातसे सब ठीक हो जायेगा। पर साड़ीका क्या करूँ? हाय! मेरी प्रिया तो मेरे इशारे मात्रसे साड़ीतक फेंक देगी। उसे लोक, वेद, कुल, धर्म, देह, लज्जा आदि किसीकी भी रत्ती मात्र परवाह ही नहीं है। वह जानती है केवल एक बात; उसे केवल इतनी स्मृति है कि प्यारे श्यामसुन्दरके सुखके लिये सब-कुछ हँसते हुए स्वाहा कर देना। इसलिये उसके मनमें तो इस विचारकी छाया भी नहीं पहुँच सकेगी कि मैं विवस्त्र रहकर कैसे जीवन बिताऊँगी। वह तो तत्क्षण मेरी इच्छाके साँचेमें ढल जायेगी; पर लोग तो उसे बावली-विक्षिप्त समझने लगेंगे। उसे घरमें बंद कर देंगे तथा वह मेरे विरहमें तड़प-तड़पकर प्राण दे देगी। ओह! कठिन उलझन है, इसे कैसे सुलझाऊँ?— चित्रे! मैं कल दिन-रात यही सोचता रहा। फिर भगवतीकी कृपाका स्मरण करने लगा। प्रातःकाल कुञ्जसे लौटते ही भगवतीके मन्दिरमें गया। देवीके चरणोंमें प्रणाम करके प्रार्थना करने लगा। देवीने प्रसन्न होकर कहा— प्यारे श्यामसुन्दर! बोलो, क्या चाहते हो?

मैंने कहा— देवि! यह बताओ, समस्त विश्वमें सबसे सुकोमल वस्तु क्या है?

देवीने हँसकर कहा— सच्ची बात बता दूँ?

मैंने कहा— हाँ, देवि! सर्वथा सच्ची बात बताओ।

देवी— प्यारे श्यामसुन्दर! सबसे सुकोमल तुम्हारी प्रिया एवं तुम

हो। तुम दोनोंसे अधिक सुकोमल वस्तु न पहले कभी थी, न है और न होगी।

चित्रे! मैं देवीकी बात सुनकर कुछ आश्चर्यमें पड़ गया। सोचने लगा कि मेरी प्रियाकी सुकोमलतमता तो प्रत्यक्ष है; पर मैं सुकोमलतमकी गणनामें कैसे आ गया? मुझे तो यह भान नहीं होता; पर देवी तो झूठ नहीं कहेंगी। इनके वचन त्रिकाल सत्य हैं। भले ही मुझे अनुभव न हो कि मैं सुकोमलतम हूँ; पर जब देवी कहती हैं तो फिर एक काम करूँ। अब देवीसे एक भिक्षा माँग लूँ।

मुझे सोचते देखकर देवीने पुनः हँसकर कहा—हाँ, प्यारे श्यामसुन्दर! जो चाहिये, वह मुझे निःसंकोच बता दो; मैं अवश्य दूँगी।

देवीकी बात सुनकर मैं प्रसन्न हो गया और बोला—देवि! तुम अन्तर्हृदयकी बात जानती हो, इसलिये तुमसे निःसंकोच एक भिक्षा माँग रहा हूँ। तुम कृपा करके मुझमें ऐसी सामर्थ्य दे दो कि मैं जहाँ चाहूँ, वहीं समा जाऊँ। मुझमें ऐसी शक्ति आ जाय कि मेरी प्रिया जिस अञ्जनसे अपनी आँखें आँजती हैं, उस अञ्जनमें समा जाऊँ। प्रिया जिस कुंकुमसे तिलक लगाती हैं, उस कुंकुममें समा जाऊँ। जिस मृगमदसे प्रिया अपने वक्षःस्थलका शृङ्गार करती हैं, उस मृगमदमें समा जाऊँ। सखियाँ जो अङ्गराग मेरी प्रियाके शरीरपर लगाती हैं, उस अङ्गरागमें समा जाऊँ। मेरी प्रियाके कपोलपर जिस चन्दन-पङ्कसे चित्र बनता है, उस चन्दन-पङ्कमें समा जाऊँ। प्रियाके चरणोंमें जिस महावर (आलता) का रंग लगता है, उस रंगमें समा जाऊँ। प्रिया जिन आभूषणोंको धारण करती हैं, उन आभूषणोंमें समा जाऊँ। प्रिया जो साड़ी पहनती हैं, जो कञ्चुकी बाँधती हैं, उसके अणु-अणुमें समा जाऊँ। प्रिया जिस ताम्बूलके बीड़ेको अपने मुखमें रखें, उस ताम्बूल-पत्रमें, उसके चूनेमें, उसकी सुपारीके कण-कणमें मैं समा जा सकूँ। जिन फूलोंसे प्रियाकी माला बनती है, जिन फूलोंको प्रिया अपनी वेणीमें खोंसती हैं, उन फूलोंमें समा जाऊँ। प्रिया जिस दर्पणमें अपना मुख देखती हैं, उस दर्पणमें समा जाऊँ। जिस कंघीसे केश सँवारती हैं, उस कंघीमें; जिस रूमालसे मुख पोंछती हैं, उस रूमालमें; जिस पीकदानमें पीक फेंकती हैं, उस पीकदानीके अणु-अणुमें मैं समा जाऊँ।

जिस पलंगपर, जिस सेजपर, जिस चादरपर, जिस तकियेपर प्रिया विश्राम करती हैं, उसके अणु-अणुमें समा जाऊँ। जिस जलसे, जिस जल पात्रसे मेरी प्रिया स्नान करती हैं, उस जलमें, उस पात्रमें मैं समा जाऊँ। मेरी प्रिया भोजन करनेके लिये जिस आसनपर बैठती हैं, उसके लिये जिस परातमें भोजन परोसा जाता है और परातमें जो-जो भोज्य-पदार्थ हैं, उस आसन, उस परात एवं उस भोज्य-पदार्थके अणु-अणुमें मैं प्रवेश कर जा सकूँ। जिस गिलाससे प्रिया जल पीती हैं और जिस जलका पान करती हैं, उस गिलास एवं उस जलके अणु-अणुमें समा जाऊँ। जिस पंखेसे सखियाँ प्रियाको हवा करती हैं, उस पंखे तथा हवाके अणु-अणुमें मैं प्रवेश कर जाऊँ। जिस आकाशमें प्रियाके अङ्ग हिलते हैं, उस आकाशके अणु-अणुमें मैं समा जाऊँ। जिस पृथ्वी-तलसे प्रियाके चरणोंका स्पर्श होता है, उस पृथ्वीके कण-कणमें समा जाऊँ। घरकी ओर अथवा वनकी ओर चलती हुई प्रिया जिस पथपर पैर रखती हैं, उस पथकी धूलिके कण-कणमें मैं समा जाऊँ। देवि! अधिक कहाँतक गिनाऊँ, मैं जिस-जिस वस्तुमें चाहूँ, उसीके अणु-अणुमें समा जाऊँ, ऐसी शक्ति मुझे देनेकी कृपा करो। देवि! मेरा हृदय कलसे अत्यन्त दुःखी था। अपनी प्रियाके सुकोमल अङ्गोंको कष्ट पहुँचते देखकर मेरा मन अतिशय उद्विग्न हो गया। रातभर सोचता रहा कि किसी प्रकारसे सबसे सुकोमलतम वस्तुको प्राप्त करूँ तथा देवीकी कृपासे उस वस्तुमें यह शक्ति उत्पन्न करवा लूँ कि मेरी प्रियाकी समस्त वस्तुओंमें वह प्रवेश कर जा सके। यह इसलिये कि जिस समय प्रियाके अङ्गोंको कठोर वस्तु स्पर्श करे, उस समय वह उस आघातको अपने हृदयपर सहकर मेरी प्रियाकी रक्षा करे। तुमने सबसे सुकोमल वस्तु मुझे बतलाया, अतः मेरे अंदर ही यह शक्ति उत्पन्न कर दो।

चित्राने इतना कहा ही था कि ललिता पुनः वहाँ आकर बैठ जाती हैं। कुछ क्षण चित्रा चुप रहती हैं, पर रानी इतनी उत्कण्ठित हो गयी हैं कि तीन बार कह चुकीं—हाँ, हाँ, फिर क्या बात हुई, बता!

चित्रा बोलती हैं—प्यारे श्यामसुन्दरकी यह बात सुनकर मैं चटपट बोल उठी कि तुम्हारी बात सुनकर देवीने क्या कहा?

श्यामसुन्दर अतिशय प्रसन्नताकी मुद्रामें बोले—मेरी प्यारी चित्रे!

देवीने अतिशय कृपा करके कह दिया— 'एवमस्तु'।

श्यामसुन्दरकी यह बात सुनकर मेरा हृदय बड़े जोरसे उछलने लगा। मेरा कण्ठ भर आया और बड़ी कठिनतासे मैं पूछ बैठी— सच बताओ, विनोद तो नहीं कर रहे हो ? देवीने 'एवमस्तु' कह दिया ?

श्यामसुन्दरने बड़ी दृढ़ता एवं सरलताके साथ कहा— हाँ चित्रे ! मैं सच कह रहा हूँ, देवीने मुझे ऐसी शक्ति दे दी !

श्यामसुन्दरकी इस बातसे अब मैं आनन्दमें इतनी अधीर हो उठी कि मेरा सारा शरीर थर-थर काँपने लगा। मन-ही-मन सोच रही थी कि मौका पाकर प्यारे श्यामसुन्दरसे मैं एक बात कहूँगी— प्यारे ! मैं भी तुमसे एक वस्तु माँग रही हूँ। मैं जानती हूँ कि तुम मेरी सखी राधाके साथ ही हम सबोंको भी प्राणोंसे अधिक प्यार करते हो। तुम्हारा हृदय अतिशय कोमल है ही। कदाचित् हम सबके प्रति भी तुम्हारा कोमल हृदय इसी भावसे भावित हो जाये और इसी प्रकार तुम हमारे आभूषण, अङ्गराग आदिमें समा जाओ तो फिर एक बातकी दया करना। हमें इशारा कर देना, जिससे हम-सब उन आभूषण आदिको सावधानीसे धीरे-धीरे धारण करें एवं निकालें। तुम्हारी बात सुनकर मनमें एक भय हो गया है। सखी राधाकी तो सारी सँभाल हम-सब कर लेंगी, पर यदि तुम कहीं हमारी पुष्पमालामें, हमारे अञ्जनमें, हमारे दर्पणमें आ बैठे और अनजानमें हम-सबने फेंक-फाँक की तो तुम्हें कितनी चोट लगेगी ? और फिर 'तुम्हें चोट पहुँची है'— यह बात कभी हमारे जाननेमें आयी तो हम सबका हृदय ही फट जायेगा। इसलिये जब कभी भी ऐसा करना तो बता देना।

मैं मन-ही-मन सोच रही थी और प्यारे श्यामसुन्दर मेरी ओर एकटक देख रहे थे। उन्हें इस प्रकार देखते हुए देखकर मैं हँसने लगी और बोली— क्या देख रहे हो ? अब तुम्हें देखकर स्वस्थ हुई हूँ, नहीं तो घबराकर प्राण निकले-से जा रहे थे।— यह कहकर मैंने पक्ष देवताओंकी बात प्यारे श्यामसुन्दरको सुनायी। फिर प्यारे श्यामसुन्दर हँसने लगे। मैं बोली— सचमुच यह बताओ, यह कौन-सा देश है ? मैं यहाँ कैसे आ गयी ? मेरी प्यारी सखी राधा कहाँ है ? हटात् तुम यहाँ कैसे आ गये ? तुम्हें यहाँ मेरे होनेकी खबर कैसे लग गयी ?

मैं यह कह ही रही थी कि श्यामसुन्दरने हँसकर मुझे हृदयसे लगा लिया; हृदयसे लगाते ही मेरी आँखें खुल गयीं। मैं देखती हूँ कि प्रभात होने जा रहा है। मैं तो आश्चर्यमें डूब गयी और सोचने लगी कि विचित्र स्वप्न देख रही थी। मैंने मन-ही-मन भगवती त्रिपुरसुन्दरीको नमस्कार किया और उनसे प्रार्थना करने लगी—देवि! मैं जानती नहीं, इस स्वप्नका क्या फल होगा? मेरा कुछ भी हो, पर मेरे प्यारे श्यामसुन्दरका अनन्त मङ्गल हो।

इसी विचारमें मैं पड़ी हुई थी कि बहिन ललिता उठकर मेरे पास आ गयीं। उनसे मैंने स्वप्न सुना दिया। वे हँसने लगीं और बोलीं—बड़ा ही शुभ स्वप्न है; स्नान करते समय सखीको सुनाऊँगी।

चित्राके स्वप्नको रानी चुपचाप गम्भीर बैठी सुन रही थीं। स्वप्न सुनकर एक बार वे भी जोरसे हँस पड़ती हैं, पर तुरंत ही अकचकाकर इधर-उधर देखने लगती हैं। बात यह हुई कि रानीका प्रेम बढ़कर ज्ञान-शक्तिको ढक देता है। रानी यह तथ्य तत्क्षण भूल जाती हैं कि चित्राने यह सब स्वप्नकी बात कही है। वे समझती हैं कि प्यारे श्यामसुन्दरने सचमुच देवीसे यह वर माँगा है। वे मुझे प्राणोंसे बढ़कर प्यार करते हैं, मुझे सर्वथा अपने हृदयमें छिपाकर रखनेकी युक्ति उन्होंने की है,— यह भावना आते ही रानीको अणु-अणुमें श्यामसुन्दर दीखने लगते हैं; इसलिये ही रानी अकचकाकर इधर-उधर देखने लगती हैं। सामने रसोई-घरका दालान है। रानीको श्यामसुन्दर वहाँ खड़े दीखते हैं।

इधर इसी बीचमें उबटनका कार्य समाप्त हो चुका है। ललिता रानीका हाथ पकड़कर उन्हें स्नान-वेदीकी ओर चलनेके लिये कहती हैं। रानी अञ्चल सँभालती हुई उठ पड़ती हैं, पर सीधे रसोई-घरकी ओर दौड़ पड़ती हैं। रानीने इतनी जोरसे झटका दिया कि ललिताके हाथसे रानीका हाथ छूट गया और रानी उधर दौड़ पड़ीं। परंतु ललिता बड़ी शीघ्रतासे पीछे दौड़कर पुनः रानीको पकड़ लेती हैं तथा कुछ रूठी हुई मुद्रा बनाकर कड़ी आवाजमें कहती हैं— जा, अब मैं तुम्हें कोई बात नहीं सुनाऊँगी; तू इस प्रकार स्वप्नकी बात सत्य मानकर बावली हो जाती है। इधर तेरी

यह दशा है कि तूने स्नानतक नहीं किया है। और वह देख, धनिष्ठा आ गयी; मैया (यशोदा) तुम्हारी बाट देख रही हैं।

ललिताकी आवाजसे रानीका भाव-प्रवाह बहुत-कुछ शिथिल हो जाता है। वे स्वप्नसे जागी हुईकी तरह ललिताका कण्ठ पकड़कर धीरे-धीरे रोने लग जाती हैं तथा कहती हैं— मैं तुम्हें बहुत तंग करती हूँ; पर मेरी प्यारी ललिते ! मैं क्या करूँ, मैं होशमें नहीं रहती।

ललिताने देखा कि दवा काम कर गयी है। अब मेरे खीझनेके भयसे यह थोड़ी देर शान्त रह जायेगी। अतः प्यारकी मुद्रामें कहती हैं— देख बहिन ! अब बहुत देर हो गयी है। अब जल्दीसे स्नान कर ले।

रानी चटपट स्नान-वेदीकी ओर चल पड़ती हैं तथा एक अबोध बालिकाकी तरह चौकीपर बैठकर कहती हैं— जल्दीसे जल डाल दे।

रानीकी यह मधुर सरल कण्ठ-ध्वनि सभी सखियोंके हृदयमें गूँज जाती है। सभीकी आँखें प्रेमसे भर जाती हैं। इन्दुलेखा जलसे भरे कलसेको उठाकर रानीके सिरपर डालती हैं। विशाखा हाथोंसे रानीके केशोंको बिखेरती जा रही हैं। जलकी मोटी धारा रानीके सिरपरसे होकर पीठ-कंधेपर गिर रही है। रानीके सुन्दरतम काले-काले केश जलके वेगसे पीठपर नाच रहे हैं। अब दोनों तरफसे रानीके कंधोंपर रङ्गदेवी एवं सुदेवी दो झारियोंसे जल डालने लगती हैं। विशाखा पीठ, वक्षःस्थल एवं हाथ-पैर आदिपर अपने हाथ फेरती हुई रानीके शरीरको मल रही हैं। जलकी सुवाससे एवं रानीके अङ्गकी दिव्य सुगन्धिसे समस्त आँगन अत्यधिक सुवासित हो उठता है। विशाखा जैसे-जैसे रानीके शरीरको मलती हैं, वैसे-वैसे प्रतीत होता है मानो कोई अतिशय सुगन्धित वनद्रव्यको घिस रहा हो और घिसनेके फलस्वरूप उससे अधिकाधिक सुगन्धि निकल रही हो।

इस प्रकार खूब अच्छी तरह स्नान कराकर रानीके अङ्गको विशाखा चम्पई रंगकी साड़ीसे लपेटकर गीले वस्त्रको अलग कर देती हैं। उसी चम्पई वस्त्रसे सिरके केशोंको भी पोंछती हैं तथा अन्यान्य अङ्गोंको भी। रानी उस वेदीसे उठकर दो-तीन हाथ पश्चिमकी ओर अलग हटकर

खड़ी हो जाती हैं। फिर तुङ्गविद्या बड़ी ही सुन्दर नीली साड़ी रानीको अब पहनाने लगती हैं तथा चम्पई रंगवाली साड़ीको विशाखा उतारती जाती हैं। उसके उतर जानेपर विशाखा ठीकसे नीली साड़ीकी गाँठ लगा देती हैं एवं तुङ्गविद्या ऊपर अञ्चल ठीक कर देती हैं। रानी पश्चिमकी तरफ चलकर शृङ्गार-भवनमें जा पहुँचती हैं। वहाँ बड़ी सुन्दर सजी हुई नीले मखमलकी गद्दी लगी हुई एक चौकी है, जो डेढ़ हाथ ऊँची है, उस चौकीपर रानी पूर्वकी ओर मुख करके बैठ जाती हैं।

॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

असीमानुराग लीला

पुष्पचयन करनेके लिये श्रीप्रिया वनमें पधार रही हैं। आगे-आगे रूपमञ्जरी है। उनके हाथमें एक डलिया है, जिसमें भीतरके हिस्सेमें केलेके पीले-पीले पत्ते बिछाये हुए हैं। श्रीप्रियाकी बाँयी ओर ललिता है, दाहिनी ओर विशाखा। चित्रा आदि सखियाँ कोई आगे, कोई पीछे चल रही हैं। यमुनाके किनारे-किनारे जो पगडंडी दक्षिणकी तरफ गयी है, उसीपर वे सब चल रही हैं। पगडंडीके पूर्वके हिस्सेमें मेंहदीकी झाड़ियोंकी कतार लग रही है तथा पश्चिमकी ओर तटके किनारे-किनारे, पर तटसे कुछ हटकर वन्य-पुष्पोंकी झाड़ियाँ हैं।

श्रीप्रिया रह-रहकर पीछेकी ओर ताक लेती हैं। यमुनाके निर्मल प्रवाहमें किनारे-किनारे लाल-नीले-उजले कमल खिल रहे हैं। हंस एवं अन्यान्य जल-जातीय पक्षी ऊपरसे उड़कर आते हैं तथा पानीपर छपसे कूद जाते हैं। पानी उनके पंख-संचारित वायुसे तथा वेग पूर्वक कूदनेसे हिलोरें खाने लग जाता है, जिससे डंठलसहित कमल तेजीसे हिलने लग जाते हैं। श्रीप्रिया कभी हिलते हुए कमलोंकी ओर भी दृष्टि डाल लेती हैं।

पगडंडीपर चलती हुई श्रीप्रिया वहाँ आ पहुँचती हैं, जहाँ पगडंडी राजमार्गको पार करती है। वहाँ पहुँचकर श्रीप्रिया कुछ ठिठक जाती हैं तथा पश्चिमकी तरफ ताकने लग जाती हैं। इसी समय पूर्वकी तरफसे एक ग्वालिन दौड़ती हुई आती है। ग्वालिनके सिरके बाल बिखरे हुए हैं, मुख लाल-लाल हो रहा है, आँखें बिलकुल चढ़ी हुई हैं मानो मद पीकर मतवाली-सी हो रही हो। ग्वालिन आकर रानीसे चिपट जाती है और उसकी आँखोंसे आँसुओंकी धारा बहने लगती है। रानीकी भी आँखें भर आती हैं। रानी अतिशय प्यार भरे स्वरमें पूछती हैं— क्यों, बोल!

रानी उसको जोरसे हृदयसे चिपका लेती हैं। ग्वालिन सिर उठाती है और देखती है कि यहाँ कौन-कौन हैं। फिर कुछ देरतक पगली-सी

खिलखिलाकर हँसती रहती है। फिर कुछ क्षण चुप रहकर हठात् अतिशय मधुर स्वरमें गाती है—काहे मारे नयना बान साँवरो।

एक कड़ी गाकर ही, बस, उसीको बार-बार बावलीकी तरह दुहराती हुई ताली पीटती हुई पश्चिम एवं दक्षिणकी ओरके सघन वनमें जा घुसती है। रानी जोरसे बोल उठती हैं— रूप! रूप!! उसे सँभाल।

रानीकी आज्ञासे रूपमञ्जरी उसके पीछे दौड़ जाती है तथा वृक्षोंकी ओटमें हो जानेसे दोनोंका ही दीखना बंद हो जाता है।

रानी अब किनारा छोड़कर पगडंडीकी राहसे सघन वनमें प्रवेश करती हैं; पर वे मन-ही-मन गुनगुनाती जा रही हैं—काहे मारे नयना बान साँवरो। रानीका हृदय ज्यों-ज्यों उस कड़ीकी आवृत्ति करता है, त्यों-त्यों ठीक तदनुरूप झाँकी उन्हें अपने पूर्व-पश्चिम-उत्तर-दक्षिण, चारों ओर दीखने लगती है। रानी देखती हैं कि प्यारे श्यामसुन्दर कदम्बकी छायामें खड़े हुए वंशीमें फूँक भर रहे हैं। मुखपर मन्द-मन्द मुस्कान है तथा अतिशय प्यार भरी तिरछी चितवनसे मेरी ओर देख रहे हैं। रानीका हृदय अब बेकाबू-सा होने लगता है। मनकी गुनगुनाहट होठोंसे बाहर निकल पड़ती है। रानी बड़ी सुरीली तानसे वनको एक क्षणके लिये निनादित कर देती हैं। सुरीली तानसे सारा वन गुञ्जित हो रहा है—काहे मारे नयना बान साँवरो।

रानीकी आवाज सुनकर ललिता रानीके मुखारविन्दके सामने चली जाती हैं। रानी बड़ी उतावलीसे कहती हैं—ललिते! इधर देख! जामुनके पत्ते-पत्तेमें वे खड़े हैं।

ललिता जामुनकी ओर दृष्टि डालती हैं तथा रानीसे कहती हैं—देख! तू अभी घरके पास है। थोड़ी सावधानीसे चल।

ललिताकी बात सुनकर रानीके मुखपर कुछ घबराहट-सी आ जाती है। वे सँभल जाती हैं तथा जल्दीसे पैर बढ़ाकर चलती हुई मञ्जरियोंसे लदे हुए एक आम्रवृक्षकी जड़के पास पहुँचकर उससे तीन-चार हाथ पूर्वकी ओर दक्षिणकी तरफ मुँह करके बैठ जाती हैं।

आमकी मञ्जरियोंपर मधुमक्खियोंकी भीड़ भन-भन करती हुई उड़

रही है। भौंरे भी गुनगुनाते हुए मँड़रा रहे हैं। आम्रकी डालीपर कोयलकी तरहकी, पर कोयलसे बड़े आकारकी एक चिड़िया बड़े ही मधुर स्वरमें धीमे-धीमे बोल रही है। चिड़ियाके पंख लाल एवं हलके काले रंगके हैं एवं आँखें बिलकुल लाल रंगकी हैं। वह अपनी लाल पुतलियोंको कोयोंमें नचाती हुई रानीकी ओर देखने लगती है। रानी भी दृष्टि उठाकर उसकी ओर देखती हैं। पहली दृष्टिमें तो वह चिड़िया छाया-सी दीखती है; पर फिर तुरंत दूसरे क्षण रानीको उसकी आँखोंकी पुतलियोंमें, उसके पंखके प्रत्येक भागमें तिरछी चितवन किये हुए श्यामसुन्दरकी झाँकी दीखती है। उनका हृदय फिर तेजीसे आवृत्ति करता है—काहे मारे नयना बान साँवरो।

इस बार उस चिड़ियाकी कण्ठ-ध्वनि भी रानीको यही गाती हुई प्रतीत होती है—काहे मारे नयना बान साँवरो।

रानीका हृदय इतना अधिक भावोंसे भर जाता है कि वे फिर एक बार बड़े ही मधुर स्वरमें जोरसे गाने लगती हैं—काहे मारे नयना बान साँवरो।

यह गाते-गाते रानी उठ पड़ती हैं तथा आम्र-वृक्षकी एक डाली झुकाकर उसमेंसे दो-एक मञ्जरियाँ तोड़ती हैं। तोड़ते-तोड़ते पुनः आम्र-मञ्जरीके स्थानपर उन्हें श्यामसुन्दरकी झाँकी होने लगती है। आम्र-मञ्जरी हाथसे गिर पड़ती है। ललिता उसे उठाकर, लवङ्गमञ्जरीके हाथमें जो डलिया थी, उसमें रख देती हैं।

रानी बैठ जाती हैं तथा दोनों कानोंपर अपना हाथ रखकर ऐसी मुद्रा बनाती हैं मानो बड़े ध्यानसे कुछ सुन रही हों। फिर बड़ी तेजीसे आगे दक्षिणकी ओरके तमाल वृक्षपर दृष्टि जमाकर कहती हैं—ललिते! वह सुन, वे मेरा नाम लेकर मुझे बुला रहे हैं। आह! कितनी मधुर कण्ठ-ध्वनि है!

ललिता कुछ उत्सुकताभरी दृष्टिसे रानीकी ओर देखती हैं। कुछ क्षण देखते रहकर फिर धीरेसे कहती हैं—पर मैं तो कुछ भी सुन नहीं रही हूँ। देख, पहलेकी तरह आज भी भ्रम हो रहा है। श्यामसुन्दर तो

चम्पा-काननमें मिलनेका इशारा कर चुके हैं। वे वहीं होंगे।

रानी बड़ी तेजीसे दक्षिणकी ओर दौड़ पड़ती हैं तथा उसी तमालके पास जाकर खड़ी हो जाती हैं एवं अतिशय प्यारसे बोलने लगती हैं मानो सामने श्यामसुन्दर खड़े हों और वे उनसे बातें कर रही हों। श्रीप्रिया कहती हैं—प्यारे श्यामसुन्दर! ललिता विश्वास नहीं करती। तुम एक बार जोरसे हँस दो।

रानी ऐसा अनुभव करती हैं कि प्यारे श्यामसुन्दर मेरे कहनेसे जोरसे हँस रहे हैं। उनकी प्रसन्नताकी कोई सीमा नहीं रहती। वे बड़ी प्रसन्न मुद्रामें ललितासे कहती हैं—देख ललिते! अब बोल, तू भ्रम बतला रही थी न?

ललिता कुछ आश्चर्यभरी मुद्रामें कहती हैं—पता नहीं बहिन! तुझे क्या हो गया है? सच, श्यामसुन्दर यहाँ नहीं हैं। तू स्वयं हँसती है और मान बैठती है कि प्यारे श्यामसुन्दर हँस रहे हैं।

ललिताकी बात सुनकर रानी कुछ दुःखी-सी हो जाती हैं तथा तमालसे जाकर चिपट जाती हैं और करुणामिश्रित स्वरमें कहती हैं—प्रियतम! क्या करूँ? यह ललिता विश्वास नहीं करती। इसे कैसे समझाऊँ?

एक-दो क्षणके बाद श्रीप्रिया ऐसी मुद्रा बनाती हैं मानो श्यामसुन्दर उनके कानमें कुछ कह रहे हैं और वे अतिशय ध्यानसे सुन रही हों। कुछ देरतक उस मुद्रामें रहकर श्रीप्रिया मन्द-मन्द मुस्कुराने लगती हैं, फिर बड़े उल्लाससे कहती हैं—ललिते! प्यारे श्यामसुन्दरने उपाय बतला दिया है। देख, मैं अभी-अभी तुझे विश्वास कराये देती हूँ.....।

ललिता बीचमें ही बोल उठती है—क्या उपाय बतलाया है?

ललिताकी बात सुनकर रानी कुछ झेंप-सी जाती हैं। कुछ देर ठहरकर कहती हैं—रूप कहाँ गयो? आह! वह अभीतक वापस नहीं आयो?

रानी यह कह ही रही थी कि रूपमञ्जरी उसी ग्वालिनका हाथ पकड़े

हुए वहाँ आ जाती है। रूपमञ्जरीको देखकर रानी प्रसन्न होकर कहती हैं— री ! इधर आ।

रानीकी आज्ञा सुनते ही रूपमञ्जरी पासमें आकर खड़ी हो जाती है। रानी उसे हृदयसे लगाकर कहती हैं— रूप ! उधर देख। देखकर बता, क्या वहाँ प्रियतम श्यामसुन्दर खड़े नहीं हैं ?

रानी रूपमञ्जरीको अँगुलीसे उसी तमालकी ओर देखनेका संकेत कर रही हैं। वह उधर ही ताकने लगती है। दृष्टि उधर फिरते ही रूपमञ्जरीको ठीक वहाँ श्यामसुन्दर दिखायी पड़ते हैं। वह प्रेममें डूबने लगती है। उसकी दशा देखकर ललिता कुछ आश्चर्यमें पूछती हैं— रूप ! तू इस तरह एकाएक विह्वल क्यों हो गयी ?

रूपमञ्जरी कहती है— आह ! ललिता रानी ! उधर देखो ! प्यारे श्यामसुन्दर कितनी प्रेमभरी दृष्टिसे मेरी ओर ताक रहे हैं।

रूपमञ्जरीकी बात सुनकर ललिताके आश्चर्यका ठिकाना नहीं रहता। उसका गला भर आता है और वे अतिशय उतावलेपनकी मुद्रामें कहती हैं— मेरी प्यारी रूप ! मुझे नहीं दीख रहे हैं।

रानी ललिताकी बात सुनकर खिलखिलाकर हँस देती हैं तथा कहती हैं— ललिते ! अब बता, मैं तो तुम्हारी दृष्टिमें बावली हूँ, पर रूप तो बावली नहीं। उसे क्यों श्यामसुन्दर दीख रहे हैं ?

ललिता अतिशय प्यारसे रूपमञ्जरीके पास जाकर उससे शीघ्रतासे कहती हैं— रूप ! क्या सचमुच श्यामसुन्दर यहाँ खड़े हैं ?

रूपमञ्जरी—हाँ ललिता रानी ! वह देखो, वे मुस्कुराकर तुम्हारी ओर देख रहे हैं।

रूपमञ्जरीकी बात सुनकर ललिता अतिशय आश्चर्यभरी मुद्रामें बहुत शीघ्रतासे उससे कहती हैं— रूप ! मुझे फिर क्यों नहीं दीखते ?

रूपमञ्जरी प्रेममें अधिकाधिक अधीर होती जा रही है। ललिता उसे जाकर पकड़ लेती हैं। रूपमञ्जरी ललिताके सहारेसे धीरे-धीरे उनके चरणोंमें बैठ जाती है। ललिता कुछ क्षणतक कुछ सोचती रहती हैं। फिर

कहती हैं-- अच्छा रूप ! तू श्यामसुन्दरसे पूछ तो सही, तुम्हें क्यों दीख रहे हैं।

रूपमञ्जरी उस तमालके वृक्षकी ओर कुछ देरतक देखकर कहती हैं—ललिता रानी ! प्यारे श्यामसुन्दर कहते हैं.....।

रूपमञ्जरीका कण्ठ भर जाता है। कहते-कहते वाणी रुक जाती है। ललिता बड़े प्यारसे पूछती हैं-- हाँ, हाँ, क्या कहते हैं ? बोल !

रूपमञ्जरी कुछ सँभलकर कहती है— प्यारे श्यामसुन्दरने कहा कि अभी-अभी तुम्हें मेरी प्यारी राधाने अपने हृदयसे लगाया था, इसीलिये तुम मुझे देख रही हो।

रानी रूपमञ्जरीकी बात सुनकर खिलखिलाकर हँस पड़ती हैं; पर ललिताकी मुद्रा कुछ ऐसी अस्त-व्यस्त-सी है कि उन्हें देखकर ऐसा प्रतीत होता है मानो वे किसी बातपर गम्भीरतासे विचार कर रही हों। अब रूपमञ्जरी रानीके पास जाकर खड़ी हो जाती है। रानी कुछ गम्भीरताके स्वरमें ललितासे पूछती हैं-- क्यों ! अब विश्वास हुआ ? मुझे बावली बता रही थी न ?

ललिता अतिशय व्याकुलता-मिश्रित स्वरमें कहती हैं— रूप ! अच्छा, एकबार श्यामसुन्दरसे पूछ, फिर वे मुझे क्यों ठग रहे हैं ? मैं तो उन्हें नहीं देख पा रही हूँ। ऐसा क्यों ?

रूपमञ्जरी कुछ देर पुनः तमालकी ओर देखकर कहती है—ललिता रानी ! आह ! वह देखो, तुम्हारे बिलकुल दाहिने कंधेके पास खड़े होकर वे कह रहे हैं कि रूप ! यदि ललिता आदिको ठगूँ नहीं, तब तो फिर यहाँ बावलियोंका समुदाय इकट्ठा हो जाये। मेरी प्यारी राधा बावली है ही, ललिता भी बावली हो जाये, फिर मेरी प्राणेश्वरी राधाको कौन सँभाले ?

ललितासे कहते-कहते रूपमञ्जरी प्रेममें मूर्छित-सी होने लगती है। ललिताका भी चेहरा प्रेमावेशकी अतिशयताके कारण बिलकुल लाल-सा हो जाता है। उनका मन भावोंके समुद्रमें डूबने-उतराने लगता है। वे कुछ बोलना चाहती थीं कि इसी समय रानी बिलकुल बावली-सी होकर

बड़ी तेजीसे दक्षिणकी ओर दौड़ने लग जाती हैं। ओढ़नी शरीरसे नीचे गिर जाती है तथा अञ्चल भी सिरसे अब गिरा तब गिरा होने लग जाता है। रानी तेज स्वरमें बोलती जा रही हैं—देखो! अभी पकड़ लेती हूँ; मैं भी दौड़ना जानती हूँ।

रानीकी यह दशा देखकर ललिताका भाव बदल जाता है। वे रानीको सँभालनेके लिये तेजीसे उधर ही दौड़ने लगती हैं तथा जाकर उन्हें पकड़ लेती हैं। रानी बड़ी तेजीसे दौड़ रही थीं, इसलिये उनका सारा शरीर पसीनेसे लथपथ हो रहा था। ललिताके पकड़ते ही वे बोलीं—छोड़, छोड़! नहीं तो वे बहुत आगे निकल जायँगे।

रानी बड़ी फुर्तीसे छुड़ानेकी चेष्टा करती हैं, पर छुड़ा नहीं पातीं। इसलिये लाचार होकर करुणाभरी दृष्टिसे ललिताकी ओर देखने लग जाती हैं। रानी ऐसा अनुभव कर रही हैं कि श्यामसुन्दर पगडंडीपर दक्षिणकी ओर दौड़ते हुए जा रहे हैं; उन्हींको पकड़नेके लिये मैं भी दौड़ रही हूँ। अब जब ललिताने पकड़ लिया तथा उनसे छुड़ा नहीं पायीं तो जोरसे बोल उठीं कि प्यारे! ठहर जाओ! रानीके ऐसा कहते ही उन्हें अनुभव होने लगता है कि श्यामसुन्दर करीब डेढ़-सौ गज दक्षिणकी तरफ हटकर उन्हींकी ओर मुँह किये हुए खड़े हैं। रानीको कुछ ढाढस हो जाता है कि वे खड़े हो गये। वे फिर ललितासे कहती हैं—वह देख, आह! मेरे प्राणेश्वर मेरी बात मानकर मुझे थकी देखकर खड़े हो गये हैं।

ललिता उधर देखती हैं, पर पीले पुष्पोंसे लदी हुई झाड़ियोंके सिवा और कुछ भी नहीं देख पातीं। हठात् रानी देखती हैं कि वहाँ श्यामसुन्दर नहीं हैं। यह अनुभव होते ही प्राणोंकी व्याकुलता-मिश्रित एक चीख मारकर रानी माथेको दोनों हाथोंसे पकड़कर बैठ जाती हैं। ललिता कुछ विचारमें पड़ जाती हैं तथा उपाय सोचने लग जाती हैं कि किसी प्रकार इस बावली सखीको यह जँचा दूँ कि श्यामसुन्दर तुम्हारी प्रतीक्षामें मेरे कुञ्जमें बैठे हैं। इसीके लिये वे विशाखाको कुछ इशारा करती हैं। रानी सिर नीचा किये हुए बिलकुल निश्चेष्ट-सी बैठी हैं। विशाखा धीरेसे रानीके कंधेको हिलाकर कहती हैं—बावली! तू तो यहाँ पत्थरकी मूर्ति बनी बैठी है और प्यारे श्यामसुन्दर चम्पा-काननमें तेरी बाट देख रहे हैं।

विशाखाकी बात सुनकर रानी कुछ घबरायी-सी होकर इधर-उधर देखने लग जाती हैं तथा कुछ क्षणके बाद पूछती हैं— तो क्या सचमुच मुझे भ्रम हो गया था ? मेरे प्यारे श्यामसुन्दर यहाँ नहीं हैं ?

विशाखा बड़ी तेजीसे कहती हैं— हाँ बहिन ! तुझे भ्रम हो गया है।

विशाखाकी बात सुनकर रानी कुछ गम्भीर-सी होकर खड़ी हो जाती हैं तथा चुपचाप शान्त भावसे धीरे-धीरे पगडंडीपर दक्षिण दिशाकी ओर चलने लगती हैं।

ललिता चाहती हैं कि यह बावली सखी बातोंमें किसी प्रकार उलझी हुई रास्ता चलती रहे, तब तो जल्दी पहुँचना सम्भव है; नहीं तो पता नहीं, कुञ्जतक पहुँचते-पहुँचते फिर किस भावावेशमें जा पहुँचे। और नहीं तो कम-से-कम गिरिवर-स्रोततक तो शान्तिसे चली चले, फिर कोई भय नहीं। इसी विचारसे ललिता रानीसे कहती हैं— हाँ, तुमने स्वप्न सुनानेकी बात कही थी, अब सुना।

रानी ललिताकी बात सुनकर मानो सोकर जगी हो, इस मुद्रामें पूछती हैं— कैसा स्वप्न ?

ललिता— क्यों, भूल गयी ? तुमने कहा था कि ठीक ऊषाकालके समय मैं आज अतिशय सुन्दर स्वप्न देख रही थी।

रानीके मुखपर इस बातको सुनकर प्रसन्नता छा जाती है। वे कहती हैं— हाँ ! कहा था, सचमुच ललिते ! बड़ा सुन्दर स्वप्न था।

ललिता बड़ी उत्कण्ठाकी मुद्रामें कहती हैं— फिर जल्दी सुना।

रानी कुछ बोलना चाहती हैं, पर रुक जाती हैं। फिर मुस्कुराकर कहती हैं— देख ! प्यारेके हृदयसे लगी हुई मैं आनन्दमें बेसुध हो रही थी। नींद आज रातमें एक क्षणके लिये भी आयी ही नहीं; पर प्रभात होनेके अन्तिम क्षण पहले आँखें लग गयीं। मैं देखती हूँ कि संध्याका समय है। मैं गौरी-पूजन करनेके लिये केशोतीर्थवाले घाटपर स्नान करने आयी हूँ। आकाशमें बादल छाये हुए हैं। घाटपर पैर रखा ही था कि प्यारे श्याम-सुन्दर उत्तर-पूर्वके कोनेकी एक झाड़ीके पास खड़े दीख पड़े। प्यारे

एकटक मुझे एवं मैं प्यारेको एकटक देख रही थी। उसी समय बड़े जोरकी आँधी चली। चारों ओर अन्धकार छा गया। बिजली जोरसे रह-रहकर चमक जाती थी। बिजलीके प्रकाशमें मैंने देखा, वे मुझे अपने पास आनेके लिये हाथोंसे इशारा कर रहे हैं। मैं बावली-सी होकर दौड़ पड़ी। पानीकी बूँदें टप-टप करती हुई मेरी साड़ीपर गिर रही थीं। ललिता! मैं ऐसा अनुभव करने लगी कि साड़ी बिल्कुल भीग गयी है। मैं उसी भीगी साड़ीको लपेटती हुई प्यारे श्यामसुन्दरकी ओर तेजीसे बढ़ने लगी; पर पैर उठते नहीं थे। हृदय चाहता था, दौड़कर प्रियतमके पास जा पहुँचूँ, पर दौड़ पाती नहीं थी। मन व्याकुल होने लग गया। उसी समय देखती हूँ कि वे स्वयं मेरे पास आ गये हैं। उनकी आँखोंसे प्रेम झर रहा था। आते ही वे प्यारसे बोले— प्रिये! तू बिल्कुल भीग गयी है। आ, उस आम्र-निकुञ्जमें चले चलें। वर्षाका वेग थोड़ा रुकनेपर चली जाना।

ललिता! प्रियतमकी बात सुनकर मेरा हृदय बिल्कुल भर आया। आँखें भी भर आयीं मानो हृदय पानी बनकर प्रियतमकी ओर बहने लग गया। फिर प्यारे श्यामसुन्दरने अतिशय प्यारसे मुझे उठाया। मेरे पैर मात्र जमीनपर थे, बाकी शरीरका सम्पूर्ण भार प्यारे श्यामसुन्दरके ऊपर देकर चल पड़ी। सघन आम्रके वृक्षोंका निकुञ्ज पासमें ही था। उसकी आड़में हम दोनों जा छिपे। वायुका वेग वहाँ अत्यन्त धीमा था। वहाँ प्यारे श्यामसुन्दरने अपने प्यारभरे हाथोंसे मेरी कमरके ऊपरके गीले वस्त्रोंको उतार दिया। मेरे उन अङ्गोंको अपने पीताम्बरसे ढक दिया। फिर कमरके नीचे भी पीताम्बर बाँधकर मेरी गीली चुनरीको अपने हाथोंमें लेकर निचोड़ने लग गये। आह, ललिता! जिस समय प्यारे श्यामसुन्दर उसे निचोड़ रहे थे, पानीकी धारा उनके पैरोंपर गिर रही थी। उस समय मेरा हृदय असीम अनुरागसे अधिकाधिक भरता जा रहा था।

रानी स्वप्नकी बात ललितासे कहती जा रही थीं तथा प्रेमसे उनका हृदय भरता जा रहा था। रानीकी बात सुनकर ललिता बीचमें ही बोल उठती है— बावली! क्या भूल गयी? अनन्तचतुर्दशीके दिन ठीक यही घटना घटी थी। तूने ही तो मुझसे कहा था!

अब ललिताकी बात सुनकर रानी कुछ चौंक-सी जाती हैं। रानीका सुन्दर मुखारविन्द कुछ ऐसी मुद्रा धारण कर लेता है मानो वे कुछ याद कर रही हों। कुछ क्षण चुप खड़ी रहकर बोल उठती हैं—हाँ, री! ठीक है। सचमुच अब याद आयी। देख, सम्भवतः आज बिल्कुल सोयी ही नहीं, प्यारेके हृदयमें मुँह छिपाये लेटी हुई थी। अनन्त-पूजाके दिन तुमने कौस्तुभमणिके ध्यानका वर्णन करते हुए यह कहा था कि भगवान् अनन्तके हृदयपर कौस्तुभ रहता है। तू तो कौस्तुभका वर्णन करने लग गयी, पर मेरा मन प्यारे श्यामसुन्दरके विशाल वक्षःस्थलकी शोभाके ध्यानमें इतना तल्लीन हो गया था कि मैं तुम्हारी बात फिर आगे सुन नहीं सकी। मैं सोचने लगी कि आह! प्यारे श्यामसुन्दर जिस समय मेरे गलेमें बाँह डालकर हृदयसे लगाते हैं, उस समय मेरा सिर उनके वक्षःस्थलपर जा टिकता है। ऐसा करके मेरे प्यारे आनन्दमें विभोर हो जाते हैं; पर मेरा कठोर सिर कहीं प्यारेके वक्षःस्थलपर चोट तो नहीं लगा देता है?* प्यारेके वक्षःस्थलमें सिर छिपाये हठात् इसी भावसे पुनः भावित हो गयी थी। मैं ऐसा सोच ही रही थी कि प्यारेने उसे जोरसे अपने भुजपाशमें दबा दिया। अपने हृदयको उमंगसे प्यारेने मेरे मस्तिष्कको भर दिया। पूजाके बाद उस दिन संध्या-स्नानका दृश्य सामने नाचने लग गया। मैं उस चिन्तनमें बिल्कुल विभोर हो गयी थी। बिल्कुल उसी तरह अनुभव करने लग गयी थी। सारीके बोलनेपर मेरी आँख खुली। मैंने सोचा कि स्वप्न देखा है। सचमुच मुझे भ्रम हो गया था।

रानी यह कहते-कहते रुक जाती हैं तथा कान देकर कुछ सुनने लग जाती हैं। कुछ क्षण रुककर फिर कहती हैं—अयँ! सुन तो सही। मेरा नाम लेकर वे पुकार रहे हैं क्या?

---

*अद्भुत प्रेम-पुत्तलिका व्रज-सुन्दरियोंका हृदय श्याम-प्रेमसे वस्तुतः इतना पूर्ण रहता है कि मानवी जगत्की बुद्धि उस सरस हृदयकी रूपरेखाकी कल्पना भी नहीं कर सकती। भागवतमें ऐसा वर्णन मिलता है, व्रज-सुन्दरियाँ अपने वक्षःस्थलपर श्यामसुन्दरके चरणकमलोंको धरती हुई रखती हैं। कि कहीं मेरा कर्कश हृदय प्यारेके कोमल चरणोंको चोट नहीं लग

यत्ते सुजातचरणाम्बुरुहं स्तनेषु भीताः शनैः प्रिय दधी
—श्रीमद्

आजु गई हुती कुंजन लौं, बरसैं उत बूंद घने घन घोरत।
'देव' कहै हरि भीजत देखि, अचानक आय गए चित चोरत॥
दौरि भई तट ओट कुटी के लपेटि पटी सौं कटी पट छोरत।
चौगुनो रंग बढ्यौ चित में, चुनरी के चुचात लला के निचोरत।

रानीकी मधुर कण्ठध्वनि वनको गुञ्जित करने लग जाती है। ललितादि कुछ निश्चिन्त-सी हो गयी हैं; क्योंकि वे अब घोषसे दूर एवं सघन वन-श्रेणीको पीछे छोड़कर अपने कुञ्जोंकी सीमामें आ गयी हैं। रानी बार-बार उस अन्तिम चरणको दुहराती हैं--चुनरी के चुचात लला के निचोरत।

इसी समय रानीको दीखता है कि रङ्गदेवी एवं चम्पकलताकी कुञ्जके बीचकी जो सड़क गिरिवर-सोतको पार करती है, उसी सड़कके ऊपर पुलके पास प्यारे श्यामसुन्दर खड़े हैं। रानी बड़ी तेजीसे उन्हें पकड़नेके लिये उधर दौड़ पड़ती हैं। साथमें कहती जा रही हैं— वह देख, वह देख, फिर आ गये, वहाँ खड़े हैं।

रानीके पीछे सभी सखियाँ दौड़ने लग जाती हैं। रानी वहाँ पहुँचकर शीघ्रतासे पुल पार कर जाती हैं, पर वहाँ पहुँचते ही श्यामसुन्दर दीखने बंद हो जाते हैं। रानी बड़ी आकुलता एवं आश्चर्यभरी दृष्टिसे इधर-उधर देखने लगती हैं। सोच रही हैं कि कहीं इसी जगह छिप गये हैं। एक बार चम्पकलताकी कुञ्जकी चहारदीवारीपर हाथ रखकर देखती हैं कि इधर गये होंगे। फिर रङ्गदेवीकी कुञ्जकी चहारदीवारीके पास आकर देखती हैं कि शायद उस कुञ्जमें जाकर छिपे हों। फिर पुलके पास सोतकी सीढ़ियोंपर जाकर देखती हैं कि पुलके भीतर तो नहीं छिप गये हैं। वहाँसे लौटकर निराश-सी होकर उत्तरकी तरफ सीधे सड़कपर देखती हैं। इसी समय श्यामसुन्दर उन्हें वहाँसे उत्तर सड़कपर राधाकुण्डके पास खड़े दीख पड़ते हैं। रानीके आनन्दकी सीमा नहीं। वे बड़ी तेजीसे उधर ही दौड़ती हैं तथा कहती जा रही हैं— वाहजी, वाह! बलिहार है, इतनी फुर्तीसे वहाँ जा पहुँचे।

रानी यह कहती हुई दौड़ती चली जा रही हैं और कुछ ही क्षणमें विद्युत् गतिसे वहाँ पहुँच जाती हैं; पर वहाँ पहुँचते ही फिर श्यामसुन्दर

आजु गई हुती कुंजन लौं, बरसैं उत बूँद घने घन घोरत ।
'देव' कहैं हरि भीजत देखि, अचानक आय गए चित चोरत ॥
कोटि भटू तट ओट कुटी के लपेटि पटी सौं कटी पट छोरत ।
चौगुनौ रंग बढ़्यौ चित में, चुनरी के चुचात लला के निचोरत ।

रानीकी मधुर कण्ठध्वनि वनको गुञ्जित करने लग जाती है। ललितादि कुछ निश्चिन्त-सी हो गयी हैं; क्योंकि वे अब घोषसे दूर एवं सघन वन-श्रेणीको पीछे छोड़कर अपने कुञ्जोंकी सीमामें आ गयी हैं। रानी बार-बार उस अन्तिम चरणको दुहराती हैं-- चुनरी के चुचात लला के निचोरत।

इसी समय रानीको दीखता है कि रङ्गदेवी एवं चम्पकलताकी कुञ्जके बीचकी जो सड़क गिरिवर-स्रोतको पार करती है, उसी सड़कके ऊपर पुलके पास प्यारे श्यामसुन्दर खड़े हैं। रानी बड़ी तेजीसे उन्हें पकड़नेके लिये उधर दौड़ पड़ती हैं। साथमें कहती जा रही हैं— वह देख, वह देख, फिर आ गये, वहाँ खड़े हैं।

रानीके पीछे सभी सखियाँ दौड़ने लग जाती हैं। रानी वहाँ पहुँचकर शीघ्रतासे पुल पार कर जाती हैं, पर वहाँ पहुँचते ही श्यामसुन्दर दीखने बंद हो जाते हैं। रानी बड़ी आकुलता एवं आश्चर्यभरी दृष्टिसे इधर-उधर देखने लगती हैं। सोच रही हैं कि कहीं इसी जगह छिप गये हैं। एक बार चम्पकलताकी कुञ्जकी चहारदीवारीपर हाथ रखकर देखती हैं कि इधर गये होंगे। फिर रङ्गदेवीकी कुञ्जकी चहारदीवारीके पास आकर देखती हैं कि शायद उस कुञ्जमें जाकर छिपे हों। फिर पुलके पास स्रोतकी सीढ़ियोंपर जाकर देखती हैं कि पुलके भीतर तो नहीं छिप गये हैं। वहाँसे लौटकर निराश-सी होकर उत्तरकी तरफ सीधे सड़कपर देखती हैं। इसी समय श्यामसुन्दर उन्हें वहाँसे उत्तर सड़कपर राधाकुण्डके पास खड़े दीख पड़ते हैं। रानीके आनन्दकी सीमा नहीं। वे बड़ी तेजीसे उधर ही दौड़ती हैं तथा कहती जा रही हैं— वाहजी, वाह! बलिहार है, इतनी फुर्तीसे वहाँ जा पहुँचे।

रानी यह कहती हुई दौड़ती चली जा रही हैं और कुछ ही क्षणमें विद्युत् गतिसे वहाँ पहुँच जाती हैं; पर वहाँ पहुँचते ही फिर श्यामसुन्दर

नहीं दीखते। रानी इधर-उधर देखने लगती हैं। फिर श्यामसुन्दर राधाकुण्ड एवं कृष्णकुण्डकी सड़कपर बीचके हिस्सेके पुलके नीचे खड़े दीखते हैं। रानी इस बार बैठ जाती हैं तथा रूठनेकी मुद्रामें होकर कहती हैं— जा, अब मैं तुम्हें नहीं देखूँगी! तुम मुझे छोड़कर भागते चले जा रहे हो।

रानी कुछ क्षण आँखें मूँदी रखकर फिर उधर ही देखने लग जाती हैं। इस बार श्यामसुन्दरकी बाँकी झाँकी, मनमोहनी चितवन उन्हें बेसुध बना देती है। वे फिर दौड़ पड़ती हैं। कुण्डकी पूर्वी सीमाके पास पहुँचते-पहुँचते उनका पैर लड़खड़ा जाता है। रानी एक विक्षिप्तकी-सी दशामें गिरती हुई-सी धमसे जमीनपर गिर पड़ती हैं तथा वहीं घासपर मूर्च्छित हो जाती हैं। ललिता आदि दौड़ती हुई आती हैं। देखती हैं, रानीके मुँहसे उजला फेन निकल रहा है। देखते ही सबका चेहरा सूख जाता है। ललिता उन्हें चटसे गोदमें उठा लेती हैं, अपने अञ्चलसे मुख पोंछती हैं; पर रानीको होश नहीं आ रहा है।

वृन्दा इसी समय वहाँ इन्दुलेखाकी कुञ्जसे निकलकर चली आती हैं। सबमें गम्भीरता छा जाती है। आखिर मधुमती विशाखाकी आज्ञासे मधुर कण्ठसे गाना प्रारम्भ करती है। संगीत प्रारम्भ होते ही रानीकी दशा सुधरती-सी दीखती है। अतः मधुमती और भी उत्कण्ठासे गाने लगती है—

कोई एक साँवरो री इत ह्वै आवै जाई।
ज्यों-ज्यों नयनन देखिये री! त्यों-त्यों मन ललचाई॥
बदन मदन मन मोहना घुंघर बारे केस।
मोहन मूरति माधुरी निरतत मनोहर बेष॥
स्याम बरन हियो बेधियो जोबन मद छके नैन।
रूप ठगौरी मोहि लगी री! बिन देखे नहिं चैन॥
धीर हरन बकुरी भुजा री! मद गजराज की चाल।
उर देखे मन आवही ह्वै रहिये, बनमाल॥
समुझाये समुझत नहीं, रहीं छकि मन रह्यो भोय।
'रामराय' प्रभु सौं रमी कहि भगवान सखि सोय॥

गीत समाप्त होते ही सन्नाटा छा जाता है। रानी आँखें खोल देती हैं। उनके चेहरेपर अतिशय गम्भीरता छायी हुई है। वे धीरे-धीरे उठ बैठती हैं। फिर ललिताका सहारा लेकर खड़ी हो जाती हैं। ललिता रानीको पकड़े हुए अपनी कुञ्जकी ओर बढ़ने लगती हैं। राधाकुण्डकी पूर्वी सड़कको पार करके कुञ्जमें प्रवेश करती हैं तथा सीधे उत्तरकी ओर चलती हुई चम्पा-काननमें आ पहुँचती हैं। एक सखी कुछ इशारा करती है। रानी पूर्वकी ओर देखने लग जाती हैं। उधरसे वृन्दाकी एक दासी आती है। ललिताके कानमें कुछ धीरेसे कहती है। रानी उस दासीसे अतिशय प्रेमकी मुद्रामें इशारेसे ही कुछ पूछती हैं। दासी ललिताकी ओर इशारा कर देती है। ललिता कुछ क्षण कुछ सोचती हैं, फिर चम्पा-काननमें आगेकी ओर सबके साथ बढ़ने लग जाती हैं। फिर उत्तर एवं पश्चिमके कोनेकी ओर मुड़ जाती हैं। थोड़ी देरमें ही चम्पा-काननकी सीमाके पास पहुँच जाती हैं। फिर कुछ रुककर पुनः सीधे उत्तरकी ओर बढ़ने लगती हैं तथा शरीफेके वनमें प्रवेश करती हैं। कुछ देरके बाद एक सुन्दर शहतूतका वृक्ष दीखने लगता है। ललिता प्रसन्नताभरी दृष्टिसे, अभी कुछ देर पहले वृन्दाकी जो दासी आयी थी, उसकी ओर देखती हैं। दासी सिर हिलाती है। ललिता रानीकी बाँह पकड़े उसी वृक्षके पास जा पहुँचती हैं तथा खड़ी हो जाती हैं।

॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

भावावेश लीला

श्रीललिताके कुञ्जमें राधारानी शहतूतके वृक्षकी छायामें विराजमान हैं। शहतूतका वृक्ष अत्यन्त हरा है, उसमें हरे-हरे एवं लाल-लाल शहतूतके फल लगे हैं। उसकी जड़के पास अत्यन्त सुन्दर नीले रंगकी मखमली कालीन बिछी हुई है। उसीपर श्रीप्रिया बैठी हैं। कालीनपर मखमली मसनद है। श्रीप्रिया उसीपर आधी लेटी हुई अवस्थामें बैठी हैं। श्रीप्रियाका मुख पूर्वकी ओर है।

मसनदके उत्तरकी तरफ एक सुन्दर छोटी तिपाई, जो मसनदसे थोड़ी कम ऊँची है, पड़ी है। उसी तिपाईपर रखकर चित्रारानी पश्चिम एवं दक्षिणकी ओर मुख किये हुए एक चित्र बना रही हैं। श्रीप्रिया उसी चित्रपर दृष्टि डाले हुए देख रही हैं।

चित्रा कूँची लेकर बड़ी चतुराईसे, पर बहुत शीघ्रतासे चित्रमें रंग भर रही हैं। अब प्रिया मसनदपर अपने बायें हाथकी केहुनीको ऊँचा उठाकर तथा उसी हाथकी हथेलीपर अपने बायें कपोलको रखकर पैर फैलाकर लेट जाती हैं तथा बड़ी गम्भीरतासे चित्रको देखने लगती हैं। चित्राङ्कन प्रायः समाप्त हो चला है। श्रीप्रिया उसे देखकर अतिशय आश्चर्यमें भर जाती हैं, पर बिलकुल चुप हैं। चित्रा कभी कुछ जोरसे, कभी धीरे-धीरे हँसती जा रही हैं तथा चित्रमें रंग भरनेका काम शीघ्रतासे समाप्त कर रही हैं।

श्रीप्रियाके पीछे पीठके पास विशाखा बैठी हैं तथा ललिता वहाँसे कुछ दूरपर हटकर पूर्वकी ओर मुख किये रूपमञ्जरीसे बहुत गम्भीरतासे कुछ बातें कर रही हैं। ललिता कभी-कभी पीछे रानीकी ओर देखकर मुस्करा देती हैं तथा फिर मञ्जरीसे बातें करने लग जाती हैं। रूपमञ्जरी पैरोंके पास बैठी हुई धीरे-धीरे श्रीप्रियाके पैरोंको दबा रही हैं एवं मुस्करा-मुस्कराकर उधर ही देखती जा रही हैं, जिधर चित्र बन रहा है।

चित्रमें रंग भरना समाप्त हो जाता है। चित्रके तीन भाग हैं। चित्र सुनहला है। चित्रवाले पन्नेके नौ बेबाड़े आधे हिस्सेमें एक चित्र है तथा ऊपरवाले आधे हिस्सेको दो बराबर भागोंमें बाँटकर दो चित्र बनाये गये हैं। इस प्रकार एक ही पन्नेपर तीन चित्र हैं। पहले चित्रमें यह दिखलाया गया है कि यमुनाका सुन्दर किनारा है। घाटपर श्रीप्रिया गगरी भर रही हैं। कुछ दूरपर घाटके ऊपर श्रीश्यामसुन्दर कदम्बकी एक टहनीको झुकाकर उससे फूल तोड़ रहे हैं। श्रीप्रिया कनखीसे उन्हें देख रही हैं। दूसरे चित्रमें यह अङ्कित हुआ है कि उसी घाटके पास ही एक कुञ्ज है। उसके दरवाजेपर श्रीप्रिया भौंहें टेढ़ी किये हुए खड़ी हैं। आँखोंसे तो प्रेम झर रहा है, पर कपट-क्रोधका ढंग मुँहपर बनाये हुए खड़ी हैं। श्रीश्यामसुन्दर प्रियाके चरणोंमें झुके हुए हाथोंसे उनके चरणोंको छू रहे हैं। तीसरे चित्रमें यह दिखलाया गया है कि श्रीप्रियाका बायाँ हाथ श्यामसुन्दरके दाहिने हाथमें है तथा एक-दूसरेको निर्निमेष नेत्रोंसे देख रहे हैं। श्रीप्रियाकी गगरी वहीं टेढ़ी होकर पड़ी है। उससे जल गिर रहा है तथा दूरपर श्यामसुन्दरकी गायें मूँजके वनमें दूर चली गयी हैं।

चित्रारानी रंग भरनेकी कूँचीको नीचे रख देती हैं तथा एक दूसरी कूँचीमें सुनहला रंग भरकर बड़े सुन्दर अक्षरोंमें चित्रके नीचे यह पद लिख देती हैं—

ऐरी आज काल्ह सब लोक लाज त्याग दीउ,
सीखे हैं सबै बिधि सनेह सरसाइबो।
यह 'रसखान' दिन द्वै में बात फैलि जैहै,
कहाँ लौं सयानी चंद हाथन छिपाइबो॥
आज हौं निहार्यो बीर! निपट कलिंदी तीर,
दीउन को दीउन सों मुख मुसकाइबो।
दीउ परे पैयाँ, दीउ लेत हैं बलैयाँ,
उन्हें भूल गयो गैयाँ इन्हें गागर उठाइबो॥

राधारानी पदको पूरा पढ़कर चित्राके हाथसे चित्र छीन लेती हैं तथा प्यारसे चित्राके कपोलपर एक हलकी चपत लगाकर कहती हैं—चंद

कहींकी ! तू यह कैसे जान गयी ? मैंने तो तुझे कुछ भी नहीं कहा था।

चित्रा हँसती हुई कहती है— मुझे तो कुछ मालूम ही नहीं है। मुझे तो आज ललिताने कहा था कि बहिन ! मुझको आज समय नहीं मिलेगा, तू आज श्यामसुन्दरके आनेके पहले-पहले ऐसे तीन चित्र बना दे; इसलिये प्रातःकालसे ही इनमें लगी थी।

रानी चित्रको लेकर बड़ी प्यारभरी दृष्टिसे उसे देखने लग जाती हैं। फिर आँखें मूँदकर कुछ सोचने लग जाती हैं। चित्रा उनके हाथसे चित्रको ले लेना चाहती है; इसलिये धीरेसे उसे खींचती है; पर रानीकी आँखें खुल जाती हैं। वे कहती हैं— वाह, वाह ! तू भी आजकल मुझे ठगना सीख गयी है।

चित्रा हँसने लगती है तथा कहती है— नहीं, देखनेके लिये ले रही थी कि इसमें कहीं कोई भूल तो नहीं रह गयी है।

श्रीप्रिया चित्राकी बात सुनकर मुस्कुराती हुई पुनः आँखें बंद कर लेती हैं। आँखें बंद रखकर उसी पदको धीरे-धीरे गुनगुनाने लग जाती हैं। शहतूत-वृक्षके चारों ओर शरीफेका वन है। सुन्दर-सुन्दर, बड़े-बड़े शरीफेके वृक्ष लगे हैं, जिनमें पके हुए फल लटक रहे हैं। कई फलोंपर तोते बैठे हुए चोंचसे उसमें छेद बना रहे हैं। शरीफेकी सघन वृक्षावलीसे यह शहतूतका स्थान इतना घिरा हुआ है कि बाहरकी कोई भी चीज किसी तरफसे बिलकुल नहीं दीखती।

श्रीप्रिया कुछ देर बाद आँखें खोलकर इधर-उधर देखती हैं। फिर दृष्टि ऊपर उठाकर नीले गगनकी ओर देखने लग जाती हैं। नीले गगनकी नीलिमाकी ओर ध्यान जाते ही श्रीप्रियाको आकाशमें श्यामसुन्दरकी छवि दीखने लग जाती है। श्रीप्रिया देखती हैं कि एक श्यामसुन्दर ठीक ऊपर खड़े हैं, फिर कुछ दूरपर दूसरे श्यामसुन्दर खड़े हैं, फिर तीसरे, फिर चौथे श्यामसुन्दर ! इस प्रकार समूचे गगनमें ही श्रीप्रियाको श्यामसुन्दर-ही-श्यामसुन्दर दीखने लग जाते हैं। श्रीप्रिया बोल उठती हैं— एक, दो, पाँच, दस, बीस, पचास, हजार, लाख, करोड़, असंख्य ! वाह, प्रियतम ! वाह, तुम्हें अच्छी ठिठोली सूझी है।

प्रियाकी बात सुनकर सखियाँ प्रेममें डूब जाती हैं; पर ललिता श्रीप्रियाकी बात सुनकर उनके पास चली आती हैं तथा जोरसे हँसकर कहती हैं — एक श्यामसुन्दरके कारण तो मैं तुम्हें सँभालते-सँभालते परेशान हो गयी हूँ, अब असंख्य श्यामसुन्दर आये हैं, तब तो मेरी क्या दशा होगी ? पता नहीं।

ललिताकी बात सुनकर रानी कुछ लजा-सी जाती हैं तथा कुछ सँभलकर, गम्भीर होकर चुपचाप बैठ जाती हैं। इसी समय दबे पाँव श्यामसुन्दर दक्षिणकी ओरसे आकर शरीफेके वृक्षकी ओटमें खड़े हो जाते हैं। श्रीप्रियाकी दृष्टि उनपर नहीं पड़ती, सखियाँ भी उन्हें नहीं देखतीं, पर श्यामसुन्दर सबको अच्छी तरह देख रहे हैं।

श्रीप्रिया ललितासे कहती हैं— ललिते ! तू जानती है, आसमान नीला क्यों है ?

ललिता मुस्कुराकर कहती हैं— ना, मैं तो नहीं जानती।

रानी कुछ चिढ़ी-सी होकर चुप हो जाती हैं; पर कुछ देर बाद कहती हैं— देख, श्यामसुन्दर अभीतक नहीं आये। कल मुझे पतंग उड़ाना सिखा देनेके लिये कह गये थे। आसमानको देखकर श्यामसुन्दरकी बात याद आ गयी।

रानीकी बात सुनकर ललिता मुस्कुराकर फिर गम्भीर बन जाती हैं। श्यामसुन्दर धीरे-से अपनी चादरको हवामें उड़ा देते हैं। पीताम्बर एक बार हवामें उड़कर फिर शरीफेकी डालियोंपर गिर जाता है। सखियोंकी दृष्टि उधर ही चली जाती है; पर प्रिया उसे नहीं देख पातीं।

श्रीप्रिया कुछ देर बाद कहती हैं— री ! वह चित्र कहाँ गया ?

चित्र श्रीप्रियाके हाथमें ही था; पर श्रीप्रियाका प्रेमपूर्ण मस्तिष्क अब ठीक-ठीक काम नहीं कर रहा है, इसलिये अपने हाथमें रखे हुए चित्रको भी श्रीप्रिया भूल जाती हैं। ललिता बड़ी तेजीसे कहती हैं— वह देखो, चित्रने उस शरीफेके वृक्षमें उसे छिपा दिया है।

उसी समय ललिता उसी वृक्षकी ओर इशारा कर देती हैं कि जिसके पीछे श्यामसुन्दर खड़े थे।

श्रीप्रिया उधर ताकने लग जाती हैं; पर उनकी आँखोंमें तो श्यामसुन्दर भर गये थे। प्रत्येक वृक्षकी जगह, प्रत्येक लताकी ओट उन्हें श्यामसुन्दर-ही-श्यामसुन्दर दीख रहे थे। अतः प्रिया यह सोचने लगती हैं कि मेरा मस्तिष्क तो ठीक है नहीं; मैं श्यामसुन्दरके सिवा कुछ भी नहीं देख पा रही हूँ। चित्रकी बात याद आ गयी थी, पूछ बैठी; पर अब इन सबके कहनेके अनुसार उधर नहीं जाती हूँ तो ये सब हँसेंगी। अतः श्रीप्रिया यन्त्रकी तरह, आधी बावली-सी होकर, जिधर ललिताने इशारा किया था, उधर ही बढ़ने लग जाती हैं। चित्र उनके हाथसे मसनदपर गिर जाता है।

श्रीप्रिया आगे दक्षिणकी ओर बढ़कर ठिठकी-सी होकर खड़ी रह जाती हैं और सोचती हैं कि मुझे क्या हो गया है? श्यामसुन्दर तो एक हैं, फिर इतने श्यामसुन्दर कहाँसे आ गये? मेरे प्रियतम मुझसे कोई खेल खेल रहे हैं या मेरी आँखोंमें ही कोई दोष हो गया है?—यह सोचती हुई श्रीप्रिया इधर-उधर देखने लगती हैं, पर दाहिने-बायें-सामने उन्हें बिलकुल प्रियतम श्यामसुन्दर दीख पड़ते हैं। रानी सोचती हैं—अच्छा, एक काम करूँ। मैं जाँच लेती हूँ, बात क्या है?

जाँच करनेकी दृष्टिसे श्रीप्रिया एक प्यारभरी हलकी चपत बायीं ओर लगाने चलती हैं; पर हाथ आकाशमें तैरने लग जाता है। श्रीप्रिया कुछ गम्भीर-सी हो जाती हैं। वे निश्चय करती हैं कि ना, मेरी आँखोंमें ही कोई दोष है। यदि श्यामसुन्दर होते तो उनसे मेरा हाथ टकरा जाता। ऐसा सोचकर प्रिया निधड़क दक्षिणकी तरफ उसी झाड़ीकी ओर बढ़ने लगती हैं, जिसके पीछे श्यामसुन्दर छिपे हुए हैं। श्रीप्रिया जैसे आगे बढ़ती हैं, वैसे ही उन्हें दीखता है कि मेरे आगे-पीछे, दाहिने-बायें, सैकड़ों-हजारों श्यामसुन्दर चल रहे हैं। अब प्रियाजीने मनमें यह निश्चय कर लिया है कि मेरी आँखोंमें यह कोई रोग है। इसलिये वे उस झाड़ीमें छिपे हुए श्यामसुन्दरको भी, असली श्यामसुन्दरको भी नकली समझती हैं।

श्रीप्रिया उस झाड़ीके पास पहुँच जाती हैं। श्रीश्यामसुन्दर श्रीप्रियाकी यह प्रेम-दशा देखकर स्वयं प्रेममें विभोर होने लग जाते हैं तथा उनका

सारा शरीर काँपने लगता है। वे चाहते हैं कि श्रीप्रियाको हृदयसे लगा लें, पर हाथ-पैर सब-के-सब बिलकुल जड़-से हो जाते हैं। अतः श्रीप्रियाके बिलकुल पास आ जानेपर भी असली श्यामसुन्दर चुपचाप खड़े हैं। श्रीश्यामसुन्दरने पीताम्बरको शरीफेकी एक टहनीपर रख दिया था। इसलिये कमरसे ऊपरका हिस्सा बिलकुल खुला है। सिरपर मोर-मुकुट है और हाथमें मुरली है।

अब प्रियाकी दृष्टि उनपर पड़ती है। अबतक श्रीप्रियाके मस्तिष्कमें बिलकुल वही यमुना-तटवाली झाँकी भरी हुई थी। दुपट्टा ओढ़े हुए लाखों श्यामसुन्दर उन्हें दीख रहे थे। पर जब वस्तुतः श्यामसुन्दरके पास पहुँची तो देखती हैं कि एक श्यामसुन्दरके कंधेपर दुपट्टा नहीं है। दुपट्टा शरीफेकी टहनियोंपर है तथा श्यामसुन्दरकी छवि जड़पुतलीकी तरह दीख पड़ रही है।

श्रीप्रिया सोचती हैं—यह क्या बात है? अबतक तो मेरी आँखें प्रियतमके कंधेपर दुपट्टा देख रही थीं, पर यह सामनेकी छवि तो कुछ और ही निराली है। आह! मेरे श्यामसुन्दर कितने सुन्दर हैं? आह! दुपट्टेसे रहित श्रीअङ्गको मैं आज ही देख पायी हूँ।

प्रिया सोचती हैं कि यह भी मेरी आँखोंका ही दोष है; पर चित्त बरबस उस छविपर जाकर टिक गया है। प्रिया फिर सोचती हैं कि इस दुपट्टेके भीतर ही शायद वह चित्र चित्राने छिपाया होगा। यही वह दुपट्टा है तथा मैं जो श्यामसुन्दरको देख रही हूँ यह तो मेरी आँखोंका ही दोष है। पहलेकी तरह ही एक दूसरी झाँकी अब मुझे दीख रही है। यह सब सोचकर श्रीप्रिया दुपट्टेकी ओर झुकती हैं।

दुपट्टेका एक छोर श्यामसुन्दरके हाथमें था और दूसरा शरीफेकी टहनीपर। श्रीप्रिया उसी छोरके पास हाथ बढ़ाती हैं कि जिस छोरके पास श्यामसुन्दरका हाथ था। दोनोंके हाथ छू जाते हैं। छूते ही दोनों प्रेममें इतने अधीर हो जाते हैं कि एक-दूसरेकी तरफ गिरकर मूर्च्छित होने लग जाते हैं। सखियाँ दौड़ पड़ती हैं; पर सखियोंके पहुँचनेके पहले ही एक-दूसरेके हृदयसे लगकर मूर्च्छित हो जाते हैं। भाग्यसे शरीफेकी एक मोटी डाल पीछे आ जाती है, नहीं तो दोनों धमसे जमीनपर ही गिर

पड़ते। सखियाँ जल्दीसे पहुँचकर दोनोंको पकड़ लेती हैं। ललिता श्रीश्यामसुन्दरको पकड़कर कुछ धीरेसे हिलाती हैं। श्यामसुन्दर आँखें खोल देते हैं तथा कमरसे रूमाल निकालकर श्रीप्रियाके मुखपर पंखा झलने लग जाते हैं; पर श्रीप्रियाकी मूर्च्छा अत्यन्त गहरी हो गयी है, इसलिये उनकी आँखें नहीं खुलतीं।

श्यामसुन्दर श्रीप्रियाको उठाकर गोदमें लेकर धीरेसे बैठ जाते हैं। सखियाँ चारों ओरसे अतिशय उत्कण्ठाके साथ देख रही हैं कि आज तो दोनोंका ही ढंग विचित्र है। श्यामसुन्दरका मुख पश्चिमकी ओर है। श्रीप्रिया उनकी गोदमें सिर रखकर गहरी मूर्च्छामें पड़ी हुई हैं। श्यामसुन्दर एकटक श्रीप्रियाके मुखकी ओर देख रहे हैं। कुछ देर बीतनेपर भी जब प्रियाकी आँखें नहीं खुलतीं तो श्यामसुन्दर कुछ भर्राई हुई आवाजमें ललितासे धीरेसे पूछते हैं—मेरे आनेके पहले क्या बातें हो रही थीं?

श्यामसुन्दरके सामने ललिता वही चित्र, जो शहतूतकी जड़के पास पड़ा था, मँगवाकर रख देती हैं तथा शुरूसे अन्ततक किस प्रकार चित्र बनाया जा रहा था, सभी घटना श्यामसुन्दरको सुना देती हैं। श्रीश्यामसुन्दर चित्र देखते हैं। देखकर वे भी पुनः काँप जाते हैं। उनका शरीर भी पसीनेसे भर जाता है। ललिता उनके हाथसे चित्र ले लेती हैं।

इधर मूर्च्छाकी अवस्थामें श्रीप्रिया ऐसा अनुभव कर रही हैं कि मैं यमुना-तटपर हूँ। श्यामसुन्दर बाँसुरी बजाते हुए आगे गौओंको हाँकते उधर ही आ रहे हैं। मैं उन्हें एकटक देख रही हूँ। वे भी मुझे देख रहे हैं। मैं अकेली हूँ, प्रियतम श्यामसुन्दर भी अकेले हैं। मुझे देखकर वे मेरे पास दौड़ आये हैं तथा मुझे हृदयसे लगाकर प्यार करने लग गये हैं। फिर हम दोनों निकुञ्जकी ओर चल रहे हैं। निकुञ्जमें पहुँचकर मैं पुष्पशय्यापर प्यारे श्यामसुन्दरकी गोदमें लेटी हुई हूँ। श्यामसुन्दर अपने हाथोंसे मेरी अलकावलीको सहलाते हुए मुझसे बातें कर रहे हैं। मैं जवाब दे रही हूँ। श्रीप्रिया इसी भावादेशकी दशामें अब जोरसे बोल उठती हैं—क्यों, तुम्हें स्वीकार है।

सखियाँ श्रीप्रियाकी यह बात सुनकर कुछ भी नहीं समझ पातीं; पर श्यामसुन्दर समझ जाते हैं। श्यामसुन्दरको उस दिनकी प्रियाकी

प्यारभरी चर्चा याद हो आती है। वे प्रेममें डूब जाते हैं, पर तुरंत ही सँभलकर श्रीप्रियाको बड़ी चतुराईसे धीरेसे जवाब देना शुरू करते हैं।

श्रीप्रिया मूर्च्छाकी अवस्थामें यही अनुभव कर रही हैं कि मैं यमुनाके तटके निकुञ्जमें ही प्यारेकी गोदमें पड़ी हुई प्यारे श्यामसुन्दरसे बातें कर रही हूँ। श्रीप्रियाने भावावेशमें जब यह कहा कि क्यों, स्वीकार है? तो कुछ देरतक तो वहाँ सन्नाटा छाया रहा। प्रिया फिर बोलीं—क्यों, बोलते नहीं, स्वीकार है या नहीं?

अब श्यामसुन्दर कहते हैं—प्रिये! स्वीकार करना हमारे वशकी बात नहीं है।

श्रीराधारानी—फिर इस तरह कैसे निभेगा?

श्यामसुन्दर—प्रिये! मैं क्या करूँ? मेरे हृदयको तुमने चारों ओरसे छा लिया है। अब तो यह असम्भव है।

रानी—मेरे जीवनधन! फिर मैं तो अभागिनी तुम्हारे सुखमें काँटा बननेके लिये ही आयी!

श्यामसुन्दर—प्रिये! तुम्हें देखकर मेरा हृदय शीतल हो जाता है। तू यदि अपनेको काँटा मानती है तो फिर जगत्में भला कौन-सी वस्तु हमें सुख देगी?

रानी—मेरे प्राणेश्वर! मैं आपके हृदयको देखती हूँ, पर.....।

श्यामसुन्दर—हाँ, बोल, फिर इस प्रकारकी प्रार्थना करके मुझे क्यों रुलाती हो?

रानी—इसीलिये नाथ! कि मैं मेरे कारणसे होनेवाली आपकी बदनामी नहीं सह सकती।

श्यामसुन्दर—पर प्रिये! यह बदनामी तो हमारे जीवनकी धाराको थोड़े पलट सकेगी?

रानी—देखो, मेरे नाथ ! हठ नहीं करो; सचमुच कहती हूँ, तुम मुझे भूल जाओ। मेरे कारण ही तुम बदनाम हो रहे हो। मैं तुम्हारे विरहमें जल-जलकर मर जाऊँगी, पर तुमसे मिलकर तुम्हें बदनाम नहीं करूँगी। मेरे जीवनाधार ! तुम्हें न देखकर मेरा हृदय फटने लगता है; पर मैं इसे रोककर रखूँगी, अनन्त कालतक इसे तुम्हारे लिये बचाकर रखे रहूँगी।

श्यामसुन्दर—पर प्रिये ! तुम्हें देखे बिना मैं जीवित नहीं रह सकता।

रानी श्यामसुन्दरकी बात सुनकर बिलकुल गम्भीर हो जाती हैं, रोने लग जाती हैं। श्यामसुन्दर रूमालसे आँखें पोंछकर कहते हैं—प्रिये ! तू मेरी चिन्ता बिलकुल मत कर। मैं अपनी व्यवस्था सब ठीक कर लूँगा। प्रिये ! सब सह लूँगा; पर तुम्हें भूल जाऊँ, तुमसे मिलने न आऊँ, यह तो असम्भव, असम्भव है।

रानी—फिर, कम-से-कम एक काम करो। कम-से-कम बहिन चन्द्रावलीको मेरे लिये कष्ट न पहुँचाओ।

श्यामसुन्दर—मेरी प्राणेश्वरि ! मैं तुम्हारे हृदयको जानता हूँ। मेरे हृदयकी रानी ! तू दिन-रात मेरे सुखकी ही चिन्ता करती है। चन्द्रावली ही नहीं, चन्द्रावलीके सहित मैं अपने-आपको तुम्हारे हाथ बेच चुका हूँ। तू जैसा कहेगी, वैसा ही कर लूँगा।

श्रीप्रियाके मुखपर प्रसन्नता छा जाती है। श्रीप्रिया कहती हैं—एक बात और है। आज रूप नन्दरानीकी दशा देख आयी है मैया बहुत जोरसे रो रही थीं कि हाय ! मेरे लल्लाको क्या हो गया है ? न खाता है, न पीता है। आँखें भर-भर आती हैं। चित्त उड़ा हुआ-सा रहता है। मैं पूछती हूँ कुछ, जवाब देता है कुछ, ·····।

श्यामसुन्दर श्रीप्रियाकी बात सुनकर मुस्कुराने लगते हैं तथा, फिर चतुराईसे कहते हैं—तो फिर ?

रानी—मेरे प्राणेश्वर ! रूपकी बात सुनकर मैं समझ गयी हूँ कि तेरी यह दशा मेरे कारण ही हुई है। इसलिये कहती हूँ कि इस प्रकार

खाना-पीना छोड़ दोगे तो मुझे कितना कष्ट होगा ! ऐसा मत करो, नाथ !

श्यामसुन्दर—प्रिये ! क्या मैं जानकर ऐसा करता हूँ ? देख, मैं खाने बैठता हूँ, उस समय थाली मुझे आँखोंसे नहीं दीखती। थालीकी जगह मुझे तू दीखने लग जाती है। हाथमें पीनेके लिये जलका गिलास मैया पकड़ा देती है, मुझे गिलास नहीं सूझता, गिलासकी जगह तू दीखती है। सोनेके लिये मैया मुझे कोमल शय्यापर प्यारसे लिटा देती है, पर मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि तू रो-रोकर, मेरा नाम ले-लेकर मुझे बुला रही है। तेरी मधुर आवाज सुनते ही मेरी आँखोंमें आँसू भर आते हैं। मैं पागलकी तरह हो जाता हूँ। तू ही बता, मैं आखिर करूँ तो क्या करूँ ?

रानी—मेरे नाथ ! पर तुम्हारे नहीं खानेसे मैया भी नहीं खाती ……ना,……ना, कुछ धीरज धरकर खा लिया करो।

श्यामसुन्दर—अच्छा, मैं तो, मान ले, आज चेष्टा करूँगा कि तुम्हारी बात मान लूँ, पर तू क्या करती है, तू ही सोच।

रानी कुछ शर्मायी-सी होकर कहती है—क्यों, मैं क्या करती हूँ ?

श्यामसुन्दर—वाह, तू समझती है कि मुझे कुछ मालूम ही नहीं है। ललिताने आज तेरी दशा मुझे बता दी है। उसने जो-जो तुम्हारी दशाका वर्णन किया, उसे सुनकर मैं चकित रह गया। ललिता बोली कि प्यारे श्यामसुन्दर ! तुमसे मिलकर मेरी सखी राधाकी क्या दशा हुई है, सुनो ! उसकी आँखोंसे निरन्तर आँसूकी धारा बहती रहती है। यह ज्ञान खो बैठी है कि मैं कहाँ हूँ, किस जगह हूँ। बड़ी मुश्किलसे मैं धीरज बँधाकर बिछौनेसे उठाती हूँ। उठते ही लड़खड़ाकर गिर पड़ती है। फिर उठाती हूँ, मुश्किलसे उठकर आगे बढ़ती है। जाना चाहिये स्नान-वेदीकी ओर, चली जाती है रसोईघरकी ओर। पकड़कर लाती हूँ। दोपहरके समय ही दीपक जलाकर कहने लगती है कि ललिते ! साँझ हो गयी। तू मुझे जल्दीसे कपड़े पहना दे। मैं प्यारे श्यामसुन्दरसे मिलने जाऊँगी। तनिक भी हमलोग हटे कि यह धूपमें इधर-उधर दौड़ने लगती है। दिन-रात हमलोगोंको पहरा रखना पड़ता है कि कहीं दीवालसे टकरा न जाये, यमुनामें जाकर कूद

न पड़े। मैं समझाती हूँ, पर एक नहीं सुनती। लोकलज्जाका भय दिखलाती हूँ तो खिलखिलाकर हँस देती है और कहती है कि सबकी गठरी बाँधकर यमुनामें डुबा चुकी हूँ। लोक-वेद—सब बह गये। अब तो प्यारे श्यामसुन्दरके साथ जो होना होगा, हो जायेगा।

श्यामसुन्दरकी बात सुनकर रानी कुछ शर्मा-सी जाती हैं। रानी कुछ बोलना चाहती हैं, पर श्यामसुन्दर चाहते हैं कि आगेकी बात मेरी प्यारी राधा किसीको न बता दें। बात यह हुई थी कि ठीक इसी तरहका प्रश्नोत्तर निकुञ्जमें बैठकर श्रीप्रिया-प्रियतमके बीचमें कुछ दिन पहले हुआ था। यमुना-तटपर मिलन होनेका चित्र देखकर श्रीप्रिया उसी भावसे आविष्ट हो गयी थीं तथा निकुञ्जमें श्यामसुन्दरके साथ उसी प्रेममयी लीलाको अनुभव कर रही थीं। उन्हें यह बिलकुल पता नहीं था कि मैं भावावेशमें ललिताके कुञ्जमें शरीफेके पेड़के नीचे प्यारेकी गोदमें लेटी हुई बक रही हूँ। श्यामसुन्दरको सब बातें याद थीं ही, अतः प्रियाके उत्तरमें उस दिन उन्होंने जैसे-जैसे, जो-जो कहा था, आज भी वे उसे चतुराईसे कहते चले गये। पर जब उन्होंने देखा कि यदि मैं रोकूँगा नहीं तो आगेकी बात भी यह कह देगी, इसलिये श्रीप्रियाके भावावेशको तोड़नेके लिये श्यामसुन्दर जोरसे कह उठते हैं—देख! सामने ललिता है, इससे पूछ ले, इसने ये बातें मुझसे कही हैं या नहीं।

इस बार यह सुनकर रानी चौंक पड़ती हैं। वह तो समझ रही थी कि मैं अकेले प्यारे श्यामसुन्दरके साथ हूँ; ललिताके सामने होनेकी बात सुनकर वे घबराकर आँखें खोल देती हैं। आँखें खोलते ही देखती हैं कि सखियाँ मुस्कुरा रही हैं। प्यारे श्यामसुन्दर भी मुस्कुरा रहे हैं। रानी कुछ देरतक तो समझ ही नहीं पातीं कि क्या बात है? पर धीरे-धीरे सब बातें याद आनेसे वे समझ जाती हैं कि मैं भावावेशमें उस दिनके मिलनकी बात कह गयी हूँ। ललिताने रानीसे सब बातें पूछी थीं, पर रानीने प्रेमसे टाल दिया था कि आज नहीं बताऊँगी, कल बता दूँगी। पर ललिताने अतिशय उत्कण्ठाके कारण रानीके हृदयकी बात जान लेनी चाही। इसीलिये उसने यह चित्र बनवाया था। ललिताका उपाय सफल हो गया था, इसलिये वह जोरसे हँस रही थी। रानी जल्दीसे श्यामसुन्दरकी गोदसे उठ जाती हैं। श्यामसुन्दर भी हँसते हुए उठ जाते हैं। रानीको

शर्मायी देखकर बात बदलनेके लिये श्यामसुन्दर कहते हैं—प्रिये ! पतंग उड़ाना सिखानेकी बात मैंने कल कही थी। चल, मैं तुझे सिखा दूँ।

फिर श्यामसुन्दर श्रीप्रियाका हाथ पकड़े हुए वहीं शहतूतके पेड़की जड़के पास पहुँचकर कालीनपर प्रियाके साथ बैठ जाते हैं। सखियाँ सेवामें लग जाती हैं। मधुमती वीणापर गाने लग जाती है—

हौं बलि जाउँ नागरि-स्याम।
ऐसिये रंग करौ निसि बासर वृंदा विपिन कुटी अभिराम॥
हास बिलास सुरत रस सींचत पसुपति दग्ध जिवावत काम।
हित हरिवंस लोल लोचन अलि करहु न सफल सकल सुखधाम॥

॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ।

जलकेलि लीला

निकुञ्जसे निकलकर सखियों एवं श्रीराधारानीके सहित श्रीकृष्ण राधाकुण्डके घाटपर स्नान करनेके उद्देश्यसे आये हैं तथा चमचम करते हुए संगमरमरके घाटपर खड़े हैं। श्रीप्रियाजी पश्चिमकी ओर मुँह किये मन्द-मन्द मुस्कुरा रही हैं तथा श्रीकृष्ण पूर्वकी ओर मुख किये मुस्कुरा रहे हैं। रूपमञ्जरी श्रीप्रियाजीके मस्तकसे मणियोंका चूड़ा उतार लेती है। श्रीकृष्णका मुकुट उतारने ललिता जाती हैं, पर श्रीकृष्ण पीछे हट जाते हैं तथा कहते हैं—धूर्त ! चल, हट, मैं मुकुट सहित ही नहाऊँगा !

ललिता चाहती हैं कि किसी प्रकार मुकुट छीन लूँ; पर श्रीकृष्ण उसे बायें हाथसे पकड़ लेते हैं। इसी बीचमें गुणमञ्जरी श्रीप्रियाजीके गलेमेंसे मणियों एवं मोतियोंका हार निकालकर और एक पीले रूमालमें बाँधकर पास ही पड़ी हुई सोनेकी परातमें रख देती है।

श्रीप्रियाजीकी आँखोंसे प्रेम झर रहा है। वे इशारेसे श्रीकृष्णको कहती हैं—सावधान रहना, ललिता मुकुट छीननेके लिये पीछेसे टूट पड़ेगी।

बात यह थी कि श्रीकृष्ण बायें हाथसे मुकुट पकड़े हुए श्रीप्रियाजीके शरीरकी शोभा देखने लग गये थे और ललिता यह सोच रही थीं कि राधाका चूड़ा उतार लिया है तो फिर श्यामसुन्दरका मुकुट उतार लेंगे, तभी पानीमें उतरेंगे।

श्रीराधाके इशारेसे श्रीकृष्ण झटपट पीछेकी ओर मुड़कर ललिताका चूड़ा छीन लेते हैं तथा पानीमें धड़ामसे घाटसे पाँच हाथ दूर कूद पड़ते हैं। उनके पानीमें कूदते ही ललिता पीछेसे धड़ामसे कूद पड़ती है तथा जाकर अपना चूड़ा पकड़ लेती हैं। श्रीकृष्णने तबतक चूड़ेको पानीमें डुबा दिया था, जिससे उसपरसे मोतीकी तरह पानीकी बूँदें झर रही थीं। जब

ललिताने चूड़ा पकड़ लिया, तब उसके लिये छीना-झपटी होने लग गयी। श्रीकृष्ण कहते—मैं तो नहीं छोड़ता।

ललिता कहती—मैं लेकर छोड़ूँगी।

श्रीकृष्ण छातीभर पानीमें उत्तरकी तरफ मुख किये हुए खड़े हैं एवं ललिता उनके सामने दक्षिणकी ओर मुख किये हुए उससे थोड़े कम पानीमें खड़ी हैं। श्रीराधा मन्द-मन्द मुस्कुराती हुई एक, दो, तीन सीढ़ियोंपर पैर रखती हुई धीरे-धीरे पानीमें उतर आती हैं तथा ललिताकी बायीं ओर जाकर खड़ी हो जाती हैं। ललिताके कंधेको अपने दाहिने हाथसे पकड़कर और श्रीकृष्णकी ठोड़ीको अपने बायें हाथसे छूकर कहती हैं – लो! मैं फैसला किये देती हूँ। ललिता भी मान लेगी, तुम भी मान लो।

श्रीकृष्ण कहते हैं—क्या फैसला? बताओ पहले, तब पीछे चूड़ा छोड़ूँगा।

श्रीराधाने कहा—चूड़ा मेरे हाथमें दे दो।

श्रीकृष्ण—तू ललिताको तो नहीं देगी न?

श्रीराधा—नहीं दूँगी।

श्रीकृष्ण चूड़ा श्रीराधाके हाथमें दे देते हैं। गुणमञ्जरी श्रीराधाके पीछे-पीछे आयी थी। श्रीराधाने उससे कुछ इशारेसे कहा। वह छप-छप करती हुई पानीको हाथोंसे चीरती हुई घाटके ऊपर चढ़ जाती है तथा श्रीराधाका चूड़ा उठाकर पानीमें ले आती है। श्रीराधा अपने चूड़ेको अपने सिरपर रख लेती हैं तथा कहती हैं—ललिताका कहना था कि मैंने चूड़ा उतार दिया तो मुकुट श्यामसुन्दर उतार दें। अब मैंने चूड़ा पहन लिया। अब दोनोंका बराबर दाँव है। किंतु तुमने जो ललिताका चूड़ा छीन लिया है, उसका यह दण्ड है कि तुम अपने हाथोंसे ललिताको चूड़ा पहना दो तथा उसके हाथमें अपनी बंशी दे दो। आज दिनभर बंशी उसके पास रहेगी।

श्रीकृष्ण एक बार तो झिझके, पर फिर सोचा कि अभी तो स्नान करना है। अभी बंशी दे दूँ। फिर पानीसे निकलनेके बाद किसी उपायसे

ले लूँगा। अभी तो बजाना है नहीं। श्रीकृष्ण यह सोचकर मुस्कुराते हुए चूड़ा ललिताके सिरपर बाँधने लग गये। चूड़ा बाँधकर वंशीसे ललिताकी ठोड़ीको छूकर कहा—यह लो।

ललिता वंशी लेकर अपनी दासी लवङ्गमञ्जरीको दे देती हैं। लवङ्गमञ्जरी उसे कञ्चुकीमें रख लेती है। अब श्रीकृष्ण पानीका एक चुल्लू लेकर ललिताके मुँहपर झोंक देते हैं तथा एक मन्त्र पढ़ते हैं, जिसका यह भाव है कि हे देवि! आजका जो स्नान-यज्ञ है, वह सफल हो, इसके लिये मैं आपकी प्रार्थना करता हुआ आपका अभिषेक कर रहा हूँ।

ललिता दोनों हाथोंसे चुल्लू भरकर चाहती हैं कि श्रीकृष्णके मुखपर दे मारूँ कि उसी समय हंस-हंसिनीका एक जोड़ा ऊपरसे उड़ता हुआ आता है तथा ललिता, श्रीराधा एवं श्रीकृष्णके बीचमें कूद पड़ता है। हंसिनी अपना सिर श्रीराधाकी ओर कर देती है एवं हंस श्रीकृष्णकी ओर मानो वे आकर उन्हें प्रणाम कर रहे हों। श्रीकृष्ण दोनों हाथोंसे हंसको पकड़कर अपनी बायीं ओर रखकर दाहिने हाथसे पानी लेकर हंसके सिरपर डालने लगते हैं तथा श्रीराधा उसी तरह हंसिनीको रखकर उसके सिरपर पानी डालती हैं। ललिता इसी बीचमें श्रीराधाके पीछेसे आकर उनको धक्का दे देती हैं, जिससे राधारानीका पैर जमीनपरसे हट जाता है तथा वे धक्का लगनेके कारण श्रीकृष्णकी ओर बढ़ जाती हैं। श्रीकृष्ण हंसकी पीठपरसे अपना हाथ उठाकर राधारानीको सँभाल लेते हैं। ललिता घाटकी ओर मुँह करके भागने लगती हैं, पर श्रीकृष्ण बायें हाथसे राधारानीको सँभाले रखकर ललिताको पकड़नेके लिये हाथ बढ़ाते हैं तथा उसकी वेणी श्रीकृष्णके हाथमें आ जाती है। ललिता हँसने लग जाती हैं। श्रीकृष्ण भी हँसने लगते हैं तथा कहते हैं—सीधे मनसे अब यहाँ, जो-जो कहूँ, वैसे कर। नहीं तो पानीमें, मैं देखता हूँ, हारकर तू रोती है या मैं रोता हूँ।

ललिता मुस्कुराकर वेणी छुड़ाकर फिर दक्षिणकी ओर मुँह करके खड़ी हो जाती हैं तथा आँखें तरेरकर श्रीराधासे कहती हैं—री! तुम दोनों मिलकर मुझे तंग करना चाहते हो। क्यों ठीक है न?

राधारानी मुस्कुराती हैं तथा श्रीकृष्णसे कहती हैं—अच्छा, अब दल बाँट लो, कौन-कौन, किस-किस तरफ, कैसे खड़ा हो ?

श्रीकृष्ण कहते हैं—अच्छा, ठीक है। मैं यहाँ खड़ा होता हूँ तथा तुम यहाँ खड़ी रहो और कलकी तरह आज जलमें नृत्य होगा।

श्रीकृष्ण पश्चिमकी ओर मुँह करके खड़े हो जाते हैं। श्रीराधाके दोनों हाथोंको पकड़कर अपने सामने खड़ा कर लेते हैं, जिससे श्रीराधाका मुँह पूर्वकी ओर हो जाता है। सखियाँ आठ गोल बनाकर चारों ओरसे गोलाकार कमलके दलकी तरह घेरकर खड़ी हो जाती हैं। उसी समय घाटपर पानीमें अपना आधा पैर रखकर मधुमती वीणाके तारको झनझन करती हुई बजाती है तथा विमलामञ्जरी मृदङ्ग बजाती है और उसी सुरमें नृत्य प्रारम्भ होता है। केदारा रागमें वीणा बजती है तथा पानीके अंदर ही अपने पैरोंको उसी तालसे उठाती-गिराती हुई सखियाँ, राधा एवं श्यामसुन्दर नृत्य करते हैं। सखियाँ अपने दोनों हाथोंसे भी भाव बता रही हैं; पर श्रीकृष्ण एवं श्रीराधा, दोनों अपने दोनों हाथोंको पकड़े हुए ही भाव बता रहे हैं तथा सखियोंकी मण्डली और श्रीकृष्ण एवं श्रीराधा घूम रही हैं। बहुत देरतक यह नृत्य चलता रहता है। नृत्य करते-करते हठात् जितनी सखियाँ थीं, उतने श्रीकृष्ण बन गये। अब प्रत्येक सखी यह अनुभव कर रही है कि श्रीकृष्ण मेरे पास, मेरे बगलमें, मेरा हाथ पकड़कर नृत्य कर रहे हैं। इसके पश्चात् नृत्यकी गति धीरे-धीरे मन्द होकर, सब एक साथ ही, मधुमतीकी वीणा बंद होते ही खड़े हो जाते हैं। उस समय श्रीकृष्णका मुँह उत्तरकी ओर तथा प्रियाजीका मुँह दक्षिणकी ओर है।

अब तैरनेकी होड़ लगती है कि कौन, कितना अधिक तैर सकता है। पासमें ही हंसके आकारकी तीन-चार नौकाएँ खड़ी हैं। उनमें चार-चार सखियाँ सवार हो जाती हैं। नावमें एक बड़ी परातमें फूलोंसे निर्मित बहुत-सी गेंदें हैं तथा नावमें चमचम करती हुई चार इस तरफ और चार उस तरफ सोनेकी कड़ियाँ लगी हुई हैं। एक नाव सखी लाती है। श्रीकृष्ण नावके पास पहुँचते ही बायें हाथसे कड़ी पकड़कर दाहिने हाथसे अपनी कमरमें कंधेपरकी भीगी हुई चादर बाँध लेते हैं। उनके कड़ी पकड़ते ही सखी नाव खेने लग जाती है। नावका मुँह दक्षिणकी ओर

होते ही श्रीराधा श्रीकृष्णके बगलवाली कड़ी बायें हाथसे पकड़ लेती हैं तथा दाहिने हाथसे अपने अङ्गवस्त्रको उसी प्रकार कसती हुई चली जा रही हैं। छातीके नीचेका अङ्ग पानीके भीतर है। श्रीराधाके ..... उसी प्रकार ललिता एवं विशाखा एक-एक कड़ी पकड़ लेती हैं। इस प्रकार पहली नावके वहाँसे हटते ही दूसरी नाव आ जाती है तथा उसी प्रकार चार सखियोंके द्वारा चार कड़ियोंके पकड़ लिये जानेपर नाव दक्षिणकी ओर चलती है।

इसी प्रकार चार नावोंमें, जो हंसके आकारकी बिलकुल उजली-उजली हैं, श्रीकृष्णके सहित सोलह व्यक्ति कड़ी पकड़कर नावके साथ तैर रहे हैं। जब नाव कुण्डके बीचमें पहुँचती है, तब चक्कर काटकर श्रीकृष्णकी नाव तो कुण्डके पश्चिम एवं उत्तरके कोनेपर खड़ी होती है एवं बाकी नावें भी तीनों कोनोंपर खड़ी हो जाती हैं। चारोंमें आठ-आठ गजकी दूरी है। अब वह सखी, जो खे रही थी, परातमेंसे लेकर एक-एक गेंद सबको पकड़ा देती है। अब एक हाथसे कड़ी पकड़े हुए तथा दूसरे हाथमें गेंद लेकर सभी पैरोंसे तैर रही हैं।

गेंदका खेल आरम्भ होता है। इस प्रकार बहुत देरतक आपसमें फूलोंकी बनी हुई गेंदोंको फेंकते और पकड़ते हैं। गेंदका खेल समाप्त होनेपर श्रीकृष्ण जिस नावपर हैं, वह ठीक उत्तरकी ओर मुड़ करके चल पड़ती है। उसके पीछे-पीछे वे तीनों नावें भी चल पड़ती हैं। राधाकुण्डमें लाल, उजले, नीले एवं सफेद—चारों प्रकारके कमल खिले हुए हैं। उनके बहुत ही चौड़े-चौड़े पत्ते पानीपर फैले हुए हैं। नावें उन्हें बचा-बचाकर कभी पूर्व, कभी पश्चिम, कभी उत्तरकी ओर मुड़ती हुई चल रही हैं तथा उसी प्रकार कड़ी पकड़े हुए श्रीकृष्ण एवं सखियाँ पानीमें बढ़ती हुई चल रही हैं। कमलके पास पहुँचते ही फूले हुए कमल इस प्रकार हवाके झोंकेसे हिलने लगते हैं मानो प्रार्थना करते हैं कि हमें तोड़कर अपने हाथमें रख लो। श्रीकृष्ण एवं श्रीराधा किसी कमलको छू देते हैं, किसी एक-दोको तोड़कर नावमें रख लेते हैं, कभी उनके पास पहुँचकर अपने दाहिने हाथसे उनपर जलके छींटे देते हैं। कमलोंपर भौंरोंकी भीड़ गुन-गुनाती हुई उड़ रही है। श्रीप्रियाजी एक कमलके पास पहुँचकर दाहिने हाथसे उसपर छींटा देती हैं। इसी समय एक भौंरा उड़कर आता है तथा

श्रीप्रियाजीके कपोलोंपर बैठना चाहता है। श्रीप्रियाजी बार-बार उसे उड़ाना चाहती हैं। जब वह नहीं उड़ता, तब श्रीकृष्णकी कमरमें खोंसे हुए पीताम्बरका जो छोर पानीके ऊपर तैर रहा था, उसीको उठाकर उससे अपना मुँह ढक लेती हैं। श्रीकृष्ण हँसने लगते हैं। उसीसे मुँह ढके हुए श्रीप्रियाजी देखती हैं कि भौंरा चला गया या नहीं। पीताम्बरके भीतरसे श्रीराधारानीकी शोभा झलमल-झलमल करती हुई दीख पड़ रही है तथा श्रीकृष्ण उसे ही देख रहे हैं। श्रीप्रियाजीने हँसकर एक कमल तोड़ लिया तथा श्रीकृष्णके मुँहके सामने करके बोलीं—इधर मत देखो!

श्यामसुन्दर कहते हैं—अच्छी बात है।

श्रीकृष्ण अपना मुँह उत्तरकी तरफ कर लेते हैं। उस समय नाव उत्तरकी ओर मन्द गतिसे बह रही थी। श्रीकृष्णके मुख उधर करते ही श्रीप्रियाजी व्याकुल हो जाती हैं तथा दाहिने हाथसे उनका कंधा पकड़कर हिलाती हुई कहती हैं—श्यामसुन्दर! उधर देखो; वह हंस किस प्रकार पंख फुलाये हुए बहा जा रहा है!

श्रीकृष्ण श्रीप्रियाजीकी चतुराई समझ जाते हैं तथा हँसते हुए उधर ही ताकने लग जाते हैं। अब श्रीकृष्णका मुँह श्रीप्रियाको ठीकसे दीखने लग जाता है। नाव घाटसे करीब दस हाथकी दूरीपर आकर रुक जाती है। छातीभर पानीमें श्रीकृष्ण एवं श्रीप्रियाजी तथा और सखियाँ उतर-उतरकर खड़ी हो जाती हैं। अब स्नान प्रारम्भ होता है। श्रीकृष्णका हाथ पकड़कर श्रीप्रियाजी कहती हैं—पहले मैं तुम्हें लगाऊँगी।

श्रीकृष्ण कहते हैं—बहुत ठीक।

श्रीप्रियाजी श्रीकृष्णके हाथको पकड़े हुए सिरको पानीमें डुबा देती हैं। श्रीप्रियाजीके अत्यन्त सुन्दर केश पानीके ऊपर तैरने लगते हैं। कुछ क्षणतक पानीमें सिर रखकर हँसती हुई श्रीप्रियाजी इसे बाहर निकाल लेती हैं। भीगे हुए केश आँखोंपर आ जाते हैं। श्रीकृष्ण अत्यन्त प्यारसे केशोंको ठीक करके मुखपरसे किनारे हटा देते हैं। अब श्रीकृष्ण डुबकी लगाते हैं। श्रीकृष्णकी अलकावली पानीपर तैरने लगती है। उसी प्रकार श्रीकृष्ण भी हँसते हुए सिर बाहर निकाल लेते हैं तथा निकालकर इस

प्रकार झड़का देते हैं, जिससे मोतीकी तरह पानीकी बूँदें चारों ओर फैल जाती हैं। इस समय विचित्रता यह है कि सभी सखियोंको ऐसा अनुभव हो रहा है कि श्रीकृष्ण हमारे हाथ पकड़े नहा रहे हैं तथा हमारे भीगे हुए केशोंको अपने प्यारभरे हाथोंसे ठीक कर दे रहे हैं।

इस प्रकार बारी-बारीसे डुबकी लगाते हुए जब कुछ देर हो जाती है, तब घाटपर खड़ी हुई रूपमञ्जरी श्रीकृष्णको कुछ इशारा करती है। श्रीकृष्ण 'बहुत ठीक'—कहकर श्रीप्रियाजीके बायें हाथको पकड़े हुए घाटपर आ जाते हैं तथा पश्चिमकी ओर मुँह किये बैठ जाते हैं। श्रीकृष्णके पैर पानीमें हैं तथा कमरसे ऊपरका हिस्सा घाटकी सूखी हुई सीढ़ीपर। सखियाँ सुन्दर-सुन्दर कटोरोंमें तरह-तरहके उबटनका सामान लाती हैं तथा कोई श्रीकृष्णके हाथोंमें, कोई पैरोंमें, कोई मुँहमें, कोई पीठमें उबटन लगाती हैं। श्रीराधारानी अत्यन्त चमचम करते हुए एक छोटे-से तौलियेको ले लेती हैं तथा श्रीकृष्णके सिरको उसीसे पोंछती हैं। पासमें ही खड़ी हुई गुणमञ्जरीके हाथमें सोनेकी छोटी कटोरी है, जिसमें अत्यन्त सुगन्धित तेल है। रानी अपनी हथेलीके बीचमें गड्ढा-सा बनाकर उस गड्ढेमें कटोरीसे तेल ढाल लेती हैं तथा मन्द-मन्द मुस्कुराती हुई उसे श्यामसुन्दरके सिरपर धीरेसे डालकर फिर दोनों हाथोंसे उसे दबाने लगती हैं। फिर घुँघराली लटोंको लेकर उनमें तेल मलने लगती हैं। श्रीकृष्णकी छवि घाटपर एवं पानीमें मणियोंमें प्रतिबिम्बित हो रही है। श्रीराधाकी दृष्टि नीचे घाटमें प्रतिबिम्बित परछाईंपर पड़ती है। वे देखती हैं कि श्रीकृष्णकी छातीपर हमारा पैर है। इसे देखकर वे एक बार तो चौंक-सी जाती हैं। फिर हँसने लगती हैं। श्रीकृष्ण भी मुस्कुराने लगते हैं। उबटन समाप्त होते ही श्रीकृष्ण पानीमें छपाकसे कूद पड़ते हैं।

अब श्रीप्रियाजीके अङ्गोंमें सखियाँ उबटन लगाती हैं। श्रीकृष्ण पानीमें तैरते हैं तथा तिरछी चितवनसे श्रीप्रियाजीके मधुर मुखकी शोभा निहारते जाते हैं। श्रीप्रियाजीके अङ्गोंमें उबटन लेप लेनेके बाद श्रीप्रियाजी स्वयं उठकर सखियोंके सिरमें तेल डालने लगती हैं। इसी समय श्रीकृष्ण दौड़कर आते हैं तथा घाटपर खड़े हो जाते हैं। वे श्रीराधारानीके हाथसे सुगन्धित तेलकी कटोरी लेकर उसे ललिताके सिरपर उँडेल देते हैं। तेल ज्यादा था। वह ललिताके लिलारसे होकर बहने लग जाता है। ललिता

श्रीकृष्णका हाथ पकड़ लेती हैं। श्रीकृष्ण कहते हैं—देखो! तुमने सिर हिला दिया, इसीसे कटोरी हमारे हाथसे हिल गयी। तुमने तेल गिराया है। इसमें अपराध हमारा नहीं है।

फिर श्रीकृष्ण अपना दाहिना हाथ छुड़ा लेते हैं। इसके बाद वे घाटपर गिरे हुए तेलको हाथसे पोंछकर अपने मुँहपर थोड़ा लगाते हैं और कहते हैं—ज्यादा है, क्या करूँ? अच्छा, लो, थोड़ा तुम ले लो।

श्रीकृष्ण इतना कहकर हाथमें लगा हुआ तेल श्रीराधाके सिरपर पोंछ देते हैं। श्रीराधा कहती हैं—बस, बस, चालाकी रहने दो।

श्रीराधा श्रीकृष्णका दाहिना हाथ पकड़ लेती हैं, पर श्रीकृष्ण पीछेकी ओर पानीमें राधा एवं ललिताका हाथ पकड़े हुए ही कूद पड़ते हैं। कुछ देरतक पानीमें खड़े रहकर एक-दूसरेपर हाथोंसे जल उलीचते हैं। फिर घाटपर आकर बैठ जाते हैं।

गेंदके खेलमें सोलह घड़ा जल डालनेका दाँव श्रीकृष्ण हार चुके थे तथा बारह घड़ेसे श्रीप्रियाजी हार चुकी थीं। अतः दोनोंको पास-पास बिठाकर सखियाँ उनपर कलसेसे जल डालने लगीं। सोलह घड़ोंसे दो घड़े अधिक डाल देनेके कारण श्रीकृष्ण विशाखासे लड़ पड़े—तुमने अठारह क्यों डाले? दाँव तो सोलहका ही था। अब दोके बदलेमें मैं आठ घड़े तुमपर डालूँगा।

विशाखाने कहा—मैंने तो एक डाला है, एक ललिताने डाला है। इसलिये चार घड़े उसपर एवं चार घड़े मुझपर। मैं अकेले क्यों सहूँगी?

ललिताने कहा—मुझसे तो राधाने कह दिया कि अभी एक और बाकी है। यह गिन रही थी। मैंने तो इसकी बातमें आकर तुमपर एक घड़ा ज्यादा डाल दिया। इसलिये तीन घड़े इसपर डालो और एक मुझपर।

विशाखाने कहा—बस, बस, ठीक है, मैंने भी जो तुमपर एक घड़ा अधिक डाला है, वह भी इसी राधाके इशारेसे ही डाला है। इसीने कहा कि गर्मी है, क्या हर्ज है, एक और डाल दे। इसलिये मेरे ऊपरके तीन घड़े भी इसीपर डालो।

श्रीप्रियाजी मुस्कुराती हुई बैठ गयीं तथा श्रीकृष्ण कुण्डसे कलसेको भर-भरकर डालने लगे। खेलके नियमके अनुसार श्रीप्रियाजी हाथोंकी अञ्जलि बाँधें बैठी थीं। इस बार ललिता एवं विशाखा भी बैठीं। श्रीकृष्णने जब पहला घड़ा सिरपर डाला तो इस ढंगसे डाला कि श्रीप्रियाजीका अञ्चल खिसककर पीठपर आ गया। पहले तो ललिता एवं विशाखा जल डाल रही थीं, जिससे अञ्चल ठीक प्रकारसे यथास्थान ही रहा। वे धीरे-धीरे डाल रही थीं। पर इस बार श्रीकृष्णने तेजीसे डाला। श्रीप्रियाजीने अपना हाथ उठा लिया तथा अञ्चल सँभालने लगीं।

श्रीकृष्णने कहा—देखो! इसने तो नियम तोड़ दिये हैं।

श्रीराधाने कहा—तुम ठीकसे जल नहीं डालते। तुम स्वयं बेईमानी करते हो तो मैं क्यों छोड़ दूँ?

आखिर बहुत देरतक इस प्रकार तरह-तरहके प्रेम-विनोदके पश्चात् घाटपर श्रीराधा एवं श्रीकृष्ण खड़े हो जाते हैं। सखियाँ सूखे अंगोछेसे उनका शरीर पोंछकर श्रीकृष्णको पीताम्बर एवं श्रीराधारानीको हरी साड़ी पहनाती हैं। कपड़े पहनकर वे लोग एक-दूसरेको देखते हैं। इसी बीचमें कुछ सखियाँ भी जल्दी-जल्दी कपड़े पहन लेती हैं, कुछ पहन रही हैं, कुछ गीले कपड़ोंको जल्दी-जल्दी धो रही हैं। इस प्रकार जल्दीसे काम समाप्तकर सखियोंकी मण्डलीके साथ श्रीराधा-कृष्ण उत्तरकी तरफ मुँह करके ललिताके कुञ्जकी ओर बढ़ते हैं।

॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

वेणीगूँथन लीला

राग केदारा

बेनी गूँथि कहा कोऊ जानै, मेरी सी तेरी सौं।
बिच बिच फूल सेत पीत राते को करि सकिहैं एरी सौं॥
बैठे रसिक सँवारन बारन कोमल कर ककहीं सौं।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा नख सिख लौं बनाई दै काजर नखही सौं॥

निकुञ्जमें पूर्वकी ओर मुख किये श्रीश्यामसुन्दर पीले रंगकी मखमली गद्दीसे जड़े हुए पलंगपर बैठे हैं। श्रीश्यामसुन्दरके पैर नीचे लटक रहे हैं। उनके सामने श्रीप्रिया पश्चिमकी ओर मुख किये हुए खड़ी हैं। श्रीप्रियाका बायाँ हाथ श्यामसुन्दरके दाहिने कंधेपर है और उनके दाहिने हाथमें पीले रंगकी अत्यन्त चमकती हुई किसी तैजस धातुकी कंघी है। श्यामसुन्दर अपने बायें हाथसे उनके दाहिने हाथको पकड़े हुए हैं। श्रीप्रिया मन्द-मन्द मुस्कुराती हुई उस हाथको छुड़ानेकी चेष्टा कर रही हैं। श्यामसुन्दर तिरछी चितवनसे ताकते हुए एवं मन्द-मन्द मुस्कुराते हुए अपना सिर हिलाते हुए यह प्रकट कर रहे हैं—ना, नहीं छोड़ता।

सखियाँ खड़ी-खड़ी लीला देख रही हैं। श्रीप्रियाके वदनकी शोभा निहारते हुए श्यामसुन्दर कहते हैं—तो न सही। जैसे प्रतिदिन होता था, वैसे ही होने दे।

बात यह है कि प्रतिदिन मध्याह्न-स्नानके बाद श्रीप्रिया-प्रियतमको पास-पास बिठाकर सखियाँ दोनोंका शृङ्गार करती थीं, पर आज श्रीप्रियाने रतिमञ्जरीके हाथसे कंघी ले ली तथा प्यारे श्यामसुन्दरका केश सँवारनेके लिये उठ खड़ी हुईं। श्यामसुन्दरने कहा—अच्छी बात है; पर फिर बदलेमें मैं तेरे केश सँवारूँ। यदि यह शर्त मंजूर है तो भले ही केश सँवारने दूँगा, नहीं तो नहीं।

श्रीप्रियाने मुस्कुराते हुए सिर हिलाकर संकेत कर दिया--ना, यह स्वीकार नहीं है।

अस्वीकृतिका संकेत देनेके बाद भी श्रीप्रिया कंघी लेकर प्यारे श्यामसुन्दरके केश सँवारनेको बढ़ीं। श्यामसुन्दरने उनका हाथ पकड़ लिया। श्रीप्रियाने हाथ छुड़ाना चाहा, किंतु श्यामसुन्दरने नहीं छोड़ा। श्यामसुन्दरने कहा—तू शर्त मंजूर करले तो हाथ छोड़ देता हूँ।

श्रीप्रियाने मुस्कुराकर फिर कह दिया—नहीं।

इसीपर श्यामसुन्दरने कहा था कि तो न सही, जैसे प्रतिदिन होता था, वैसे ही होने दे। श्यामसुन्दरकी यह बात सुनकर श्रीप्रिया कुछ असमञ्जसमें पड़ जाती हैं। हृदयका प्यार तरंगित होकर जिस-किस प्रकारसे भी श्यामसुन्दरके स्पर्शके लिये प्रियाको व्याकुल कर रहा है, पर साथ ही लज्जा अपनी सखियोंके बीचमें प्रियतमके द्वारा अपने केश सँवारे जाना स्वीकार नहीं करने दे रही थी।

श्रीप्रिया मुस्कुराती हुई कुछ क्षण सोचती रहती हैं। फिर कहती हैं—देखो! स्त्रियोंकी वेणी स्त्रियाँ ही ठीक गूँथ सकती हैं।

श्रीप्रियाकी बात सुनकर श्यामसुन्दर बड़ी गम्भीरतासे बोल उठते हैं—तू एक बार देख ले, फिर स्वयं समझ जायेगी। मैं सच कहता हूँ कि मेरी तरह वेणी गूँथना किसीको आ ही नहीं सकता। प्रिये! तेरी शपथ! मैं इतनी सुन्दर वेणी गूँथ सकता हूँ कि स्वयं ललिता भी देखकर ललचा जायेगी। देख, फूलोंको यथास्थान पिरो देना बड़ी भारी कला है। लाल-पीले-उजले फूलोंको मैं ऐसे सुन्दर ढंगसे पिरोना जानता हूँ कि वैसा तुम्हारी सखियोंमेंसे कोई भी नहीं कर सकता।

श्यामसुन्दरकी इस बातको सुनकर श्रीप्रिया और भी फँस जाती हैं। कुछ देरतक मन्द-मन्द मुस्कुराती हुई सोचती रहती हैं। फिर जल्दीसे हाथ छुड़ाकर और कुछ अलग खड़ी होकर हँसने लग जाती हैं। इस समय श्रीप्रियाका मुख ठीक उत्तरकी ओर है। श्यामसुन्दर हँसने लग जाते हैं। श्रीप्रिया अपनी दृष्टि प्यारे श्यामसुन्दरके मुखारविन्दपर जमाये रखकर पीछेकी ओर हटने लगती हैं तथा निकुञ्जके दक्षिणकी ओरकी

खिड़कीके पास जाकर खड़ी हो जाती हैं। श्रीप्रियाके अङ्गकी हरी साड़ीपर मध्याह्नके सूर्यकी रश्मियाँ पड़ने लग जाती हैं तथा उनके वदनकी शोभा झलमल करती हुई दीख रही है।

निकुञ्जकी खिड़कीपर गिलोय-लताकी तरहकी एक लता इस ढंगसे फैली हुई है कि जिससे खिड़कीपर स्वाभाविक जाल बन गया है। श्रीप्रिया अपने बायें हाथको ऊपर उठाकर बेलोंके उसी जालको पकड़ लेती हैं तथा दाहिने हाथसे दीवालकी एक बेलको पकड़ लेती हैं और तिरछी चितवनसे श्यामसुन्दरकी ओर देखने लग जाती हैं।

श्रीप्रिया जाते समय कंघी श्यामसुन्दरकी जाँघके पास पलंगपर ही छोड़ गयी थीं। श्यामसुन्दर उस कंघीको उठा लेते हैं तथा उससे अपने दाहिने हाथमें लेकर अतिशय मधुर कण्ठसे कहते हैं—प्रिये! एक बार परीक्षाके लिये ही देख ले।

श्रीप्रियाके हृदयका प्रेम-सागर उफनने लगता है। उसकी तरंग रोम-रोमसे प्रस्वेदके रूपमें बाहर आने लगती है। श्रीप्रिया सोचती हैं—मेरे प्रियतमको मेरे केश सँवारनेसे सुख है तो फिर मैं संकोच क्यों कर रही हूँ? आह! मेरे इस अङ्गके अणु-अणुपर तो प्यारे श्यामसुन्दरका ही अधिकार है।

श्रीप्रियाके हृदयके भाव तो आँखोंमें आ जाते हैं। पुतलियाँ प्रेममें अधीर होकर कोयोंमें ऊपर-नीचे नाचने लगती हैं। श्रीप्रिया अपना सिर किंचित् नीचा करके वहीं पूर्वकी ओर मुँह करके बैठ जाती हैं। प्यारे श्यामसुन्दर समझ जाते हैं कि प्रियाकी मौन सम्मति मिल गयी है। अतिशय उमङ्गके साथ वे कंघी लिये हुए उधर ही बढ़ने लगते हैं। श्यामसुन्दरकी घुँघराली अलकें कंधोंपर जोरसे झूलती जा रही हैं मानो वे भी आनन्दमें थिरक-थिरककर नाच रही हों।

श्यामसुन्दर श्रीप्रियाके पास आकर खड़े हो जाते हैं। तीन मञ्जरियाँ छोटे-छोटे फूलोंसे भरी हुई तीन डलिया लेकर श्यामसुन्दरके पास खड़ी हो जाती हैं। विशाखा राधारानीके सामने खड़ी हैं एवं ललिता रानीकी पीठके पास। ललिता बड़े सहारेसे रानीके सिरसे अञ्चल हटाकर

उनकी सुन्दरतम केश-राशिको साड़ीके अन्तरालसे निकालकर पीठपर धीरेसे बिखेर देती हैं। श्रीप्रियाके लम्बे-लम्बे केश कमरके पास झूलते हुए निकुञ्जके फर्शको छू रहे हैं। केशोंको बिखेरकर ललिता मुस्कुराती हुई तिरछी चितवनसे श्यामसुन्दरकी ओर देखकर कहती हैं—लो, सँवारो! मैं भी देख लूँगी कि नटखट-शिरोमणि श्यामसुन्दर किस तरहकी कला जानते हैं।

प्यारे श्यामसुन्दरके अङ्गसे अनुराग एवं उल्लास झर रहा है। वे श्रीप्रियाकी पीठके पास पूर्वकी ओर मुख किये हुए बैठ जाते हैं। दाहिने हाथमें कंघी लेकर और बायें हाथपर केशोंको टिकाकर सँवारना प्रारम्भ करते हैं। सखियोंमें-मञ्जरियोंमें आनन्दका प्रवाह बहने लग जाता है।

कंघीसे केशोंको सँवारकर श्यामसुन्दर गूँथना आरम्भ करते हैं। वे तीन डलियोंमेंसे लाल, पीले एवं उजले रंगके फूलोंको बारी-बारीसे निकालकर पिरोते जा रहे हैं। ऐसे सुन्दर ढंगसे पिरो रहे हैं कि लाल, उजले एवं पीले फूलोंसे 'कृष्ण', 'कृष्ण', 'कृष्ण' लिखा जा रहा है। श्रीप्रिया पहलेसे ही प्रेममें डूबती जा रही थीं, अब जब विशाखाके हाथके दर्पणके प्रतिबिम्बपर दृष्टि गयी तथा गूँथे हुए केशोंमें एक स्थानपर 'कृष्ण' लिखा हुआ देख लिया, तब तो वे बिलकुल मूर्च्छित-सी होने लग गयीं। यद्यपि श्यामसुन्दर बड़ी सावधानीसे एवं चालाकीसे केशोंको श्रीप्रियाकी पीठके ठीक बीचमें रखकर गूँथ रहे थे कि जिससे गूँथना समाप्त होनेके पहले मेरी प्रिया देख नहीं सकें, पर श्रीप्रियाने अपना सिर इधर-उधर हिलाकर जरा-सा देख ही लिया। देखना था कि प्रेम उमड़ा और प्रिया अर्द्ध-मूर्च्छित होकर श्यामसुन्दरकी ओर लुढ़क पड़ीं। श्यामसुन्दर भी प्रेममें अधीर होने जा रहे थे; पर प्रियाकी इस दशाको देखकर उन्होंने अपनेको सँभाला। कुछ क्षणगूँथना स्थगित रहता है फिर प्रिया पहलेकीसी अवस्थामें आ जाती हैं तथा लज्जित होकर पहलेकी तरह शान्त बैठ जाती हैं। प्यारे श्यामसुन्दर फूल गूँथ करके वेणी-रचनाका कार्य समाप्त करते हैं। समाप्त करके वे एक बार प्यारभरी दृष्टिसे सुन्दर वेणीकी शोभा निहारते हैं। फिर खड़े होकर प्रियाके सामने आ जाते हैं। श्रीप्रिया जल्दीसे अपना सिर अञ्चलसे ढककर प्यारे श्यामसुन्दरकी ओर देखकर हँसने लग जाती हैं।

इसी समय रूपमञ्जरी आनन्दमें डूबकर कहती है—तो प्यारे श्यामसुन्दर ! बाकीका शृङ्गार भी तुम्हीं पूर्ण करो।

रूपमञ्जरीकी बात सुनकर श्रीप्रियाका हृदय तो पुनः आनन्दसे नाच उठता है; पर आँखोंमें प्यारभरा क्रोध लाकर कहती हैं—री ! बिना बूझे तू तो अच्छी पञ्च बन बैठी !

रूपमञ्जरी मुँह फेरकर हँसने लग जाती है। श्यामसुन्दर कहते हैं—हाँ, हाँ, अभी लो।

जब श्रीश्यामसुन्दर शेष शृङ्गार करने चलते हैं, तभी ललिता कहती है—ना, तुम बहुत देर लगाओगे। जल्दीसे एक-दो और भले कर लो, बाकी हम सब करेंगी।

श्यामसुन्दर मुस्कुराकर कहते हैं—अच्छी बात है।

बड़ी फुर्तीसे श्यामसुन्दर कुछ दूरपर पड़ी हुई डलियोंमेंसे तरह-तरहके पुष्पोंकी बनी हुई तीन-चार लड़ियाँ उठा लेते हैं तथा आपसमें एक-दूसरेको उरझाकर पायजेबके आकारके दो आभूषण निर्माण करते हैं। उन आभूषणोंको जहाँ से देखा जाये, वहींसे उनमें 'कृष्ण' लिखा हुआ दीख रहा है। श्यामसुन्दर उसे बड़ी फुर्तीसे श्रीप्रियाकी एड़ीके पास बाँधने लग जाते हैं। श्रीप्रिया एक बार तो चकित-सी होकर पैर समेटने लगती हैं; पर प्रियतमकी ओर देखकर और यह सोचकर कि मेरे प्रियतमको सुख मिल रहा है, इस भावनासे उस आभूषणको बँधवा लेती हैं। सखियाँ श्यामसुन्दरकी इस कारीगरीको देखकर आश्चर्यमें डूब जाती हैं। आभूषण बाँधकर श्यामसुन्दर एक मञ्जरीके हाथसे काजल-पात्र ले लेते हैं। काजल-पात्र ऐसा बना हुआ है कि उसे देखनेवालेको भ्रम हो जाता है मानो सचमुच ही यह एक नवजात मयूर-शावक हो। श्यामसुन्दर अपने दाहिने हाथकी अनामिका अँगुलीमें किंचित् काजल लगा लेते हैं तथा श्रीप्रियाके सामने बैठकर बायें हाथपर श्रीप्रियाके दाहिने कपोलको टेककर बारी-बारीसे दोनों आँखोंमें काजल लगाते हैं। श्रीप्रियाकी आँखें काजल लगाते समय बंद-सी हो जाती हैं। श्यामसुन्दर प्रतीक्षा करते हैं। खुलनेपर धीरे-धीरे लगा देते हैं। श्रीप्रियाके सारे मुखमण्डलपर लालिमा दौड़ने लगती है। पुतलियाँ बड़ी तेजीसे ऊपर-नीचे, दाहिने-बायें घूमने लग जाती हैं।

श्यामसुन्दर उठकर खड़े हो जाते हैं। श्रीप्रिया भी हँसती हुई, अञ्चल सँभालती हुई उठकर श्यामसुन्दरका हाथ पकड़ लेती हैं तथा खींचती हुई-सी ले जाकर पलंगपर बैठा देती हैं। मञ्जरीके हाथसे श्रीप्रिया कंघी ले लेती हैं तथा अतिशय प्यारके साथ प्यारे श्यामसुन्दरके केशोंको सँवारने लग जाती हैं। उन सुन्दरतम घुँघरारी लटोंमें कंघी देकर बड़े सुन्दर ढंगसे पीछेकी ओर उन्हें ले जाती हैं तथा बायें हाथसे उन्हें धीरे-धीरे दबा-दबाकर यथास्थान स्थिर करती जा रही हैं। केशोंको सँवारकर पीछेकी ओर दाहिने हाथसे कुछ इशारा करती हैं। विलासमञ्जरी अत्यन्त सुन्दर पुष्पोंका बना हुआ मुकुट, जिसके बीचमें एक छोटा-सा मयूर-पिच्छ लगा है, रानीके हाथमें दे देती है। प्रेममें दीवानी-सी बनी हुई रानी मुकुटकी ओर देखती हैं। मुकुटके पुष्पोंके प्रत्येक दलमें उन्हें प्यारे श्यामसुन्दरकी छवि दीखती है। वे कुछ चकित-सी होकर जोरसे बोल उठती हैं— अयँ ! यह तो अजब बात है।

रानीकी बात सुनकर श्यामसुन्दर एवं ललिता आदि सखियाँ जोरसे हँसने लगती हैं। उन्हें हँसती देखकर रानीका भाव कुछ शिथिल पड़ जाता है और वे कुछ शर्मा-सी जाती हैं। ललिता अतिशय प्यारसे कहती हैं— मुकुट बाँध दे। हाथमें लिये रहकर न जाने, फिर और क्या-क्या देखने लगेगी।

विलासमञ्जरीने आज इस चतुराईसे मुकुट बनाया था कि उसपर सर्वत्र 'राधा-राधा' लिखा हुआ दीख रहा था, पर रानीकी आँखें इस बातको लक्ष्य नहीं कर सकीं। रानीने धीरे-धीरे मुकुट बाँध दिया। फिर रानी एक कुन्द-पुष्पको उठाती हैं। केसर-कस्तूरी-चन्दन आदि घिस-घिसकर छोटी-छोटी कटोरियोंमें रखे हुए हैं; उन कटोरियोंमें कुन्द-पुष्पकी डंडीको डुबा-डुबाकर रानी प्यारे श्यामसुन्दरके कपोलोंपर अत्यन्त सुन्दर तरह-तरहके चित्र बनाती हैं। इधर सखियाँ तरह-तरहके पुष्पोंके आभूषण बनाकर श्यामसुन्दरके अङ्गोंको सजाती जा रही हैं। श्यामसुन्दर श्रीप्रियाकी ओर एकटक देख रहे हैं। चित्र बनाकर श्रीप्रिया आनन्दमें भरकर जोरसे हँस पड़ती हैं। अब ललिता श्रीप्रियाको श्यामसुन्दरके बगलमें बैठा देती हैं तथा ठीक उसी तरहके चित्र श्रीप्रियाके कपोलोंपर बनाती हैं एवं सखियाँ श्रीप्रियाको पुष्पोंके आभूषणोंसे सजाती हैं। श्रीप्रिया-प्रियतमको

सजाकर सभी सखियाँ आनन्द एवं प्रेममें डूबने लग जाती हैं।

अब सभी सखियाँ एवं मञ्जरियाँ एक-एक कंघी लेकर बड़ी शीघ्रतासे अपने-अपने केश सँवारने लगती हैं। प्रत्येक सखी एवं मञ्जरी यह अनुभव कर रही है कि श्यामसुन्दर मेरे पास आये हैं तथा यह कह रहे हैं—अच्छी बात है, केश तू अपने हाथसे ही सँवार ले, पर आँखोंमें काजल मैं लगाऊँगा।

सखी अस्वीकार करती है, पर श्यामसुन्दर बहुत आग्रहसे कंघेको पकड़कर प्रार्थना करते हैं। अखिर सखी प्रेममें विवश होकर अञ्जन लगानेकी सम्मति दे देती है। श्यामसुन्दर अतिशय प्यारसे अञ्जन लगाते हैं। अञ्जन लगाकर श्यामसुन्दर प्रार्थना करते हैं—अच्छा, वेणी तो अपने हाथसे तुमने बना ही ली, पर मुझे इसमें एक फूल खोंस लेने दो।

श्यामसुन्दरकी यह प्रार्थना भी सखीको हरा देती है। श्यामसुन्दर अतिशय प्यारसे सबकी वेणीमें एक-दो फूल खोंस देते हैं। यह लीला श्यामसुन्दरने प्रत्येक सखी एवं मञ्जरीके साथ की।

इस प्रकार सज-धजकर सखी-मण्डलीके सहित श्रीप्रिया-प्रियतम तैयार हो जाते हैं। श्रीश्यामसुन्दर अब श्रीप्रिया, सखियों एवं मञ्जरियोंकी ओर देख-देखकर हँस रहे हैं एवं श्रीप्रिया, सखियाँ तथा मञ्जरियाँ श्रीश्यामसुन्दरके मुखारविन्दकी शोभा देखकर विह्वल हो रही हैं। इसी समय निकुञ्जसे सम्बद्ध बगलवाले रत्न-महलके दक्षिणी दरवाजेसे वृन्दादेवी निकुञ्जमें प्रवेश करती हैं। यहाँकी शोभा देखकर एक बार तो बिल्कुल पत्थरकी मूर्ति-सी स्थिर हो जाती हैं, फिर कुछ क्षण बाद आनन्दमें भरकर ललितासे कहती हैं—बहिन! सब तैयार है। मैं तुम्हारी बाट देख रही थी। देर होते देखकर मैं किंवाड़ खोलकर आ गयी।

ललिता वृन्दादेवीकी बात सुनकर उनका हाथ पकड़ लेती हैं तथा निकुञ्जके उत्तर तरफके दरवाजेकी ओर चलने लगती हैं। सखी-मण्डलीके सहित श्रीप्रिया-प्रियतम भी ललिताके पीछे-पीछे चलते हैं। निकुञ्जके दरवाजेसे लेकर रत्न-महलतक हरी-हरी बेलों एवं लताओंकी दहनियोंके

आपसमें गुँथ जानेसे एक सुन्दर पुल अपने-आप बन गया है। पुल तीन गज लम्बा एवं एक गज चौड़ा है। पुलके फर्शपर एक पीली रेशमी चादर बिछी है; उसीपर पैर रखते हुए सखियोंके सहित प्रिया-प्रियतम रत्नमहलमें पहुँच जाते हैं। रत्नमहलकी शोभा तो सर्वथा अवर्णनीय है। उसका आकार इस ढंगका है—

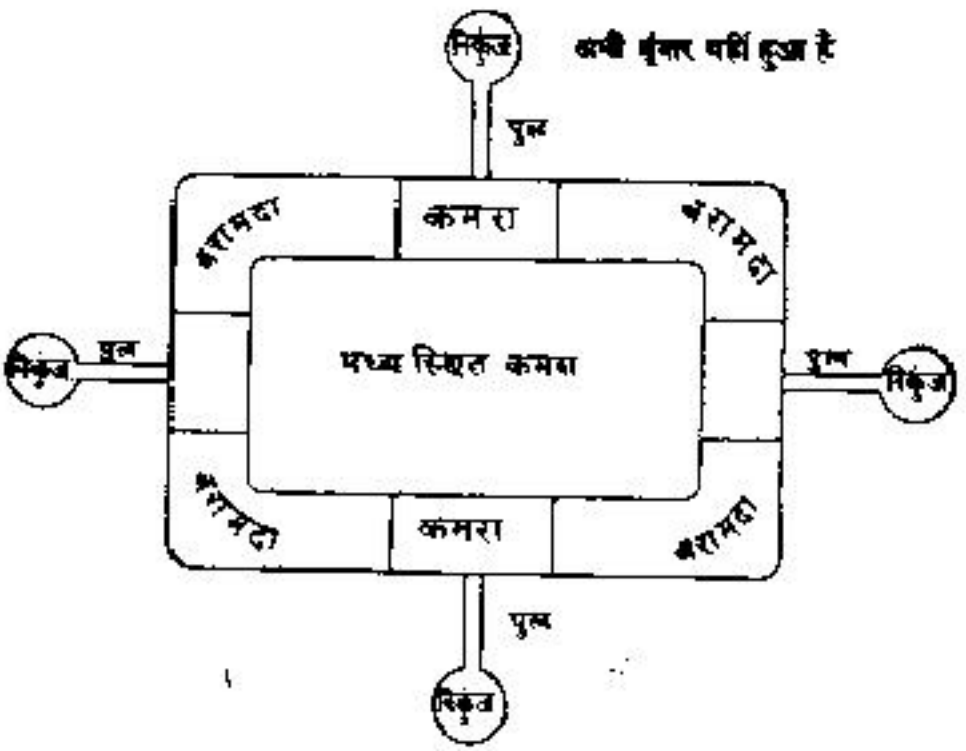

प्रिया-प्रियतम महलके पहले कमरेको पार करके मध्य स्थित आलीशान कमरेमें जा पहुँचते हैं। कमरा अनिर्वचनीय सुन्दर ढंगसे सजा है। कमरेके पूर्वी हिस्सेमें सोनेकी परात, सोनेकी तश्तरियाँ, जलसे भरी झारियाँ, गिलास, पत्तोंके बने हुए दोने एवं तराशे हुए फल सजा-सजाकर रखे हुए हैं। वृन्दादेवीकी बहुत-सी दासियाँ अभी भी तरह-तरहके फल तराशनेमें लगी हैं, कुछ सजा रही हैं। कमरेके बीचमें सुन्दर मखमली आसन नीचे बिछा हुआ है। आसनके आगे सोनेकी तीन चौकियाँ एक कतारमें रखी हुई हैं। वे चौकियाँ एक बित्ता ऊँची, डेढ़ हाथ चौड़ी तथा डेढ़ हाथ लम्बी हैं। कमरेकी दक्षिणी दिवालके पास मखमलका गद्दा बिछा हुआ है। उसीपर सखियोंके सहित श्रीप्रिया-प्रियतम आकर खड़े हो जाते हैं।

॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

फलभोजन लीला

श्रीश्यामसुन्दर आसनपर बैठे हुए फल भोजन कर रहे हैं। श्रीश्यामसुन्दरका मुख इस समय दक्षिणकी तरफ है एवं श्रीराधारानी ठीक उनके सामने उत्तरकी ओर मुख किये हुए बैठी हैं। श्रीप्रियाजीकी दक्षिणकी तरफ कुछ दूरपर ललिता खड़ी रहकर मञ्जरियोंके हाथसे फलोंसे भरी हुई तश्तरियाँ ले-लेकर श्रीप्रियाको पकड़ाती जा रही हैं। विशाखा श्रीप्रियाकी बायीं तरफ खड़ी हैं। उनके हाथमें फूलोंका अत्यन्त सुन्दर बना हुआ पंखा है। फलोंकी तश्तरियोंसे भरी हुई जो परात है, उसमें फलकी तश्तरीकी ओर देखकर, जो फल प्यारे प्रियतमको खिलानेकी इच्छा होती है, वही फल श्रीप्रिया मन्द-मन्द मुस्कुराती हुई श्यामसुन्दरके सामने रख देती हैं।

इस समय श्यामसुन्दरके हाथमें प्यालेके आकारका, पर प्यालेसे कुछ बड़ा अत्यन्त सुन्दर गिलास है, जिसमें किसी फलका पीले रंगका रस है। श्यामसुन्दर गिलासको पकड़े हुए होठोंसे कुछ दूरपर ही गिलासको रखकर श्रीप्रियाकी मुख-शोभा निहार रहे हैं तथा मन्द-मन्द मुस्कुरा रहे हैं। श्रीप्रिया कभी तो श्यामसुन्दरके मुखकी ओर देखती हैं और कभी सामनेकी तश्तरियोंकी ओर। श्रीप्रिया बायें हाथसे समय-समयपर ललिताकी पकड़ायी हुई तश्तरियोंको पकड़ लेती हैं तथा उसमेंसे फलका जो खण्ड बड़ा ही सरस प्रतीत होता है, उसे निकालकर परातकी किसी तश्तरीमें रख देती हैं।

श्रीप्रियाको देखते हुए कुछ देर लगा देनेपर प्रायः सभी सखियाँ एवं दासियाँ श्यामसुन्दरकी ओर ताकती हुई हँसने लग जाती हैं। श्यामसुन्दर भी हँस पड़ते हैं। श्रीप्रिया कुछ चकित-सी होकर पीछे देखने लग जाती हैं कि ये सब हँस क्यों रही हैं? प्रियाको हँसनेका कोई भी कारण समझमें नहीं आता है, अतः पुनः श्यामसुन्दरकी ओर देखने

लग जाती हैं। अभी भी श्यामसुन्दर उसी तरह गिलासको होठोंसे कुछ दूरपर ही रखे रहते हैं।

श्रीप्रिया रूपमञ्जरीको कुछ इशारा करती हैं। रूपमञ्जरी बायें हाथमें सुवर्णका कटोरा एवं दाहिने हाथमें जलसे भरी हुई छोटी झारी लेकर आ पहुँचती है। श्रीप्रियाके पास दाहिनी तरफ कटोरा रख देती है। श्रीप्रिया उसीमें हाथ धोती हैं। रूपमञ्जरी पानी देती जाती है। हाथ धोकर श्यामसुन्दरके हाथका गिलास पकड़ लेती हैं तथा उसे धीरे-धीरे प्रियतमके होठोंसे हटा देती हैं।

श्यामसुन्दर एक साथ जल्दी-जल्दी चार-पाँच घूँट फलका रस पीकर सिर ऊपर उठा लेते हैं। श्रीप्रिया अब बड़ी तेजीसे परातमेंसे संतरेका एक खण्ड उठा लेती हैं तथा बायें हाथमें उस प्यालेको थामे हुए दाहिने हाथसे वह खण्ड श्यामसुन्दरके मुँहमें रख देती हैं। श्यामसुन्दर उस खण्डको शान्तिसे मुँहमें रख लेते हैं। अब प्रिया चित्राको पुनः इशारा करती हैं। चित्रा कुछ दूरपर बैठी हुई फलोंको तश्तरियोंमें भर रही थीं। वह उठकर कटोरेमें एक विशेष-पेय लाती हैं और रानीके हाथमें पकड़ा देती हैं। यह विशेष-पेय कटहलका रस निकालकर एवं अन्यान्य मसाले-मिश्री मिलाकर बनाया गया है। रानी कहती हैं—लो, यह मेरी प्यारी चित्राकी बनायी हुई बिल्कुल नये नमूनेकी चीज है। इसे कम-से-कम आधा अवश्य पी जाना।

श्यामसुन्दर कटोरा पकड़ लेते हैं। चित्रा कुछ शर्मा जाती हैं, पर राधारानी बड़ी उत्कण्ठासे प्यारेके मुखारविन्दकी ओर देखने लग जाती हैं। मनमें यह लालसा है कि प्यारे श्यामसुन्दर समूचे कटोरेका रस पी जाते तो फिर तुरंत उस कटोरेको भर देती। इसलिये रानीका स्नेहभरा हृदय उफनने लगता है। श्यामसुन्दरने अभी उस पनस-रसको पीना शुरू भी नहीं किया है कि रानी एक और दूसरा कटोरा लानेकी आज्ञा दे देती हैं। आज्ञाकी देर थी कि विलासमञ्जरी एक और कटोरा तुरंत रानीके हाथमें पकड़ा देती है।

श्रीप्रियाके इस आन्तरिक प्रेमभावको लक्ष्य करके श्यामसुन्दर प्रेममें डूबने लग जाते हैं; पर उन्हें एक विनोद सूझ पड़ता है।

श्यामसुन्दर कहते हैं—हाँ, तब पहले तू पीना शुरू कर। तू जितना-जितना पीती जायेगी, मैं भी उतना-ही-उतना पीता जाऊँगा। अच्छा हुआ, मेरी इच्छा जानकर तुमने अपने आप कटोरा मँगवा लिया।

श्रीप्रिया अब तो विचारमें पड़ जाती हैं; पर तुरंत अपना आन्तरिक भाव सँभालकर कहती हैं—कटोरा तो इसलिये मँगवाया था कि कहीं मधुमङ्गल अचानक आ गया तो फिर वह तुमसे लड़ेगा कि वाह! अकेले-अकेले उड़ाते हो? उस समय मैं तुम्हें यह कहकर बचा दूँगी कि नहीं, देख! श्यामसुन्दरने एक कटोरा बहुत पहलेसे ही तुम्हारे लिये रख छोड़ा है।

श्यामसुन्दर कहते हैं—नहीं, मधुमङ्गल आज नहीं आयेगा। उसे मैंने दूसरे कामसे भेजा है। चित्राकी बनायी हुई चीजको मैं तुम्हारे बिना लूँ, यह कैसे हो सकता है?

रानीने बहुत टाल-मटोल की; पर श्यामसुन्दरने बड़ी चतुराईसे रानीकी प्रत्येक बातको हँसीमें उड़ा दिया। रानी सिर नीचा करके सोचने लगती हैं कि क्या करूँ? वे श्यामसुन्दरको आँखोंसे कुछ इशारा करती हैं, पर श्यामसुन्दर सिर हिलाकर 'ना' का भाव प्रकट करते हैं। फिर रानी विनयके स्वरमें कुछ कहती हैं—अच्छा, तुम पहले रस पी लो एवं अन्यान्य फल खा लो, फिर मैं रस पी लूँगी।

रानीकी बात सुनकर श्यामसुन्दर एक बार तो आँखें मूँदकर कुछ क्षणतक सोचते रहते हैं, फिर कहते हैं—अच्छा, यही सही, पर देखना भला, पलट मत जाना।

रानी जल्दीसे कहती हैं—ना, नहीं पलटूँगी।

अब श्यामसुन्दर उस कटोरेसे रस पीते हैं। आधा पीकर परातमें रख देते हैं। अब रानी परातकी प्रत्येक तश्तरीमें हाथ डालती हैं तथा एक-एक खण्ड प्यारे श्यामसुन्दरके मुखमें देती चली जाती हैं। श्यामसुन्दर अपनी प्रियाका प्रेमसे भरा हुआ वह प्रसाद पाते हैं। आम, जामुन, सेव, लीची, अनन्नास, कदली, अमरूद, बेर, मकोय, पोलू, अँगूर, सिंघाड़ा, शहतूत आदि क्रमशः प्रिया श्यामसुन्दरके मुखमें देती जाती हैं और

श्यामसुन्दर खाते जाते हैं। कुछ ऐसे विचित्र-विचित्र फल हैं, जिनसे अत्यन्त मधुर अनिर्वचनीय सुगन्धि निकल रही है। सारा कमरा उस सुगन्धिसे सुवासित हो रहा है। श्रीप्रिया एक-एक करके सब नमूनोंमेंसे थोड़ा-थोड़ा उठाती हैं और प्यारेके मुखमें देकर प्रेममें डूब जाती हैं। श्यामसुन्दर खाते हुए स्वयं भी प्रेममें इतने विवश हैं कि उन्हें यह ज्ञान नहीं कि मैं क्या खा रहा हूँ और कितना खा रहा हूँ? श्रीप्रिया भी प्यारेके मुखमण्डलपर दृष्टि टिकाये यन्त्रकी भाँति तश्तरीसे फलका खण्ड उठाती चली जाती हैं। अवश्य ही तनिक भी भूल अबतक नहीं हुई है, अर्थात् श्रीप्रियाने बराबर नयी-नयी तश्तरीमें ही हाथ डाला है।

पर इतनी देरतक प्यारेके मुखमण्डलपर दृष्टि टिकाये रहनेके कारण महाभावस्वरूपा श्रीप्रिया अब यह ज्ञान खो बैठती हैं कि मैं राधा हूँ। श्रीप्रियाका मन प्यारे श्यामसुन्दरमें इतना तल्लीन हो जाता है कि वे स्वयं अपनेको श्यामसुन्दर मान बैठती हैं। श्रीप्रिया सोचती हैं कि मैं श्यामसुन्दर हूँ। इसलिये ही इस बार हाथ श्यामसुन्दरके होठोंके पास नहीं ले जाकर फलका टुकड़ा अपने होठोंके पास ले जाती हैं। श्रीप्रियाकी यह प्रेमावस्था देखकर सखियाँ एक बार तो प्रेमसे मूर्च्छित-सी होने लगती हैं; पर बड़ी मुश्किलसे अपनेको सँभाल लेती हैं। इधर प्यारे श्यामसुन्दर श्रीप्रियाके मुखपर लगातार दृष्टि जमाये रखनेके कारण यह ज्ञान खो बैठते हैं कि मैं श्यामसुन्दर हूँ; वे समझने लग जाते हैं कि मैं राधा हूँ, सामने श्यामसुन्दर हैं। हाथमें फलका टुकड़ा लिये हुए मेरे हाथकी प्रतीक्षा कर रहे हैं कि प्रिया मुझे खिला दे। इसी भावसे उधर हाथ बढ़ाते हैं। बड़ी सुन्दर झाँकी है। भावावेशमें श्रीप्रिया फलका खण्ड हाथमें लेकर अपने होठोंके पास रखे हुए पत्थरकी मूर्तिकी तरह श्यामसुन्दरकी ओर ताक रही हैं और श्यामसुन्दर श्रीप्रियाकी दाहिनी कलाईके पास अपने दाहिने हाथकी अँगुली रखे हुए पत्थरकी मूर्ति बने बैठे हैं।

श्रीप्रिया-प्रियतमकी इस दशाकी ओर लक्ष्य करके अब सखियाँ कुछ चिन्तित-सी भी हो जाती हैं। ललिता एवं विशाखा आपसमें विचार करती हैं कि भावावेशको शिथिल कर देना अच्छा रहेगा, नहीं तो पता नहीं, कोई अनिष्ट घटना न हो जाये। इस विचारसे ही विशाखा मधुमती मञ्जरीको कुछ इशारा करती हैं। मधुमती मञ्जरी बड़ी फुर्तीसे वीणा उठा

लेती है तथा मधुर कण्ठसे गाना आरम्भ करती है—

रीझि रीझि रहसि रहसि हँसि हँसि उठै
साँसै भरि आँसू भरि कहत दई दई।
चौंकि चौंकि चकि चकि औचकि उचकि 'देव'
छकि छकि बकि बकि पूरन बई बई॥
डोलन को रूप गुन दोऊ बरनत फिरै
घर न थिरात रीति नेह की नई नई।
मोहि मोहि मोहन को मन भयो राधामय
राधा मन मोहि मोहि मोहन मई मई॥

संगीत प्रारम्भ होनेपर उसकी मधुर स्वरलहरी निकुञ्जमें गूँजने लग जाती है। मधुमती मञ्जरीका कण्ठ आज असीम रूपसे मधुर हो गया है। दो कड़ी गाते ही श्रीप्रिया-प्रियतमकी पुतलियाँ, जो बिल्कुल स्थिर दीख रही थीं, वे एक-दो बार ऊपर-नीचे घूम जाती हैं तथा पलक गिरकर आँखें बंद हो जाती हैं। उसी भावावेशमें संगीतके अनुरूप भावसे श्रीप्रिया-प्रियतम अब अभिभावित होने लगते हैं।

श्रीप्रिया देख रही हैं—मैं किसी ग्वालिनके घरपर छाछका बायना देने गयी हूँ। ग्वालिन श्यामसुन्दरके पीताम्बरकी तरह ओढ़नीको लपेटे हुए है। उसे देखकर मैं बिल्कुल श्यामसुन्दरके ध्यानमें तल्लीन होकर हँस रही हूँ, बड़बड़ा रही हूँ। कभी छाती पीटकर रोने लग जाती हूँ। बावलीकी तरह दौड़कर अपने हाथके छाछका बर्तन तो मैं पटक देती हूँ तथा उसके घरका एक मटका उठाकर ले भागती हूँ। ग्वालिन मेरी दशा देखकर मुझे दुलरा रही है और पूछ रही है कि बहिन! तुझे क्या हो गया है? अयँ! तू तो बिल्कुल बावली-सी दीख रही है। मैं उसे जवाब दे रही हूँ कि मोह! क्या ही रूप है! बहिन! तू बता सकेगी, श्यामसुन्दर इतने सुन्दर क्यों हैं? आह! उन्हें इतना मधुर बोलना किसने सिखाया? बता दे बहिन! मेरी बात सुनकर ग्वालिन मेरा हाथ पकड़कर कह रही है कि चल, मैं तुझे घर पहुँचा आऊँ। तू होशमें नहीं है। इतना कहकर वह ग्वालिन मेरा हाथ पकड़े हुए चल रही है; पर मेरे शरीरका आकार बिल्कुल बदल गया है। मैं बिल्कुल श्यामसुन्दरकी-सी दीख

साड़ीके बदले मेरे ऊपर पीताम्बर है, चूड़ाके बदले मोर-मुकुट है। मैं गोरीसे बिल्कुल साँवली बन गयी हूँ।

इधर श्यामसुन्दर संगीतके भावसे आविष्ट होकर यह अनुभव कर रहे हैं—गायें चरानेके लिये मैं वनमें जा रहा हूँ। गोष्ठके बाहर निकलते ही मेरी प्रिया मुझे मिल गयी हैं। प्रिया अञ्चलमें फूल बीन-बीनकर रख रही हैं। सिरसे अञ्चल खिसककर पीठपर आ गया है। नागिन-सी वेणी पीछे नाच रही है। मैंने ताली बजाकर प्रियाको इशारा किया है। इशारा करते ही प्रियाने मेरी ओर तिरछी चितवनसे देखा है। देखते ही मेरा हृदय बिंध-सा गया है। मैं जोरसे कह रहा हूँ कि आह! आ!··· । तुरंत मेरी प्रिया झाड़ीमें छिप जाती हैं मेरी आँखें भर आयी हैं मैं कलेजा थामकर वहीं बैठ गया हूँ। मधुमङ्गल, सुबल, अंश, स्तोक आदि सखा घबराये हुए-से पूछ रहे हैं कि क्यों भैया कान्हूँ! क्या हुआ है? क्यूँ! ऐसा हमने तुम्हें कभी नहीं देखा। मैं उनसे कह रहा हूँ कि अंश! तुमने कभी करोड़ों चन्द्रमाओंको एक साथ उदय होते देखा है? अंश उत्तर देता है कि नहीं। मैं कह रहा हूँ कि अच्छा देख, करोड़ ही नहीं, असंख्य चन्द्र-बिम्बोंमें जो शोभा है, वह भी फीकी पड़ जाये, ऐसी शोभा मैंने अभी-अभी उस झाड़ीके पास देखी है। अंश आश्चर्यमें भरा हुआ पूछता है कि किसकी शोभा? मैं कह रहा हूँ कि 'रा ···· रा ···· रा ···· रा'। मैं चाहता हूँ कि प्रियाका नाम उच्चारण करूँ, पर बोली बंद-सी हो गयी है। इसी समय मेरी प्रियाकी मधुर कण्ठ ध्वनि हमें सुन पड़ती है। मेरा हृदय नाचने लगता है। मैं चाहता हूँ कि ठीकसे बोलकर सखाओंको समझाऊँ, पर कुछ-का-कुछ बोल जाता हूँ। मैं पागलकी तरह रटने लग जाता हूँ कि 'मृग मन करत सिकार! मृग मन करत सिकार'। मेरे शरीरका आकार बदल गया है। मैं बिल्कुल प्रियाके आकारका हो गया हूँ।

इस तरह प्रिया-प्रियतम मधुमती मञ्जरीके संगीतकी धारामें बह रहे हैं। मधुमती कोकिल कण्ठसे अन्तिम कड़ीकी बार-बार आवृत्ति कर रही है। 'मोहि मोहि मोहनको मन भयो राधामय, राधा मन मोहि मोहि मोहन मई मई'—इस चरणकी आवृत्ति सुनकर दोनों ही सोचने लगते हैं कि मानो कोई मुझे जगा रहा है। श्यामसुन्दर सोचते हैं कि ठीक बात

है, बिल्कुल ठीक। प्रियाके ध्यानके कारण मैं मोहित हो गया हूँ, इसीलिये मेरी आँखें अपने शरीरको नहीं देख पा रही हैं। श्रीप्रिया भी यही सोच रही हैं कि सच है। बिल्कुल सच, प्यारे श्यामसुन्दरने आँखोंको ला लिया है, इसीलिये ही भ्रमवश मुझे अपना आकार श्यामसुन्दरकी तरह दीख रहा है।

मधुमतीको विशाखा इशारा करती हैं। इशारा पाते ही तत्क्षण मधुमती संगीत बंद कर देती है। संगीत बंद होते ही निकुञ्जमें एक गम्भीर सन्नाटा छा जाता है। प्रिया-प्रियतम, दोनों एक साथ ही आँखें खोल देते हैं। आखें खोलकर अकचकाये हुए दोनों इधर-उधर देखने लग जाते हैं। अब सखियाँ हँस पड़ती हैं। प्रिया-प्रियतम दोनों अपनी आवेशपूर्ण दशाका स्मरण करके कुछ झेंप-से जाते हैं। पर श्यामसुन्दर तुरंत ही खिलखिलाकर हँस भी पड़ते हैं तथा कहते हैं—वाह! तुमने तो मुझे खूब छकाया। फल खिलाते-खिलाते मुझपर जादू कर बैठी। ठीक बात है, इसीलिये ही शास्त्रोंमें नीची दृष्टि करके मौन रहकर भोजन करनेका विधान है।

श्यामसुन्दरकी बात सुनकर सखियाँ हँसने लगती हैं। श्रीप्रिया भी हँसने लगती हैं। अब श्यामसुन्दर पनस-रसका वह कटोरा उठा लेते हैं। उसे श्रीप्रियाके ओठोंके पास ले जाकर कहते हैं—देख, अब बात स्थिर हो चुकी है। मैं फल खा चुका। अब तुझे किंचित् पीना ही पड़ेगा।

श्रीप्रिया शर्मायी हुई दृष्टिसे प्रियतमकी ओर ताकती हुई एक घूँट रस पी लेती हैं तथा धीरेसे कहती हैं—मैं पीछे पी लूँगी, मान जाओ।

श्यामसुन्दरका मुख प्रसन्नतासे भर जाता है। वे मधुर कण्ठसे बहुत धीरेसे प्रियाके मुखके पास झुककर कहते हैं—अस्तु!

श्रीश्यामसुन्दर फिर जोरसे हँसने लग जाते हैं। कटोरा परातमें रखकर उठ पड़ते हैं। श्रीप्रिया भी उठ पड़ती हैं। वहाँसे उठकर पूर्वकी ओर चार-पाँच कदम चलकर एक चौकीपर बैठ जाते हैं, जो सुन्दर ढंगसे सजायी हुई रखी है। रूपमञ्जरी झारी लेकर आ पहुँचती है। रतिमञ्जरीके हाथमें चौड़े मुँहका सुन्दर गमला है,

उसमें रानी प्यारे श्यामसुन्दरके हाथ धुलाती हैं। फिर कुल्ले कराकर अपने अञ्चलसे हाथ पोंछती हैं। श्यामसुन्दर प्रेममें भरे रहकर रानी जैसे-जैसे करती जा रही हैं, वैसे-वैसे करने दे रहे हैं। हाथ पोंछकर रानीमें एक गम्भीर उल्लास हिलोरे मारने लगता है। वे प्यारे श्यामसुन्दरका हाथ पकड़कर उत्तरी दिशावाले दरवाजेकी ओर चल पड़ती हैं। वहाँसे रत्न-महलके उत्तरी कमरेमें आती हैं, फिर उत्तरी निकुञ्जमें। फिर उसे भी पारकर उत्तरकी तरफ सुन्दर रविश (छोटी सड़क) पर चलने लगती हैं।

सड़कके किनारे दोनों ओर बेला-फूलके सुन्दर वृक्ष लगे हैं, जिनमें बड़े-बड़े बेलेके फूल खिल रहे हैं। बेलेकी क्यारीकी एक कतारके बाद दूसरी कतार मेंहदीकी है, जिसमें बड़ी सुन्दर मञ्जरियाँ एवं पुष्प लग रहे हैं। उसी सड़कसे चलती हुई ललिता-कुञ्जके उत्तर-पश्चिम कोनेवाले रत्न-महलमें जा पहुँचती हैं।

इस महलका भी आकार तो वैसा ही है, पर लता-गुल्मोंकी सजावट कमरोंकी सजावट और भी मनोहर दीख पड़ रही है। श्रीप्रिया-प्रियतम बीचवाले आलीशान कमरेमें पहुँच जाते हैं। कमलके पुष्पोंका बना हुआ बड़ा ही सुन्दर पलंग यहाँ शोभा पा रहा है। श्रीप्रिया प्यारे श्यामसुन्दरको उसीपर ले जाकर बैठा देती हैं। बैठाकर उनकी ओर देखने लग जाती हैं। श्यामसुन्दर मुस्कुराते हुए दक्षिणकी तरफ सिर करके उस पलंगपर लेट जाते हैं। श्रीप्रिया पैर लटकाकर उसी पलंगके बीचके हिस्सेमें प्यारे श्यामसुन्दरकी ओर मुँह करके बैठ जाती हैं। पनबट्टा लेकर विलासमञ्जरी श्रीप्रियाके सामने खड़ी है। श्रीप्रिया पनबट्टेको लेकर पलंगपर रख लेती हैं तथा उसमेंसे दो बीड़े पान ले लेती हैं। पानपर सोनेका सुन्दर वरक चढ़ा हुआ है। पान लेकर पनबट्टा श्रीप्रिया विलासमञ्जरीके हाथमें पकड़ा देती हैं तथा श्यामसुन्दरके सिरकी ओर खिसक जाती हैं। खिसककर बायाँ हाथ श्यामसुन्दरके दाहिने कंधेपर रख करके दाहिने हाथसे पान श्यामसुन्दरके मुखमें रख देती हैं। श्यामसुन्दर मुँहमें पान लेकर मुँह बंद कर लेते हैं। उल्लासमें भरी हुई श्रीप्रिया श्यामसुन्दरके मुखकी ओर देखती रहती हैं।

ललिता सिरकी तरफसे आकर श्यामसुन्दरके बायीं ओर पलंगपर बैठ जाती हैं। विशाखा श्यामसुन्दरके चरणोंके पास पलंगपर बैठ जाती हैं तथा उनके चरणोंको अपनी गोदमें ले लेती हैं। चित्रा सिरके पास पंखा लिये हुए खड़ी हैं; पर गर्मी नहीं रहनेके कारण झल नहीं रही हैं। कुछ सखियाँ घुटना टेके तथा हाथसे पलंगको पकड़े रहकर बैठी हैं। कुछ मञ्जरियाँ खड़ी हैं। श्यामसुन्दर अपना पीताम्बर पैरसे लेकर ग्रीवातक तान लेते हैं; इससे श्यामसुन्दरका शरीर ढक जाता है, केवल मुखारविन्द दीखता है।

सामने उत्तरकी तरफकी दीवालपर एक अत्यन्त सुन्दर चित्र है। उसपर श्यामसुन्दरकी दृष्टि जाती है। चित्रमें यह चित्रित है कि रानी श्यामसुन्दरकी वंशी होठोंपर रखे हुए हैं। श्यामसुन्दर बगलमें बैठे हुए बजाना सिखला रहे हैं। अब श्यामसुन्दरको वंशीकी याद आती है। मध्याह्न जल-विहारके समय वंशी ललिताको दे चुके थे, उसे किसी प्रकार ले लेनेकी इच्छा श्यामसुन्दरके मनमें जाग्रत् होती है। इस इच्छासे श्यामसुन्दर श्रीप्रियासे कहते हैं—तू तो भूल गयी होगी।

श्रीप्रिया अपने प्रियतमकी रूप-सुधाके पान करनेमें इतनी तल्लीन थीं कि मानो उनके कानोंमें ये शब्द पहुँचे नहीं। प्रियाने कुछ जवाब नहीं दिया। श्यामसुन्दर धीरेसे हँसते हुए प्रियाकी ठोढ़ीको हिलाकर कहते हैं—क्यों, बोल, याद है क्या?

इस बार रानी मानो समाधिसे जगकर कहती हैं—क्या?

श्यामसुन्दर कहते हैं—उस दिन मैंने जो तुम्हें रागिनी सिखलायी थी, वह भूल गयी कि याद है?

रानी एक सरल बालिका-सी चटपट कहती हैं—हाँ, हाँ, बिल्कुल याद है।

श्यामसुन्दर—अच्छा, सुना भला!

रानी—लाओ, दो वंशी, अभी सुना देती हूँ।

श्यामसुन्दर—ललिताके पास है, उससे ले ले।

रानी ललितासे कहती हैं—ललिते ! वंशी थोड़ी देरके लिये मुझे दे दे, मैं फिर तुझे वापस कर दूँगी।

ललिता कुछ क्षण मुस्कुराती हुई सोचती हैं, फिर एक मञ्जरीको कुछ इशारा करती हैं। वह वंशी ले आती है। रानी उसे होठोंपर रखकर बजाने लगती हैं, पर फूँक भरते ही प्रेममें विवश होने लगती हैं। अतः लज्जित होकर हाथमें वंशी लेकर कहती हैं—सबके सामने नहीं बजा सकूँगी।

श्यामसुन्दर हँसते हुए कहते हैं—समझ गया, तू भूल गयी है।

रानी प्रेममें अधिकाधिक विवश होती जा रही हैं, इसलिये वंशी ललिताके हाथमें दे देती हैं। ललिता ज्यों-ही वंशी पकड़ती हैं, वैसे ही श्यामसुन्दर हाथ बढ़ाकर उसे पकड़ लेते हैं एवं कहते हैं—देख मैं, फिरसे सिखला देता हूँ।

श्यामसुन्दर पड़े-पड़े ही उसमें एक फूँक भरते हैं। फूँक भरते ही इतनी मोहक स्वर-लहरी निकलती है कि प्रेममें बेसुध होकर ललिता सामनेकी ओर एवं राधारानी पीछेकी ओर झुक जाती हैं। श्यामसुन्दर दोनों हाथ बढ़ाकर बड़ी फुर्तीसे दोनोंको सँभाल लेते हैं तथा हँसते हुए कहते हैं—ललिता रानी ! वंशीको फिर दिनभर अपने पास किस तरह रख सकोगी ?

ललिता शर्मा-सी जाती हैं, कुछ बोलती नहीं। इसी समय वृन्दा देवी एक अत्यन्त सुन्दर तोता एवं एक सारी पिंजरेमें लिये हुए आ पहुँचती हैं। तोता आते ही बोलने लगता है—मेरे प्यारे श्यामसुन्दर ! मेरे प्राणाधार ! किंचित् विश्राम कर लो, तुम्हारी आयु बढ़ेगी।

फिर तोता एक श्लोक पढ़ता है, जिसका भाव यह है कि भोजन करके बायीं करवट सोनेसे कोई रोग नहीं होता, अन्नका परिपाक ठीकसे होता है और आयु बढ़ती है। तोतेका श्लोक-पाठ सुनकर सभी सखियाँ हँस पड़ती हैं। तोता अपनी आँखकी पुतलियोंको कोयोंमें नचाता हुआ ऐसी गम्भीरताकी मुद्रा बना रहा है मानो उसे आयुर्वेद शास्त्रका पूरा ज्ञान है। भक्तवत्सल श्यामसुन्दर तोतेकी अभिलाषा पूर्ण करते हुए कहते हैं—हाँ भाई ! तुम बहुत ठीक कह रहे हो, मुझे नींद भी आ रही है।

श्यामसुन्दर बायीं करवट होकर आँखें बंद कर लेते हैं। तोतेकी आँखोंमें प्रसन्नता छा जाती है। आँखके कोये आनन्दाश्रुओंसे भर जाते हैं। श्रीप्रिया श्यामसुन्दरकी ओर एकटक देख रही हैं। वृन्दा ललिताको कुछ इशारा करती हैं। ललिता धीरेसे पलंगसे नीचे उतर पड़ती हैं तथा राधारानीके पास आकर हाथ पकड़ लेती हैं। रानी उठना चाहती नहीं, पर ललिता जबर्दस्तीसे धीरे-धीरे उन्हें पलंगसे नीचे उतार देती हैं तथा कुछ उन्हें भी खिलानेके उद्देश्यसे कमरेके बाहर खींचती हुई-सी ले चलती हैं। रानी प्यारे श्यामसुन्दरकी ओर मुख किये हुए बहुत धीरे-धीरे बढ़ रही हैं। ललिता धीरेसे रानीके कानमें कहती हैं—देख, कुछ खा ले! नहीं तो मैं श्यामसुन्दरसे कह दूँगी कि यह नहीं खाती। फिर वे तुम्हें पहले खिलाकर तब खाया करेंगे।

ललिताकी बात सुनकर रानी सिर नीचा किये हुए जिधर ललिता ले चलती हैं, उधर ही धीरे-धीरे चलने लग जाती हैं। ललिता वहाँसे चलकर उत्तरी कमरे एवं निकुञ्जको पारकर सड़कके दाहिनी ओरकी कदम्ब-वेदीके पास जा पहुँचती हैं।

॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

शुक-सारी विवाद लीला

कदम्ब-वेदीपर सुन्दर आसन लगा है। उसपर गोलाकार पंक्तिमें बैठी हुई श्रीप्रिया प्यारे श्यामसुन्दरके अधरामृतसे सिक्त फलोंका प्रसाद पा रही हैं। श्रीप्रियाकी दाहिनी ओर ललिता बैठी हुई हैं एवं बायीं ओर विशाखा। फिर ललिताकी दाहिनी ओर क्रमशः गोलाकार चित्रा इन्दुलेखा चम्पकलता रङ्गदेवी तुङ्गविद्या एवं सुदेवी बैठी हुई हैं। पंक्तिके दक्षिणी हिस्सेमें थोड़ी-सी जगह छोड़ी हुई है, जिसकी राहसे मञ्जरियाँ जल एवं अन्यान्य वस्तुएँ बीच-बीचमें परोसने जाती हैं। अनङ्गमञ्जरी पालिकामञ्जरी धन्यामञ्जरी एवं श्यामलामञ्जरी पंक्तिकी चारोंदिशाओंमें खड़ी हैं। चारोंके हाथमें एक-एक थाल है, जिसमें तश्तरियाँ सजी हुई हैं। उसीमेंसे निकालकर वे बीच-बीचमें सखियोंकी थालीमें डाल दिया करती हैं।

श्रीप्रियाने प्रारम्भमें तो एक प्यालेसे चार-पाँच घूँट रस एवं किंचित् पनसरस पी लिया; पर अब फलका टुकड़ा हाथमें लिये हुये मुस्कुरा रही हैं तथा कभी चम्पकलता और कभी रङ्गदेवीकी ओर ताककर इशारेसे कहती हैं—देख! तू तो थाली लिये बैठी है, मैं कितना खा चुकी।

श्रीप्रियाकी आँखें तो सखी-मण्डलीकी पंक्तिमें हैं;पर मन वहाँ है,जहाँ प्यारे श्यामसुन्दर विश्राम कर रहे हैं। इसलिये दृष्टि बीच-बीचमें स्थिर-सी हो जाती है। ललिता अब धीरे-धीरे संतरे एवं अंगूरके कुछ खण्डोंको प्रियाके मुखमें देने लगती हैं तथा श्रीप्रिया खाती चली जा रही हैं। ललिताको जब यह संतोष हो जाता है कि मैं कुछ इसके पेटमें डाल चुकी हूँ और यदि यह अपने हाथसे बिल्कुल भी नहीं खायेगी तो भी विशेष आपत्तिकी बात नहीं रही है, तब अपने मुँहमें फलके एक-दो खण्ड डालकर रानीसे कहती हैं—देख, हम सब बैठी हैं, तू कुछ खा ले।

रानीका मन तो यहाँ था नहीं। हाँ, एक क्षणके हजारवें हिस्सेमें यहाँ आता था, फिर प्यारे श्यामसुन्दरके सौन्दर्य-सागरमें गोता लगाने लगता था। रानीने ललिताकी बात मानो सुनी ही नहीं। वे तो सोच रही थीं कि आह! मुझे यदि करोड़ आँखें होतीं, रोम-रोममें एक-एक आँख होती और कभी पलक नहीं गिरती तो कुछ-कुछ प्यारे श्यामसुन्दरकी रूप-सुधाका आनन्द ले पाती। क्या करूँ, किससे कहूँ? अच्छा, एक काम करूँ। प्रार्थना करूँ कि हे विधाता.....।

रानीकी चिन्तन-धारा पलटी और सोचने लगी कि ओह! कृष्ण! कृष्ण!! मैं क्या सोच रही हूँ! नहीं, नहीं, कभी नहीं। विधाता! मैं भूल गयी। शपथ करके कहती हूँ कि मैं होशमें नहीं थी, इसीलिये तुमसे प्रार्थना करने जा रही थी। अब कभी ऐसा नहीं करूँगी। हाय, हाय, फिर मेरे प्यारे श्यामसुन्दरको कितना कष्ट होगा! मेरे प्यारे श्यामसुन्दरको मेरा वह रूप देखकर कितना संताप होगा! मेरे हृदयधन मुझे हृदयसे लगाकर मेरे कपोलोंका चुम्बनकर आनन्दमें डूबने लग जाते हैं। अभी मेरे केशोंको सँवारकर, वेणी गूँथकर पैरोंमें पायजेब बाँधकर वे कितने उत्फुल्ल हो रहे थे; पर मैं इतनी अधमा हूँ कि अपने सुखके लिये उनके आनन्दको नष्ट करनेकी बात सोचने लग गयी। भला, रोम-रोममें आँखें हो जानेपर तो मैं विकृत हो जाऊँगी। मेरे प्यारे श्यामसुन्दरको फिर हमसे क्या सुख मिलेगा! ना, ना, कभी नहीं। बस, दो ही आँखें रखूँगी। हाँ, हाँ, मुझे दो ही आँखें चाहिये।

रानीके आन्तरिक भाव-प्रवाहको किसी सखीको कल्पना भी नहीं है। ललिता मुस्कुराती हुई अपनी बावली सखीकी ओर देखती है और रह-रहकर कह उठती है—क्यों, कुछ खा ले; यों ही चुपचाप बैठी रहेगी?

रानीकी ओरसे कुछ भी जवाब नहीं मिलता, पर कभी-कभी किसी फलसे दो-तीन चावलभर तोड़कर वे धीरेसे मुखमें रख लिया करती हैं। अब ललिता चित्राको धीरेसे कहती है— कलकी तरह तू ही कोई उपाय कर।

ललिताकी बात सुनकर चित्रा मुस्कुराती हुई उठ पड़ती है तथा जल्दीसे हाथ धोकर, मुँह धोकर, रूमालसे हाथ पोंछकर रानीकी पीठके

पास आकर बैठ जाती हैं तथा धीरेसे उनके कानके पास मुँह ले जाकर कहती हैं—बहिन ! परसोंकी व्यवस्था आज ही करनी पड़ेगी और सो भी प्यारे श्यामसुन्दर सोकर उठ नहीं जाते, उसके पहले-पहले। इसलिये तू जल्दीसे कुञ्ज सजा ले।

चित्राके ये शब्द कानमें प्रवेश करते ही रानीका मन दूसरे भाव-प्रवाहमें बहने लग जाता है। कल प्रिया एवं सखियोंने प्यारे श्यामसुन्दरके साथ एक लीला करनेकी बात स्थिर की थी। यह स्थिर हुआ था कि चित्रा तो रानीका स्वांग धारण करेंगी एवं रानी चित्राका। रानी-बनी-हुई चित्रा श्यामसुन्दरसे मान करेंगी। श्यामसुन्दर वेश-भूषाका कपट पहचान पाते हैं या नहीं,— यह बात रानी निकुञ्जके छिद्रसे देखेंगी। यदि पहचान लिया तो कोई बात ही नहीं, पर नहीं पहचान पाये तो देखें, रानीको मनानेकी कैसी चेष्टा श्यामसुन्दर करते हैं तथा चित्रा कहाँ तक अपना स्वांग निभा पाती हैं। रानी जब-जब मान करती हैं तो उनका मान विशेष देरतक नहीं टिकता। अतः चित्राका मान देखकर मान करना मैं भी सीखूँगी,— इस विचारसे भी रानीने इस लीलाके लिये अपनी स्वीकृति दे दी है।

चित्राके शब्द कानमें जाते ही रानीकी चित्तधारा इस आयोजनकी ओर मुड़ पड़ती है। रानी जल्दीसे फलका एक खण्ड मुँहमें रखकर उठ पड़ती हैं। सखियाँ भी उठ पड़ती हैं। झारीसे हाथ स्वयं धोनेके लिये बायें हाथसे रूपमञ्जरीके हाथकी झारी रानी स्वयं पकड़ लेती हैं। रानीकी यह शीघ्रता देखकर ललिता आदि मुस्कुराने लगती हैं। रूपमञ्जरी मुस्कुराती हुई हाथपर पानी देने लग जाती है। रानी चटपट हाथ धोकर ललिता आदिके हाथ धुलाने चलती हैं, पर ललिता आदि सखियोंने हाथ धो लिये थे। रानीकी यह प्रेमभरी चेष्टा देखकर एक बार अतिशय ललकसे ललिता रानीको हृदयसे लगा लेती हैं। फिर रूमालसे हाथ-मुँह पोंछकर, जिस कमरेमें श्यामसुन्दर थे, वहींके लिये पुनः चल पड़ती हैं।

वहाँ पहुँचकर सखियाँ देखती हैं कि प्यारे श्यामसुन्दर गाढ़ निद्रामें हैं। रानी कुछ दूरसे ही प्रियतमके मुखारविन्दकी ओर देखने लगती हैं। पर इस आशङ्कासे कि कहीं प्यारेकी नींद टूट न जाये, दबे पाँव पीछे

हटकर पलंगसे सात-आठ हाथ पश्चिम-उत्तरकी ओर स्थित अत्यन्त सुन्दर सजे हुए पाटेपर जाकर बैठ जाती हैं। पाटा चार गज चौड़ा, चार गज लम्बा और डेढ़ हाथ ऊँचा है। बीचमें तो मखमली नीली गद्दी है, पर पाटेके चारों ओर बड़े सुन्दर ढंगसे कमलके फूल पिरोये हुए हैं। रानी मसनदके सहारे प्यारे श्यामसुन्दरकी ओर मुख करके बैठ जाती हैं। सखियाँ भी उसी पाटेपर बैठ जाती हैं। एक मञ्जरी श्यामसुन्दरके पलंगके पासकी पीकदानी उठा लाती है। रानी अतिशय प्यारसे स्वयं पीकदानी ले लेती हैं। उस पाटेपर पनबट्टा रखा हुआ है, उसमें-से पानके बीड़े निकालती हैं। आठ बीड़ोंको खोलकर उनमें प्रियतम श्यामसुन्दरके अधरामृतसे सने हुए पीकके दो-दो बूँद डालती हैं, फिर बीड़ेको सजाकर अतिशय प्यारसे बारी-बारीसे सभी सखियोंके मुँहमें अपने हाथसे देती हैं। इसी बीचमें चित्रा ठीक दो बीड़े उसी प्रकार अधरामृत-पीक मिलाकर तैयार कर लेती हैं तथा रानीके मुँहमें रख देती हैं। रानी पनबट्टेसे एक-एक पान और निकालकर पुनः सखियोंके मुँहमें दे देती हैं। फिर उस पनबट्टेको चम्पकलताके हाथमें देकर हाथ धोती हैं तथा एक मञ्जरीसे दूसरा पनबट्टा लेकर उसके ऊपर पान रखकर प्यारे श्यामसुन्दरके लिये बीड़े तैयार करने लगती हैं। दृष्टि क्षण-क्षणमें प्यारेके मुखारविन्दकी ओर जाती है।

अब सखियोंमें अतिशय प्रेमभरी चर्चा चलने लगती है। श्यामसुन्दरको नींद बिल्कुल नहीं आयी है; पर इस प्रेमभरी चर्चाको सुननेके लिये नींदका बहाना किये हुए पड़े हैं। सखियोंमें धीरे-धीरे जो बात हो रही है, उसीकी ओर श्यामसुन्दर कान लगाये हुए हैं; पर किसीको यह कल्पना भी नहीं है कि ये जगे हुए हैं। इन्दुलेखा दोनों मञ्जरियोंको, जो प्यारे श्यामसुन्दरके पलंगके दोनों ओर खड़ी हैं, इशारेसे पूछती हैं। मञ्जरियाँ इशारा कर देती हैं कि गाढ़ी नींदमें सो रहे हैं। रानी एवं सखियाँ अब निस्संकोच बातें शुरू करती हैं, अवश्य ही धीमी-धीमी आवाजसे। कुछ देर उस प्रेममय आयोजनकी सलाह होती है।

अब रानी कहती हैं—चित्रे! तू सुन रही है न!

चित्रा कहती हैं—हाँ, सुन रही हूँ।

ललिता—जब वे पहुँच जायँ, तब तुम निकुञ्जको बंद कर देना, समझी !

चित्रा—बहुत ठीक !

ललिता—उस समय मैं राधाके साथ मदनकुञ्जमें रहूँगी। तुम श्यामसुन्दरको बंद करके मेरे पास चम्पकलताको सूचनाके लिये भेज देना।

चम्पकलता—ललिते ! पर सुबलका क्या करेगी ?

विशाखा—मैं उसे मधुमङ्गलके द्वारा जालमें कल ही फाँस लूँगी। कल ही मैं मधुमङ्गलको सुन्दर-सुन्दर केले खिलाकर परसों शरीफा खानेका निमन्त्रण दे दूँगी। यद्यपि सुबलका लालचमें आना है कठिन, पर एक बार यह उपाय कर तो लूँ। न होगा तो, उसे और किसी उपायसे अपने निकुञ्जमें रोके रहूँगी।

इसी समय श्यामसुन्दर करवट लेते हैं। मञ्जरी कुछ इशारा करती है। राधारानी एवं ललिताकी तीक्ष्ण दृष्टि प्यारे श्यामसुन्दरपर पड़ती है। उनकी कपट-निद्राकी पोल खुल जाती है। रानी धीरेसे ललिताके कानमें कहती हैं—सब गुड़ मिट्टी हो गया।

ललिता—कोई बात नहीं, फिर दूसरा उपाय सोच लूँगी, पर कपटी-शिरोमणिने तो हद कर दी। अभी-अभी कैसे खर्राटे भर रहे थे।

रानी वहाँसे उठकर श्यामसुन्दरकी पुष्प-शय्याके पास आकर खड़ी हो जाती हैं। श्यामसुन्दरने चादरसे अपना मुँह ढक लिया था, फिर भी चादरके अंदरसे मुखारविन्द दीख पड़ रहा है। मुद्रित नयनकी छवि झीनी चादरको चीरती हुई रानीके हृदयको बींध-सी रही है। अलकावलीके दो गुच्छे प्यारे श्यामसुन्दरके कपोलोंपर बिखरे हुए हैं। रानी अपने पद्म-सदृश हाथोंसे अलकावलीके गुच्छोंको यथास्थान रख देनेके लिये चादर हटाती हैं। श्यामसुन्दर हँसी रोकना चाहते हैं, पर होठोंपर उस अन्तर्हृदयकी हँसीकी झलक कुछ आ ही जाती है। रानी हँस पड़ती हैं। श्यामसुन्दर मानो अभी-अभी घोर निद्रासे जागे हों, ऐसी मुद्रामें अपनी आँखें खोलकर निहारने लग जाते हैं। रानी एवं सखियाँ जोरसे खिल-खिलाकर हँसने लग जाती हैं।

रानी झुककर प्यारे श्यामसुन्दरके गलेमें अपनी दोनों बाँहें डाल देती हैं तथा ललकभरी दृष्टिसे प्यारेके मुखारविन्दको कुछ क्षणतक देखती रहती हैं। फिर कहती हैं— बड़ी अच्छी नींदमें तुम सो रहे थे, जग कैसे गये ?

कहते-कहते रानी फिर खिलखिलाकर हँस पड़ती हैं।

प्यारे श्यामसुन्दरके वक्षःस्थलपर रानीकी वनमाला झूल रही है। प्रेमावेशके कारण अञ्चल खिसककर पीठपर आ गया है। अपनी प्रियाकी यह दशा देखकर श्यामसुन्दरके शरीरमें प्रेमके विकार उत्पन्न होने लगते हैं। प्यारे श्यामसुन्दरके मुखारविन्दपर छोटे-छोटे प्रस्वेद-कण मोतीकी तरह झलमल करने लगते हैं। रानी अतिशय प्यारसे अपने अञ्चलसे पसीना पोंछ देती हैं तथा धीरे-धीरे श्यामसुन्दरको उठाकर पलंगपर बैठा देती हैं। रानी भी पलंगपर बैठ जाती हैं तथा हँसकर कहती हैं— अच्छा, यह बताओ, तुमने हमलोगोंकी कौन-कौन-सी बातें सुनी हैं ?

श्यामसुन्दर कुछ आश्चर्यकी मुद्रामें कहते हैं— कैसी बातें ?

ललिता हँसकर कहती हैं— चालाकी रहने दो। तुमने झूठ ही नींदका बहाना बनाया था, अच्छी बात है। सावधान रहना, सूदके सहित बदला लूँगी।

श्यामसुन्दर हँस पड़ते हैं तथा कहते हैं— अच्छी बात है।

इसी समय वृन्दा बहुत-सी मञ्जरियोंको आगे किये हुए निकुञ्जमें प्रवेश करती हैं। रानी जब प्यारे श्यामसुन्दरका प्रसाद लेने कदम्बवेदीपर गयी थीं तो पीछे-पीछे वृन्दा भी गयी थीं। वहाँ रानी एवं सखियोंके प्रसाद ले लेनेपर उन्होंने मञ्जरियों एवं दासियोंको अतिशय प्रेमसे प्रसाद खिलाया, फिर सबके अन्तमें किंचित् प्रसाद लेकर सब काम समाप्त करके वहाँ आ पहुँची हैं। वृन्दाके आते ही, निकुञ्जमें बहुत पहले जो वे पिंजरा रख गयी थीं, उसमेंके तोता एवं मैना, दोनों एक साथ ही बोल उठते हैं— देवि ! आज्ञा हो तो एक बार बाहर जाकर पक्षियोंको शान्त बैठनेके लिये कह दूँ। वे बहुत कोलाहल कर रहे हैं।

तोता एवं मैनाकी बात सुनकर वृन्दा कहती हैं— तू बैठ, मैं स्वयं जा रही हूँ।

वृन्दा पूर्वकी तरफसे निकुञ्जमें चली जाती हैं। जाकर बाहरकी ओर छिद्रमें-से देखती हैं। सखियाँ एवं रानी तथा श्यामसुन्दर आश्चर्यमें भरे कभी वृन्दाकी ओर देखते हैं, तो कभी तोता एवं मैनाकी ओर। वृन्दा निकुञ्जमें जाकर चुपचाप खड़ी हैं। कुछ क्षण खड़ी रहकर मुस्कुराने लगती हैं तथा फिर दबे पाँव शीघ्रतासे जहाँ श्यामसुन्दर आदि हैं, आकर खड़ी हो जाती हैं। पहले तो जोरसे हँस पड़ती हैं, फिर हँसी सँभालकर कहती हैं—प्यारे श्यामसुन्दर ! एक तमाशा देखोगे ?

श्यामसुन्दर कहते हैं— हाँ, हाँ, अवश्य देखूँगा, दिखाओ।

वृन्दा— अच्छा, देखो ! बिलकुल दबे पाँव मेरे पीछे-पीछे सभी चले चलो ! सावधान ! तनिक भी शब्द न हो, नहीं तो फिर खेल बिगड़ जायेगा।

वृन्दाकी बात सुनकर सखियाँ,रानी एवं श्यामसुन्दर,सभी आश्चर्यमें भरे हुए वृन्दाके पीछे-पीछे चल पड़ते हैं। चलकर पूर्वी निकुञ्जमें जा पहुँचते हैं। निकुञ्जमें अतिशय कोमल हरी-हरी पत्तियोंका बेंचके आकारका एक आसन है, उसीपर वृन्दादेवी प्रिया-प्रियतमको उत्तरकी ओर मुख करके बैठ जानेका इशारा करती हैं। प्रिया-प्रियतम उसी प्रकार आसनपर बैठ जाते हैं। कुछ सखियाँ आसनको पकड़े खड़ी रहती हैं, कुछ बैठ जाती हैं। निकुञ्ज सखियों एवं दासियोंसे ठसाठस भर जाता है; पर पूर्ण नीरवता छायी हुई है। वृन्दा फिर बहुत धीरेसे कहती हैं— सभी उस वृक्षकी ओर देखो।

लताओंके छिद्रमें-से एक वृक्षकी ओर वृन्दा अँगुलीसे इशारा करती हैं। सभी उस तरफ देखने लग जाते हैं। निकुञ्जसे आठ हाथ उत्तर हटकर बड़ा ही सुन्दर वृक्ष है। वृक्ष झाऊ-वृक्षके समान है, पर झाऊकी अपेक्षा अत्यधिक हरा-भरा है। पत्तियाँ तो झाऊ-वृक्षकी-सी हैं, पर इतनी अधिक हरी-भरी एवं इतनी घनी हैं कि बस, कुछ कहते नहीं बनता। मोटी-मोटी डाल हैं, पर डालमें कहीं भी रूखेपन नहीं है। डालका रंग भी बड़ा

सुन्दर है। हल्के-पीले रंगके कपड़ेपर हरे रंगका छींटा हो, वह कपड़ा जैसा दीखता है, वैसा-सा रंग डालका है। उस डालपर एवं वृक्षकी टहनियोंपर समूह-के-समूह पक्षी बैठे हैं। रंग-बिरंगके पक्षी हैं। कभी-कभी तो बहुतसे एक साथ बोल उठते हैं 'ठीक ! ठीक !' तथा कभी बिल्कुल शान्त बैठ जाते हैं। अधिकांश पक्षी इस मुद्रामें बैठे हैं मानो किसी पंचायतीमें पंच बनाये गये हों और गम्भीर विचारमें लगे हों। वृक्षकी एक मोटी डालपर, जो पश्चिमी ओर फैली है, एक तोता पूर्वकी ओर मुख किये हुए बैठा है तथा एक सारी पश्चिमकी ओर मुख किये हुए बैठी है।

वृन्दादेवी धीरेसे सबसे कहती हैं— देखो, इन दो पक्षियोंमें झगड़ा हो रहा है। अन्यान्य पक्षी इन दोनोंकी बात बैठे-बैठे सुन रहे हैं। इनका झगड़ा कैसा विचित्र है, यही दिखानेके लिये तुमलोगोंको ले आयी हूँ।

वृन्दाकी बात सुनकर सबकी दृष्टि उस तोते एवं मैनापर जा टिकती है। सभी अतिशय उत्सुकतासे प्रतीक्षा करते हैं कि देखें, क्या झगड़ा है। इसी समय सारी बोल उठती है— अच्छी बात है; पर आजसे मैं तुमसे कभी नहीं बोलूँगी।

तोता कहता है— बोलना या न बोलना तो तुम्हारी मर्जीपर है, किंतु तुम्हीं बताओ कि मैं तेरे लिये झूठ कैसे कह दूँ।

सारी— नहीं, नहीं, तुम झूठ मत बोलो, सत्यधर्मका पालन करो; पर अब मुझसे तुम्हारा कोई सम्बन्ध नहीं है।

तोता—देख सारी ! इस तरह नाराज होनेमें क्या लाभ है ? सत्यका निर्णय तो हुआ नहीं।

सारी— भाई ! मैं तो कई बार तुमसे कह चुकी कि मैं सत्य नहीं जानती, फिर बार-बार तंग करनेसे क्या लाभ है ?

तोता— नहीं जी ! मैं भी तुम्हें तंग करना थोड़े चाहता हूँ। हाँ, तेरे मुखसे बार-बार 'श्यामसुन्दर बड़े निठुर हैं, बड़े निठुर हैं' सुनकर बात करने लग गया। मैं जानता होता कि तू खीझ जायेगी तो इस प्रसंगको छेड़ता ही नहीं।

सारी—अच्छा, अब भूल हो गयी, क्षमा करो। एक बार नहीं हजार बार कह दे रही हूँ, श्यामसुन्दर बड़े रसिक हैं, बड़े रसिक हैं, बड़े करुण हैं, बड़े करुण हैं। बस, अब मुझसे मत बोलना।

यह कहकर सारी पूर्वकी ओर मुख फिराकर बैठ जाती है। तोता कुछ देर चुपचाप बैठे रहकर फिर उड़कर सारीके सामने चला आता है तथा कहता है—सारी! तू गम्भीरतासे विचार कर। सच, तेरी शपथ, मेरा कोई आग्रह थोड़े है कि मैं तेरी बात मानूँगा ही नहीं। हाँ, वह बात मेरी समझमें नहीं आती कि तू मेरे प्यारे श्यामसुन्दरको निठुर क्यों समझने लग गयी है? मेरा तो यह दृढ़ विश्वास है कि एक बार कुछ क्षणके लिये भी तू दृष्टि स्थिर करके उनके नयनोंकी ओर देखती तो फिर कभी इस तरह नहीं कहती।

सारी कुछ नहीं बोलती; पर प्रिया-प्रियतम एवं सखियाँ, सबके मुखपर हँसी छा जाती है। वृन्दा फिर सावधान करती हैं कि किंचित् भी शब्द नहीं होने पाये, नहीं तो खेल बिगड़ जायेगा।

सारी फिर बोलती है—भाई! कह चुकी, बार-बार कह चुकी। मेरी भूल थी, तुम ठीक हो। अब व्यर्थमें बातें क्यों बढ़ा रहे हो?

तोता कुछ गम्भीर-सा बनकर आँखें बंद कर लेता है तथा कुछ क्षण बाद अपने-आप बोलने लगता है—प्राणप्यारे श्यामसुन्दर! प्राणप्यारे श्यामसुन्दर!! प्राणप्यारे श्यामसुन्दर ·····!!!

तोतेकी यह मधुर कण्ठध्वनि सारीके मनमें प्रेमका संचार करने लगती है। सारी श्यामसुन्दरके नामके माधुर्यमें खींच ली जाती है। तोतेके प्रति रोषको भूल जाती है और तोतेकी ओर देखने लग जाती है।

तोता फिर कहता है—सच, सारी, तू मेरे हृदयको देख ले! मैं कृत्रिम नहीं कहता। मेरे हृदयमें यह बात कभी भी नहीं आयी कि श्यामसुन्दर निठुर हैं, बल्कि कभी-कभी यही दीखता है, तुम्हारी रानी ही कुछ निठुर बन बैठती हैं। देख, उस दिनकी बात है, तुम्हारी रानी रूठी हुई थीं। चन्द्रमाकी शुभ्र ज्योत्स्नासे यमुना-पुलिनका अणु-अणु उज्ज्वल हो रहा था। एक जामुनके वृक्षके नीचे हाथपर कपोल टेके, आँखें मूँदे

रखकर तुम्हारी रानी बैठी थीं। अद्भुत शोभा थी। सारी, देख! सच कहता हूँ, तुम्हें प्रसन्न करनेके उद्देश्यसे नहीं, रानीका सौन्दर्य तो हमें कई बार भ्रममें डाल चुका है। अहा! क्या कहूँ, जब मैं हाथकी ओर देखता था तो प्रतीत होता था, अनन्त नव-विकसित कमलोंकी शोभा इसके सामने फीकी है। मुखारविन्दकी ओर देखता था तो यह अनुभव करता कि अनन्त चन्द्रमण्डलकी शोभा रानीकी मुखकी शोभाके एक कणके बराबर भी नहीं। कविकी भाषामें यह शक्ति नहीं कि उस शोभाका वर्णन कर सके। हाँ, कुछ नीचे उतरकर कहूँ तो सचमुच उस दिन मुझे यह प्रतीत हो रहा था कि रानी हाथपर कपोल टेके हुए क्या बैठी हैं मानो पूर्णचन्द्र कमलके आसनपर सो रहा है। और भौंहोंकी शोभा तो निराली ही थी। रोषके कारण कुछ ऊपरकी ओर उठ गयी थीं, कुछ विरोध रूपसे टेढ़ी हो गयी थीं। सचमुच उस मुखकी एवं भौंहोंकी शोभा देखकर ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो रानीके मुखको मकरन्दसे भरा हुआ कमल समझकर भौंरोंके समूह आये हों और मुख-कमलका मकरन्द पान करनेकी प्रतीक्षामें मँडरा रहे हों। वह शोभा देखकर मेरा रोम-रोम आनन्दसे भर गया।* सारी! मैं तो दंग रह गया। आँखें हटती नहीं थीं। उसी समय ललिता प्यारे श्यामसुन्दरकी बाँह पकड़े हुए वहाँ आयीं। मेरे प्यारे श्यामसुन्दर चरणोंके पास बैठ गये। सारी! बहुत कहकर क्या होगा, मेरे श्यामसुन्दरने हृदयके समस्त प्यारसे प्रार्थना की; पर तुम्हारी रानीने आँखेंतक नहीं खोलीं। मेरे प्यारे श्यामसुन्दरका मुख उदास हो गया; पर रानी टस-से-मस नहीं हुईं। मेरे प्यारे श्यामसुन्दर कुछ दूर जाकर बैठ गये.....। सारी! सचमुच तू भी तो वहाँ थी ही, दोनोंमें कौन अधिक निष्ठुर तुम्हें दीखा, मैं यह तुम्हारे मुँहसे ही सुनना चाहता हूँ।

---

* पहिले तो देखो आय मानिनी की सोभा लाल
ता पाछे लीजिये मनाय प्यारे हो गोविंद।
कैर पै दिए कपोल रही है नयन मूँदि
कमल बिछाय मानो सोयो अहै पूरन चंद॥
रिस भरी भौंहें मानो भौंर बैठे अरबरात
बृंद तरे आयो मकरंद भर्यो अरबिंद।
'नंददास' प्रभु ऐसो प्यारी को रुसैये बलि
जाके मुख देखे ते मिटत सबै दुख-दंद॥

तोतेके मुखसे रानीके रूपका वर्णन सुनकर सारी प्रसन्न हो गयी थी तथा कुछ और सोचकर बड़ी प्रसन्नताकी मुद्रामें बोलती है—तोता! तुम्हें भीतरी बातका बिल्कुल पता ही नहीं है। ऊपरकी बात देखकर ही तुमने रानीको निठुर मान लिया है। देख, मैं उस दिनके उस गम्भीर मानका रहस्य रानीकी प्यारी सारीसे सब पूछ चुकी हूँ, पर तुझे बता नहीं सकूँगी, तुम उसे समझ भी नहीं सकोगे, उसे समझनेके लिये रमणी-सुलभ हृदय चाहिये। तेरा हृदय पुरुषका है, रानीके प्रेममय हृदयकी रूप-रेखा तुम्हारी कल्पनामें आ ही नहीं सकती। और.....।

सारी यह कहकर रुक जाती है। तोता शीघ्रतासे बोल उठता है — हाँ, हाँ, पूरी बात जो-जो कहना चाहती है, सब कह।

सारी कुछ क्षण चुप रहकर कहती है—मैं यही कहने जा रही थी कि तुम जिस घटनासे मेरी रानीको निष्ठुर समझ रहे हो, वह तो तुम्हारी नासमझीके कारण है। हाँ, यदि मैं तुम्हें अपने मनका भाव खोलकर दिखला दूँ तो तेरी बोली बंद हो जायेगी, कुछ भी जवाब नहीं दे सकोगे। बिना किसी संशयके समझ जाओगे कि ये श्यामसुन्दर कितने निष्ठुर हैं।

तोता कुछ गम्भीरताकी मुद्रामें कहता है—अच्छा! सुना सही, तूने ऐसी कौन-सी निष्ठुरता मेरे प्यारे श्यामसुन्दरमें देखी है?

सारी गम्भीर होकर करुणाकी मुद्रामें कहती है—तोता! सचमुच कलसे मेरे प्राण छटपट कर रहे हैं। कल दोपहरकी बात है। सूर्य-मन्दिरमें मेरी रानी बैठी थीं, बिल्कुल अकेली थीं। ललिता आदि सभी उपवनमें गयी हुई थीं। मैं एक लताकी टहनीपर बैठी हुई एकटक रानीकी ओर देख रही थी। रानीके हाथमें एक माला थी, पर यों ही अँगुलियोंपर पड़ी थी। आँखें बंद थीं; पर अविराम अश्रु धारा बहती हुई कपोलोंको भिगो रही थी। बीच-बीचमें रानी बोल उठती थीं कि मेरे जीवनसर्वस्व! सभी अवस्थाओंमें मैं तुम्हारी हूँ। तोता! रानीकी वह प्रेमावस्था देख-देखकर मैं गद्गद हो रही थी; पर आगे जो देखा, उसे देखकर तो दंग रह गयी। देखती हूँ कि रानी हठात् उठ खड़ी हुई। बड़बड़ करती हुई मन्दिरमें इधर-उधर घूमने लग गयीं। पहले तो आवाज अस्पष्ट थी, पर पीछे कुछ

जोरसे बोलनेके कारण मुझे ठीक-ठीक सुनने लग गया। रानी बोल रही थी—

ओठ जोवबंधु वारौं, हाँसी सुधाकंद वारौं,
कोटि कोटि चंद वारौं राधे मुख चंद पै।

रानीके मुखसे बार-बार इसकी आवृत्ति हो रही थी। मैं चकित होकर सोचने लग गयो कि अजब बात है। अपने मुखसे आज मेरी रानी अपनी शोभा-वर्णन कर रही हैं; पर तुरंत समझ गयी कि रानी प्यारे श्यामसुन्दरके भावसे आविष्ट होकर अपने-आपको ही श्यामसुन्दर मान रही हैं। फिर देखती हूँ कि रानी हाथोंको ठोडीपर रखकर कह रही हैं—ओह! व्रजका प्रत्येक कुञ्ज छान डाला, घरका कोना-कोना देख लिया, पर प्रिया नहीं मिली। ओह! मुझे छोड़कर चली गयी। पर कहाँ गयी? हाय, हाय, उसने प्राण तो नहीं दे दिये? वह यमुनामें तो नहीं कूद पड़ी? बस, बस, अब चलो, मैं भी यमुनामें कूदकर अपना जीवन समाप्त कर दूँ। पर कहीं वह जीती हो तो! आह! फिर तो मेरे बिना उसके प्राण निकल जायेंगे। न····· नहीं, नहीं, उसने प्राण नहीं दिये हैं। कहीं छिप गयी है। आह! बरसाने तो नहीं चली गयी? बस, बस, वहीं गयी है। बिल्कुल यही बात है। पर!·····मैं वहाँ कैसे पहुँचूँ? हाय! मेरे प्राणोंकी रानी! तू मुझे छोड़कर चली गयी है, मुझसे रूठ गयी है। हाँ, हाँ, तुमने उचित ही किया है, मैं इसीके योग्य हूँ। पर, प्रिये! मेरा हृदय फट रहा है। एक क्षण भी तुम्हारे बिना जीवन नहीं रहेगा। मेरी हृदयेश्वरि! ना, ना, इतना कड़ा दण्ड मैं नहीं सह सकूँगा। मुझे क्षमा करो! ओह! क्या करूँ? किससे कहूँ? हाय, कोई मेरी प्रियाके पास मेरी बात पहुँचा दो! अच्छा, एक पत्र लिख देता हूँ, इसे ही मेरी प्रियाको दे देना। पत्रोत्तर आनेतक प्राणोंको किसी प्रकार रोके रहूँगा।

तोता! यह कहकर रानी बैठ गयीं। पासमें कमलके पत्तेपर फूल रखे हुए थे। रानीने फूलोंको बिखेर दिया। पत्तेके चार टुकड़े करके एक टुकड़ा ले लिया तथा उसपर नखसे यह लिखने लगीं—

क्षम्यतामपरं कदापि तवेदृशं न करोमि।
देहि सुन्दरि दर्शनं मम मन्मथेन दुनोमि॥ (गीतगोविन्द-३।७)

इसे लिखकर रानी समाधिस्थ हो गयीं। कुछ देर बाद आँखें खोलकर उस पत्तेकी ओर देखने लगीं तथा आनन्दमें भरकर बोलीं—प्राणनाथने पत्र भेजा है? अच्छा, पढ़ूँ, क्या लिखा है?

पत्र पढ़कर हृदयसे लगाया और पुनः बड़बड़ करने लग गयीं—आह! मेरे जीवनधन! तुमने तो कोई अपराध नहीं किया है? हाय! किसने तुमसे झूठी बात कह दी है! मैं कहाँ रूठी हूँ? आह! पता नहीं, तुमने कहाँसे यह पत्र लिखा है? हाय! न जाने तुम्हारी क्या दशा हो रही होगी? ललिते! विशाखे! रूप! अरे विमले! तुम सब कहाँ चली गयीं? अरे, दौड़ो। प्यारे श्यामसुन्दरको ढूँढ लाओ; व्याकुलताकी अवस्थामें उन्होंने पत्र लिखा है। आह! मेरे प्राणनाथ। तुम्हें मेरे बिना.....।

राधिका कान्ह को ध्यान धरैं
तब कान्ह ह्वै राधिका के गुन गावैं।
त्यों बंसुआ बरसै बरसानै को
पाती लिखैं लिखि राधे को ध्यावैं॥
राधे ह्वै जाय घरीक में दैव
सुप्रेम को पाती लै छाती लगावैं।
आपुने आपुही में उरझैं
सुरझैं उरझैं समुझैं समुझावैं॥

यह कहती हुई पत्रको पुनः छातीसे लगाकर समाधिस्थ हो गयीं। तोता! मैं तो किंकर्तव्यविमूढ-सी हो गयी, पर तुरंत ही श्यामसुन्दरको खबर देने दौड़ी। कुछ ही दूरपर श्यामसुन्दर मिल गये; पर जो देखा, उसे देखकर सिरसे पैरतक जल उठी। देखती हूँ—एक वृक्षके नीचे श्यामसुन्दर बैठे हैं। सामने एक अत्यन्त सुन्दर रमणी बैठी है। श्यामसुन्दर उस रमणीके कपोलोंपर चन्दनसे चित्र बना रहे हैं। तोता! मैं तो देखकर सह नहीं सकी। सोचने लगी कि अभी-अभी इनके विरहमें रानीकी वैसी दशा देखकर आयी हूँ और यहाँ इन्हें इस रूपमें देख रही हूँ। यह सोचते-सोचते मैं मूर्च्छित हो गयी। पता नहीं, कितनी देर बाद मुझे होश हुआ। होश आनेपर वहाँ श्यामसुन्दर नहीं दीख पड़े। उठकर

पुनः सूर्य-मन्दिरमें आयी। वहाँ देखती हूँ कि चहल-पहल मच रही है। मेरी रानीके साथ श्यामसुन्दर असीम प्यार प्रदर्शित कर रहे हैं। उसी समयसे मैं बावलीकी तरह रट रही हूँ कि श्यामसुन्दर बड़े निठुर हैं, बड़े कपटी हैं।

सारी यह कहते-कहते जोशमें आ जाती है तथा बड़े जोरसे कह उठती है—तोता! चाहे मान या मत मान, पर श्यामसुन्दर सचमुच बड़े निठुर हैं, बड़े कपटी हैं, बड़े लम्पट हैं। यह हजार बार, लाख बार कह रही हूँ।

सारीकी यह बात सुनकर निकुञ्जमें बैठे हुए श्यामसुन्दर, राधारानी एवं सखियाँ, सभी जोरसे एक साथ ही हँस पड़ते हैं। उनकी हँसी सुनते ही वृक्षके सभी पक्षी चकित होकर उधर ही देखने लगते हैं। श्यामसुन्दर धक्का देकर निकुञ्जके उत्तरी दरवाजेको खोल देते हैं तथा प्रियाके कंधेपर हाथ रखे हुए बाहर निकल पड़ते हैं। सखियाँ एवं वृन्दा भी पीछे-पीछे बाहर निकल आती हैं। श्यामसुन्दर वृन्दाको उस तोता एवं सारीको बुलानेके लिये इशारा करते हैं। वृन्दा तोता एवं सारीको बुलाती है। दोनों आ जाते हैं। ललिता हँसती हुई कहती है—सारी! तू ठीक कह रही है, ये बड़े ही लम्पट हैं।

सारी शर्मा जाती है।

श्यामसुन्दर कहते हैं—सारी! आ, मैं झगड़ेका फैसला कर देता हूँ।

श्यामसुन्दर सारीको उठाकर अपने हाथपर रख लेते हैं तथा रानीके हाथपर तोतेको रख देते हैं। ऐसा करके वृन्दासे कहते हैं—वृन्दे! तोतेसे पूछ, तोता क्या देख रहा है।

वृन्दा कहती है—तोता! बता, तू क्या देख रहा है?

तोता अतिशय उल्लासके साथ मधुर कण्ठसे कह उठता है—आह! रानीके रोम-रोममें अणु-अणुमें मैं प्यारे श्यामसुन्दरको देख रहा हूँ।

वृन्दा आनन्दमें भरकर सारीसे पूछती है—सारी! तू क्या देख रही है?

सारी गद्‌गद कण्ठसे कहती है—जय हो ! प्यारे श्यामसुन्दरके रोम-रोममें, अणु-अणुमें मेरी राधारानी हैं ! जय हो ! जय हो !!

सारीकी कण्ठ-ध्वनिमें ध्वनि मिलाकर सभी पक्षी बोल उठते हैं—जय हो ! जय हो !! जय हो !!! जय हो !!!!

श्यामसुन्दर मेवा मँगवाकर अपने हाथसे तोता एवं सारीको खिलाते हैं। मेवा खाकर प्रिया-प्रियतमके चरणोंमें सिर नवाकर तोता एवं सारी दोनों पुनः वृक्षपर जा बैठते हैं। श्यामसुन्दर एवं रानी मेवा बिखेर देते हैं। पक्षियोंका समूह उसपर टूट पड़ता है। बीचमें 'जय हो ! जय हो !!' की ध्वनि करते हुए भी पक्षी मेवा चुगने लगते हैं तथा प्रिया-प्रियतम दस कदम उत्तरकी ओर बढ़कर एक पनस-वृक्षकी छायामें जाकर खड़े हो जाते हैं।

॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

अक्षक्रीड़ा लीला

श्रीप्रिया-प्रियतम कटहल-वृक्षसे बने हुए अत्यन्त सुन्दर निकुञ्जमें विराजमान हैं। चार अत्यन्त सुन्दर कटहलके वृक्ष आठ-आठ गजकी दूरीसे चारों कोनोंमें स्थित हैं। उनकी मोटी-मोटी शाखाएँ आपसमें जुड़कर गुम्बदके आकारकी बन गयी हैं। कटहल-वृक्षोंको चारों ओरसे घेरकर अंगूरकी लताएँ फैली हैं, जिनमें गुच्छे-के-गुच्छे अंगूरके फल लटक रहे हैं। चारों कटहलके वृक्ष भी फलसे भरे हैं। छोटे-बड़े सब आकारके पनस-फल (कटहलके फल) वृक्षोंसे लटक रहे हैं। कुछ पके हुए भी हैं तथा उनसे अत्यन्त मीठी सुगन्धि निकल-निकलकर सम्पूर्ण वातावरणको सुवासित कर रही है।

चारों दिशाओंमें चार दरवाजे हैं। दरवाजोंके पास अंगूरकी बेलें फैली हुई हैं। इन बेलोंमें अंगूर लटक रहे हैं। अंगूर सहित फैली हुई बेलोंकी शोभा ऐसी है मानो झालर टँग रही हो। छोटे-छोटे पक्षी बेलों एवं वृक्षोंपर इधरसे उधर, उधरसे इधर फुदक रहे हैं। ये पक्षी इतनी मीठी ध्वनिसे बोल रहे हैं कि समस्त निकुञ्ज एक अनिर्वचनीय मधुर धीमी स्वर-लहरीसे गुञ्जित हो रहा है।

निकुञ्जके सहनके किनारे-किनारे एक विचित्र जातिके छोटे-छोटे तीन-तीन अंगुल ऊँचे नीले रंगके पौधे उगे हुए हैं तथा वे पौधे आपसमें इतने जुड़े हुए हैं कि केवल उनकी छोटी-छोटी पत्तियाँ ही दीख रही हैं, जड़ बिल्कुल नहीं दीखती। ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो तीन हाथ चौड़ी मखमली कालीन निकुञ्जके किनारे-किनारे बिछ रही हो। निकुञ्जका शेष अंश ठीक उसी प्रकारके नीले रंगके किसी तेजस् पत्थरसे पटा हुआ है। फर्श इतना चिकना है कि झुकते ही उसपर अपने मुखका नीला-नीला प्रतिबिम्ब दीखने लगता है।

निकुञ्जके बीचके स्थलमें पीले रंगकी चादर बिछी हुई है। इसी चादरपर श्रीप्रिया-प्रियतम एवं सखियाँ अक्षक्रीड़ा खेलनेके लिये बैठी हुई हैं। श्रीप्रिया पूर्वकी ओर मुख किये हुए तथा श्यामसुन्दर पश्चिमकी ओर मुख किये हुए बैठे हैं। श्रीप्रियाकी दाहिनी ओर ललिता बैठी हैं एवं बायीं ओर चित्रा। श्रीश्यामसुन्दरकी बायीं ओर विशाखा घुटना टेके बैठी हैं तथा दाहिनी ओर दक्षिणकी ओर मुख किये हुए इन्दुलेखा बैठी हैं। चम्पकलता विशाखाकी बायीं ओर अपने दाहिने हाथसे विशाखाके बायें कंधेको पकड़े हुए बैठी हैं। तुङ्गविद्या ललिता एवं श्रीप्रियाके बीचकी जगहमें कुछ पीछे हटकर बैठी हुई हैं। रङ्गदेवी श्रीप्रिया एवं चित्राके बीच कुछ पीछे हटकर बैठी हैं। सुदेवी इन्दुलेखा एवं चित्राके बीचकी जगहमें कुछ पीछे हटकर बैठी हैं। मञ्जरियाँ उन्हें चारों ओरसे घेरकर खड़ी हैं। खड़ी हुई मञ्जरियोंकी दृष्टि बढ़ी हुई है श्रीप्रिया-प्रियतम एवं सखियोंपर, जो अक्षक्रीड़ा आरम्भ करनेवाली ही हैं। निम्न चित्रसे स्पष्ट रूपसे ज्ञात हो सकता है कि श्रीप्रिया-प्रियतमके साथ अन्य सखियाँ किस-किस दिशामें कहाँ-कहाँ बैठी हैं।

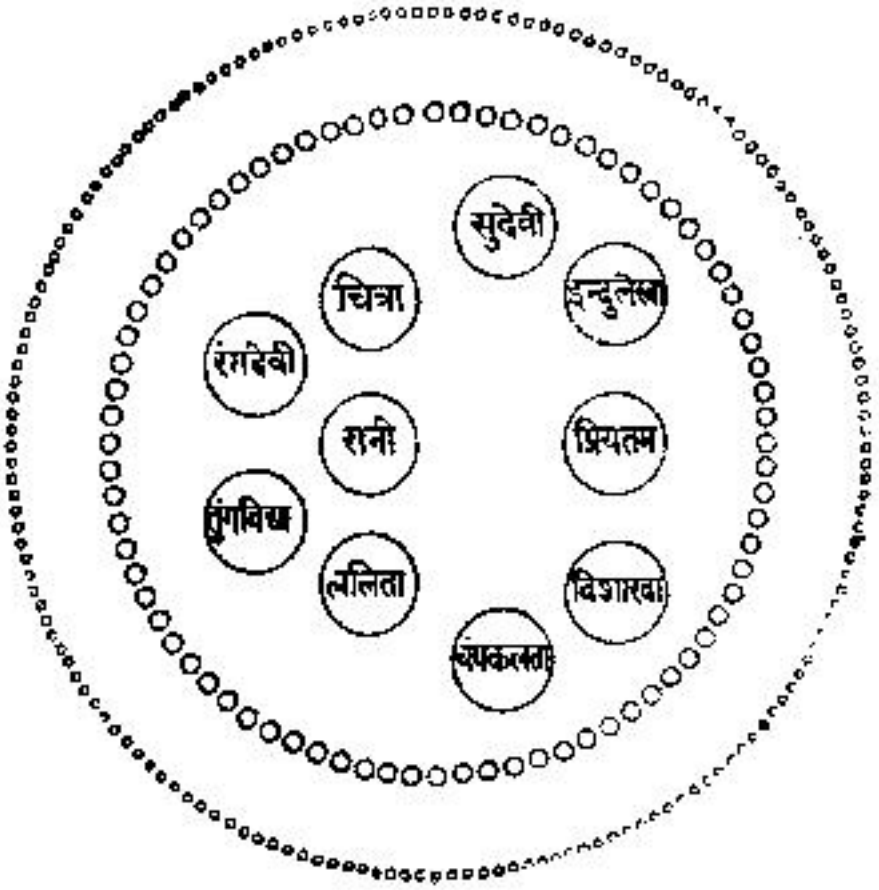

श्रीप्रिया-प्रियतमके बीचमें एक हाथ लम्बा एवं एक हाथ चौड़ा कपड़ेका टुकड़ा रक्खा हुआ है, जो अत्यन्त सुन्दर जरीकी कारीगरीके कारण चमचम कर रहा है। अक्षक्रीड़ाके दाँवकी सूचना देनेके लिये यह इस प्रकारसे चिह्नित है—

नेत्र १	नेत्र २	कपोल ३	कपोल ४
अधर ५	ललाट ६	ठोढ़ी ७	ओष्ठ ८
हाथ ९	नासिका १०	हृदय ११	हाथ १२
मुकुट १३	चरण १४	चरण १५	मुरली १६

अब अक्षक्रीड़ा आरम्भ होनेके पूर्व श्रीप्रिया कहती हैं—ना, मैं आज अपना दाँव सबसे पहले चुन लूँगी।

श्यामसुन्दर कहते हैं—वाह! यह कैसे होगा? नियमानुसार जिसका नाम आयेगा, वह पहले चुनेगा।

श्यामसुन्दरकी बात सुनकर श्रीप्रियाके मुखारविन्दपर विशुद्ध मुस्कान छा जाती है तथा वे कहती हैं—देखो, तुम प्रतिदिन कुछ-न-कुछ चालाकी अवश्य करते हो, नहीं तो प्रतिदिन पहले तुम्हारा ही दाँव कैसे आ जाता है? ना, आज वैसे नहीं, पहले मैं अपना दाँव चुन लूँगी, फिर कोई भी चुने।

रानीकी बात सुनकर श्यामसुन्दर मुस्कुराते हुए कहते हैं—अच्छा, आज

यदि पहले मेरा दाँव आया तो मैं वह दाँव तुम्हें दे दूँगा और तुम्हारा जो दाँव होगा, वह मैं ले लूँगा। क्यों, यह तो मंजूर है ?

रानी हँसकर कहती हैं—हाँ, यह मंजूर है।

रानीके यह कहते ही अत्यन्त सुन्दर परातमें गुलाबके अतिशय सुन्दर दस फूलोंको लिये हुए वृन्दा दक्षिणकी ओरसे आकर खड़ी हो जाती हैं। गुलाबके फूल इस प्रकार रखे हुए हैं कि दल नीचेकी ओर तथा डंटी ऊपरकी ओर हैं। वृन्दा परात रख देती हैं तथा पूर्व-उत्तरकी ओर मुख करके ललिता एवं चम्पकलताके बीचमें जो जगह थी, वहीं बैठ जाती हैं। अपनी आँखें हाथोंसे मूँद लेती हैं तथा कहती हैं—तुमलोग अपनी इच्छानुसार स्थान परिवर्तन कर लो।

अब सबसे पहले ललिता परातमें हाथ डालती हैं तथा फूलोंका स्थान इधर-उधर कर देती हैं। उसके बाद श्यामसुन्दर फूलोंका स्थान बदल देते हैं। फिर वृन्दा पूछती हैं—क्यों, हो गया ?

श्यामसुन्दर कहते हैं—हाँ, आँखें खोलो !

वृन्दा आँखें खोलती हैं तथा अपनी एक दासीको बाहरसे बुलवाती हैं। दासी आ जाती है। वृन्दा उसे इशारा करती हैं। वह पहले एक फूल रानीको देती है, इसके बाद एक फूल श्यामसुन्दरको, फिर ललिता, विशाखा, चित्रा, इन्दुलेखा, चम्पकलता, रङ्गदेवी, तुङ्गविद्या एवं सुदेवी—आठोंको क्रमशः एक-एक फूल दे देती है।

श्यामसुन्दरको जो फूल मिला, उसपर सातके अङ्कका चिह्न निकला। रानीको जो फूल मिला, उसपर तीनका चिह्न मिला। ललिता, विशाखा, चित्रा, इन्दुलेखा, चम्पकलता, रङ्गदेवी, तुङ्गविद्या एवं सुदेवीके फूलोंपर क्रमशः ५, ६, ८, ४, ९, २, १०, १ के चिह्न थे। अतः यह निर्णय हो गया कि सर्वप्रथम (१) सुदेवीको दाँव चुन लेनेका अधिकार है। इसके बाद क्रमशः (२) रङ्गदेवी, (३) राधारानी, (४) इन्दुलेखा, (५) ललिता, (६) विशाखा, (७) श्यामसुन्दर, (८) चित्रा, (९) चम्पकलता एवं (१०) तुङ्गविद्या दाँव चुनेंगी।

श्यामसुन्दर कहते हैं—हाँ, सुदेवी ! तू कौन-सा चुनती है ?

सुदेवी मुस्कुराकर ललिताकी ओर देखती हैं। फिर सोचकर कहती हैं—मैं तीन नम्बरके कोष्ठको अपना दाँव स्वीकार कर रही हूँ।

अब रङ्गदेवीकी बारी आती है। वे छः नम्बरका कोष्ठ स्वीकार करती हैं।

रानी कुछ सोचकर कहती हैं—मैं नवम कोष्ठ ले रही हूँ।

इसके बाद इन्दुलेखा आठवाँ, ललिता दूसरा, विशाखा चौदहवाँ कोष्ठ ले लेती हैं।

अब श्यामसुन्दरकी बारी आती है। श्यामसुन्दर एक तीक्ष्ण दृष्टि सभी कोष्ठोंपर डालकर धीरेसे कहते हैं—मैं बारहवाँ कोष्ठ स्वीकार करता हूँ।

श्यामसुन्दरके बाद चित्रा ग्यारहवाँ कोष्ठ, चम्पकलता चौथा एवं तुङ्गविद्या पाँचवाँ कोष्ठ स्वीकार कर लेती हैं।

अब वृन्दा बहुत सुन्दर नीले मखमलकी बनी हुई एक छोटी पोटली अपनी कञ्चुकीसे निकालती हैं और उस पोटलीको खोलती हैं। पोटलीमें अत्यन्त सुन्दर किसी पीले रंगकी तैजस् धातुकी बनी हुई सोलह कौड़ियाँ हैं। कौड़ियाँ इतनी सुन्दर हैं एवं इतनी चिकनी हैं कि देखते ही चकित हो जाना पड़ता है। प्रत्येक कौड़ीपर गलबाँही डाले प्रिया-प्रियतमकी अतिशय सुन्दर छवि अङ्कित है। छवि इतनी कारीगरीसे बनायी हुई है कि बिलकुल सजीव-सी प्रतीत हो रही है। कौड़ियोंपर प्रिया-प्रियतमकी छवि देखकर सबका मन खिल उठता है।

अब वृन्दादेवी खेल प्रारम्भ होनेकी आज्ञा देती हैं। वृन्दादेवी कहती हैं—आजके खेलमें यह स्थिर कर रही हूँ कि

(१) जिस-जिसने जो दाँव चुन लिया है, उसे अपनी बारी आनेपर १६ कौड़ियोंको उछालकर, दाँवकी जो संख्या है, उतनी कौड़ियाँ चित्त गिरानेकी चेष्टा करनी चाहिये। यदि उतनी चित्त नहीं गिरीं तो वह दाँव

हारी हुई समझी जायेगी तथा उस संख्याके दाँव-कोष्ठपर जिस अङ्कका नाम अङ्कित है, उसपर, सखी हारेगी तो सखीके उस अङ्कपर श्यामसुन्दरका एवं श्यामसुन्दर हारेंगे तो श्यामसुन्दरके उस अङ्कपर सखीका अधिकार समझा जायेगा।

(२) यदि उतनी कौड़ियाँ उसने चित्त गिरा दीं तो दाँवकी जीत समझी जायेगी तथा उस कोष्ठपर जिस श्रीअङ्कका नाम अङ्कित है, उस अङ्कपर (यदि सखी जीतेगी तो श्यामसुन्दरके उस अङ्कपर सखीका और श्यामसुन्दर जीतेंगे तो सखीके उस अङ्कपर श्यामसुन्दरका) अधिकार समझा जायेगा।

(३) प्रत्येक सखी एवं श्यामसुन्दरका दाँव अलग-अलग समझा जायेगा, अर्थात् एक सखी एवं श्यामसुन्दर, फिर एक सखी एवं श्यामसुन्दर, इस प्रकार दो-दोका दाँव रहेगा।

(४) प्रत्येक हारी हुई सखीके बाद श्यामसुन्दरको दाँव फेंकनेका अधिकार रहेगा।

(५) यदि किसीने सोलहों कौड़ियाँ चित्त गिरायीं तो उसके दाँवकी जीत तो हो ही गयी, साथ ही कोष्ठ-संख्या एकमें जो अङ्क है, प्रतिद्वन्द्वीके उस अङ्कपर भी उसका अधिकार हो जायेगा तथा तुरंत ही पुनः दाँव फेंकनेका (कौड़ियाँ उछालनेका) भी अधिकार होगा।

(६) लगातार कई बार सोलह कौड़ियाँ चित्त गिरानेवालेका यथायोग्य अधिकार प्रतिद्वन्द्वीके किन-किन अङ्कोंपर (अर्थात् कोष्ठ-संख्या एक-दो-तीन आदिमें निर्दिष्ट अङ्कोंपर किस क्रमसे) होगा, यह मैं उसी समय घोषित करूँगी।

अब खेल प्रारम्भ होता है। सर्वप्रथम सुदेवी कौड़ियोंको उछालती हैं। सुदेवीका दाँव तीन संख्याका था, पर कौड़ियाँ दो चित्त गिरीं एवं चौदह पट! श्यामसुन्दर खिलखिलाकर हँस पड़ते हैं। वृन्दा कहती हैं—यह पहला दाँव था, पर सुदेवी हार गयी हैं। हाँ, पहला दाँव होनेके कारण मैं निर्णय-कर्त्रीके विशेष अधिकारसे यह सुविधा सुदेवीको दे रही

हूँ कि श्यामसुन्दर भी अब इस बार दाँव फेंकते समय यदि हार गये तो सुदेवीको हार भी रह समझी जायेगी; पर कहीं जीत गये तो सुदेवीकी हार तो कायम ही रही, साथ ही कोष्ठ-संख्या एकपर जो अङ्क है, उसपर भी बिना दूसरी बार दाँव जीते ही श्यामसुन्दरका अधिकार समझा जायेगा। क्यों सुदेवी! स्वीकार है या नहीं?

वृन्दाकी बात सुनकर सुदेवी विचारमें पड़ जाती हैं। यद्यपि हृदय तो, हार हो या जीत हो, दोनों अवस्थाओंमें ही प्रेमसे थिरक-थिरककर नाच रहा है, पर बाहर गम्भीर-सी मुद्रामें वे कहती हैं--ललिते! क्या करूँ?

ललिता कहती हैं—तू मान ले, देखा जायेगा।

सुदेवी हाँमी भर लेती हैं। अब श्यामसुन्दर कौड़ियाँ उछालते हैं तथा इस चतुराईसे उछालते हैं कि सोलहों कौड़ियाँ चित्त गिरती हैं। यह देखकर श्यामसुन्दर तो प्रसन्नतासे भर उठते हैं। सुदेवी कुछ शर्मा जाती हैं। श्यामसुन्दर कहते हैं—वृन्दे! पहलेसे स्पष्ट घोषणा करती चली जा, नहीं तो क्या पता, ये सब पीछे-से बेईमानी करेंगी।

वृन्दा प्यारमें भरकर कुछ देर सोचकर कहती हैं—श्यामसुन्दरका सुदेवीके बायें कपोलपर, बायें नेत्रपर, बायें हाथपर एवं दाहिने नेत्रपर भी अधिकार हो गया तथा नियमके अनुसार श्यामसुन्दरको फिरसे दाँव फेंकनेका अधिकार है।

वृन्दाकी बात सुनकर श्यामसुन्दर फिर दाँव फेंकते हैं तथा इस बार तेरह कौड़ियाँ चित्त गिरती हैं। श्यामसुन्दर कुछ लजा-से जाते हैं। सुदेवी प्रसन्न हो जाती हैं। वृन्दा कहती हैं— इस बार दाँव श्यामसुन्दर हार गये हैं, इसलिये श्यामसुन्दरके बायें हाथपर सुदेवीका अधिकार हो गया। इसके बाद रङ्गदेवी दाँव फेंकेंगी।

वृन्दाकी बात सुनकर रङ्गदेवी कौड़ियाँ उछालती हैं तथा छः कौड़ियाँ चित्त गिरती हैं। वृन्दा कहती हैं-- रङ्गदेवी दाँव जीत गयी हैं, इसलिये श्यामसुन्दरके ललाटपर रङ्गदेवीका अधिकार हो गया है। अब मेरी प्यारी रानी दाँव फेंकेंगी।

अब रानीकी बारी आते ही श्यामसुन्दर एवं सभी सखियों-मञ्जरियोंका मन उत्कण्ठासे भर जाता है। रानी अतिशय उत्कण्ठासे कौड़ियोंको हाथमें ले लेती हैं। प्यारे श्यामसुन्दरके मुखारविन्दकी ओर ताकती हुई कौड़ियाँ उछाल देती हैं। इस बार ८ कौड़ियाँ चित्त तथा शेष ८ कौड़ियोंमें एक कौड़ी दूसरी दो कौड़ियोंपर चढ़ी हुई आधी चित्त गिरी। ललिता तुरंत बोल उठती हैं—यह आधी कौड़ी भी पूरी समझी जायेगी, इसलिये मेरी प्यारी सखीकी ही जीत हुई है।

श्यामसुन्दर कहते हैं—वाह! क्या मनमानी कहनेसे बात बन जायेगी? कौड़ियाँ ८ चित्त गिरी हैं, तुम्हारी सखी हार गयी है।

श्यामसुन्दर एवं अन्य सखियोंमें बात होने लगती है। सखियाँ कहती हैं—नहीं, मेरी प्यारी राधाकी जीत हुई है।

श्यामसुन्दर रानीसे कहते हैं—नहीं, तू हार गयी है।

वृन्दापर निर्णयका भार था ही। अतः सब सखियाँ एवं श्यामसुन्दर वृन्दाकी ओर देखने लगते हैं। वृन्दा कुछ सोचकर कहती हैं—जीत तो रानीकी हुई प्रतीत होती है, पर प्यारे श्यामसुन्दरका संदेह मिटानेके लिये मैं यह आज्ञा दे रही हूँ कि रानी उन तीनों कौड़ियोंको फिरसे उछाल दें। यदि तीनोंमेंसे दो कौड़ियाँ रानी चित्त गिरा सकीं तो उसकी जीत समझी जायेगी। यदि तीनों चित्त गिरेंगी तो बिना दूसरा दाँव फेंके रानीका श्यामसुन्दरके दाहिने हाथपर भी अधिकार हो जायेगा; पर कहीं एक चित्त गिरी तो किसीको हार-जीत नहीं मानी जाकर रानीको फिरसे दाँव फेंकना पड़ेगा। क्यों श्यामसुन्दर, मंजूर है?

श्यामसुन्दर कुछ मुस्कुराते हुए श्रीप्रियाकी ओर देखकर धीरेसे कहते हैं—ठीक है, यही सही।

रानी कौड़ियाँ उछालती हैं। तीनों कौड़ियाँ चित्त गिरती हैं। सखियोंमें हँसीका प्रवाह बह जाता है। श्यामसुन्दर भी हँसने लगते हैं। वृन्दा भी कहती हैं—श्यामसुन्दरके दोनों हाथोंपर रानीका अधिकार हो गया।

अब क्रमशः सखियाँ दाँव फेंकती हैं। इन्दुलेखाके द्वारा दाँव फेंके जानेपर दस कौड़ियाँ चित्त गिरती हैं। वृन्दा कहती हैं—इन्दुलेखा दाँव हार गयीं, इसलिये इन्दुलेखाके ओष्ठपर श्यामसुन्दरका अधिकार हो गया। श्यामसुन्दर! तुम दाँव फेंको।

श्यामसुन्दर दाँव फेंकते हैं। बारह कौड़ियाँ चित्त गिरती हैं। वृन्दा कहती हैं—इन्दुलेखाके बायें हाथपर श्यामसुन्दरका अधिकार।

अब ललिताकी बारी आती है। इस बार सभी कौड़ियाँ उठाकर श्यामसुन्दर ललिताके हाथमें दे देते हैं। ललिता हँसती हुई कौड़ियोंको पकड़ लेती हैं तथा कहती हैं—तुम्हारी स्पर्शकी हुई कौड़ी है। पता नहीं, तुमने जादू-टोना किया होगा। देवी कात्यायिनी मेरी सहायता करें, रक्षा करें।

देवीका स्मरण करके ललिता कौड़ियाँ उछाल देती हैं। सोलहों कौड़ियाँ चित्त गिरती हैं। सभी हँसने लगती हैं। कौड़ियाँ उठाकर पुनः ललिता उछाल देती हैं। इस बार भी सोलहों कौड़ियाँ चित्त गिरती हैं। सखियोंमें हँसीका मानो तूफान-सा उठने लगा। रानी प्यारीमें मरकर ललिताको अपने दाहिने हाथसे खींचकर शरीरसे सटा लेती हैं। ललिता पुनः कौड़ियोंको उछालती हैं। इस बार तीन चित्त गिरती हैं। श्यामसुन्दर हँस पड़ते हैं। वृन्दा कहती हैं—दो दाँवके अनुसार श्यामसुन्दरके दोनों नेत्रोंपर, दोनों कपोलोंपर ललिताका अधिकार हुआ। तीसरा दाँव ललिता हार गयीं; इसलिये ललिताके अधरपर श्यामसुन्दरका अधिकार है।

ललिता बहुत शीघ्रतासे कहती हैं—वाह वृन्दे! वाह, तुम्हें नियम भी याद नहीं है। मेरे स्वयंका दाँव तो मेरा दाहिना नेत्र है।

वृन्दा कहती हैं—ठीक! ठीक!! भूल गयी, अधरके बदले तुम्हारे दाहिने नेत्रपर श्यामसुन्दरका अधिकार रहा।

वृन्दाकी बात सुनकर सभी हँसने लगती हैं। अब पुनः श्यामसुन्दर कौड़ियाँ उछालते हैं। बारह कौड़ियाँ चित्त गिरती हैं। वृन्दा कहती हैं—ललिताके बायें हाथपर श्यामसुन्दरका अधिकार।

अब विशाखा दाँव फेंकती हैं। पन्द्रह कौड़ियाँ चित्त गिरती हैं। वृन्दा कहती हैं—विशाखाके बायें चरणपर श्यामसुन्दरका अधिकार।

श्यामसुन्दर पुनः कौड़ियाँ फेंकते हैं। चौदह कौड़ियाँ चित्त गिरती हैं। वृन्दा घोषणा करती हैं—श्यामसुन्दरके बायें हाथपर विशाखा का अधिकार।

चित्राका दाँव आता है। इस बार ठीक ग्यारह कौड़ियाँ चित्त गिरती हैं; पर श्यामसुन्दर जल्दीसे गिननेका बहाना करके एक कौड़ी और भी चित्त कर देते हैं तथा कहते हैं—ना, बारह कौड़ियाँ चित्त गिरी हैं, यह तो दाँव हार गयी।

ठीक इसी समय वृन्दाकी एक दासी वृन्दाके कानमें कुछ धीरेसे कहने लग गयी थी, इसमें वृन्दाका ध्यान उधर बँट गया। श्यामसुन्दरकी इस चतुराईको देख नहीं सकीं। अब तो प्रेमका कलह होने लग गया। ललिता-चित्रा आदि कहतीं—वाह! तुमने एक कौड़ी और चित्त कर दी है, दाँव चित्राने जीता है।

श्यामसुन्दर कहते हैं—वाह, जब मैंने सबसे बेईमानी नहीं की तो चित्रासे हमारा कोई बैर है कि बेईमानी करूँगा?

वृन्दा कुछ शर्मा-सी गयीं; क्योंकि भूल उनकी थी। उन्होंने ठीकसे देखा नहीं। दूसरी बातमें लग गयीं। वृन्दाने कहा—दूसरी बार दाँव फेंको।

इस प्रस्तावको अस्वीकार करते हुए चित्रा कहने लगीं—मैं अपना जीता हुआ दाँव छोड़कर जोखिम क्यों उठाऊँ?

श्यामसुन्दर कहते हैं—यह अवश्य ही हार गयी।

वृन्दा प्रार्थनाकी मुद्रामें रानीकी ओर देखती हुई कहती हैं—मेरी रानी, किसी प्रकार चित्रा मान ले। यह मेरी भूल थी कि मैं ठीकसे नहीं देख सकी।

रानी विचारने लगती हैं तथा कहती हैं—अच्छा, देख चित्रे! वृन्दाकी भूलके कारण यह गड़बड़ी हो गयी है, इसलिये फिरसे दाँव लगा। यदि तू जीत गयी तो फिर तो कोई प्रश्न ही नहीं है, पर यदि हार

गयी तो मैं वह दाँव ले लूँगी, (अर्थात् तुम्हें कुछ नहीं कहकर श्यामसुन्दर वह दाँव मुझसे वसूल करेंगे) तथा इसके पश्चात् जब श्यामसुन्दर कौड़ियाँ उछालेंगे तो उन्हें इस बार ग्यारहवीं संख्याका दाँव लगाना पड़ेगा। यदि श्यामसुन्दर हार गये, तब तो तुम्हारा दाँव आ ही जायेगा, पर कहीं जीत गये तो उतनी जोखिम फिर तू उठा ले। और तो क्या हो सकता है?

रानीकी बात सुनकर सभी एक स्वरसे सम्मति दे देती हैं। चित्रा मुस्कुराती हुई कौड़ियाँ पुनः उछालती है; पर इस बार दस कौड़ियाँ चित्त आती हैं। श्यामसुन्दर हँस पड़ते हैं। वृन्दा भी कुछ मुस्कुराकर कहती हैं—क्या बताऊँ?

श्यामसुन्दर हँसते हुए कौड़ियाँ उठा लेते हैं तथा कहते हैं—अब देख, तेरा एक-एक अङ्ग जीत लेता हूँ। वृन्दे, तू अभीसे मेरी जीतकी साफ-साफ घोषणा भले कर दे।

श्यामसुन्दर कौड़ियाँ उछालते हैं। सोलहों कौड़ियाँ चित्त गिरती हैं। फिर उछालते हैं। फिर सोलहों चित्त गिरती हैं। फिर उछालते हैं, फिर सोलहों चित्त गिरती हैं। इसके बाद तीन बार और उछालते हैं और तीनों बार ही सोलहों चित्त गिरती हैं। चित्रा तो लजा-सी जाती हैं। रानी इस बार कौड़ियोंको श्यामसुन्दरके हाथसे हँसती हुई छीन लेती हैं। श्यामसुन्दर हँसते हुए कहते हैं—वाह, वाह! अभी मेरा दाँव है।

श्यामसुन्दर कौड़ियोंके लिये छीना-झपटी करते हैं। रानी कौड़ियोंको दोनों मुट्ठियोंमें कसकर पकड़ लेती हैं। श्यामसुन्दर कौड़ी लेना चाहते हैं। रानी छोड़ना नहीं चाहतीं। श्यामसुन्दर वृन्दासे कहते हैं—देख वृन्दे! तू चुपचाप बैठी रहेगी? क्यों?

वृन्दा कहती हैं—रानी! दाँव श्यामसुन्दरका है, कौड़ियाँ उन्हें दे दो।

ललिता कहती हैं—तुमने ही तो सब गड़बड़ मचायी है। अब श्यामसुन्दरका पक्ष करने चली है।

वृन्दा हँसने लगती हैं। रानी कौड़ियाँ पकड़े हुए उठ पड़ती हैं। श्यामसुन्दर भी चटपट उठ पड़ते हैं। श्यामसुन्दर एक चतुराई कर बैठते

हैं। वे रानीका अञ्चल पकड़ लेते हैं। अञ्चल पकड़ते ही कौड़ियोंको छोड़कर रानी उसे सँभालने लग जाती हैं। कौड़ियाँ झर-झर करती हुई जमीनपर गिर पड़ती हैं। श्यामसुन्दर हँसते हुए बैठ जाते हैं, कौड़ियाँ उठा लेते हैं। रानी भी हँसती हुई पुनः आसनपर पूर्ववत् बैठ जाती हैं। श्यामसुन्दर कौड़ियाँ उछालते हैं, पर इस बार पन्द्रह कौड़ियाँ चित्त गिरती हैं। वृन्दा कुछ क्षण कोष्ठको देखकर तथा अँगुलीपर दाँव गिनकर कहती हैं—चित्राके दाँवको रानीने लिया था। चित्रा दाँव हारी, इसलिये रानीके हृदयपर श्यामसुन्दरका अधिकार। इसके बाद श्यामसुन्दरने लगातार छः दाँव जीते हैं, इसलिये चित्राके हृदय, दोनों नेत्र, दोनों कपोल, अधर, ललाट, ठोढ़ी, ओष्ठ, दोनों हाथ एवं नासिकापर श्यामसुन्दरका अधिकार। अन्तिम दाँव श्यामसुन्दर हार गये, इसलिये श्यामसुन्दरके हृदयपर चित्राका अधिकार हुआ।

इस समय सभी हँस रहे हैं। अब चम्पकलता कौड़ियाँ उछालती हैं। चार कौड़ियाँ चित्त गिरती हैं। वृन्दा कहती हैं—श्यामसुन्दरके दाहिने कपोलपर चम्पकलताका अधिकार।

इसके बाद तुङ्गविद्या कौड़ियाँ उछालती हैं; पर चार कौड़ियाँ इस बार भी चित्त गिरती हैं। वृन्दा कहती हैं—तुङ्गविद्याके अधरपर श्यामसुन्दरका अधिकार।

अब सबसे अन्तमें पुनः श्यामसुन्दर कौड़ियाँ उठाते हैं; पर इस बार तेरह कौड़ियाँ चित्त गिरती हैं। वृन्दा कहती हैं—श्यामसुन्दरके बायें हाथपर तुङ्गविद्याका अधिकार।

वृन्दाके यह कहते ही चित्रा कोष्ठवाले कपड़ेको उलट देती हैं तथा उठकर भागने लगती हैं। और-और सखियाँ भी चटपट उठने लगती हैं। श्यामसुन्दर पहले दौड़कर चित्राको पकड़ लेते हैं। चित्रा हँसने लगती हैं। श्यामसुन्दर चित्राको लाकर वहीं पुनः बैठा देते हैं।

इसी समय उड़ता हुआ एक तोता निकुञ्जमें प्रवेश करता है तथा दरवाजेकी एक डालीपर बैठकर आँखोंको कोयोंमें घुमाकर कहता है—जय हो प्रिया-प्रियतमकी! आज्ञा हो तो कुछ निवेदन करूँ।

तोतेकी बात सुनकर शीघ्रतासे वृन्दा कहती हैं—हाँ, हाँ, जल्दीसे बोल!

तोता कहता है—मेरे प्यारे श्यामसुन्दर! मेरी प्यारी रानी!! मैं वृन्दादेवीकी आज्ञासे मोहन घाटपर स्थित कदम्बके पेड़पर बैठा हुआ पहरा दे रहा था। अभी कुछ क्षण पहले तुम्हारे (राधारानीके) महलसे एक सुन्दर ब्राह्मणकुमार एवं एक वृद्धा स्त्री निकली। दोनों आपसमें बातें कर रहे थे। वृद्धा कहती थी कि ब्राह्मणकुमार! मुझे पूर्ण आशा है कि आप मेरी प्रार्थना अवश्य-अवश्य मान लेंगे। जिस-किसी उपायसे भी आप मुझपर कृपा करके मेरी लालसा अवश्य पूर्ण करेंगे। ब्राह्मण-कुमार कहता था कि मैंने सारी परिस्थिति तुमसे बतला ही दी है। पूरी चेष्टा करूँगा, पर सफलता तो विधाताके हाथमें है। आज-आजका तो मैं वचन देता हूँ, उसे अवश्य भेज दूँगा। मैं भी आनेकी चेष्टा करूँगा तथा उसे राजी करनेकी भी हार्दिक चेष्टा तुम्हारे सामने भी करूँगा। आगे हरि-इच्छा। फिर ब्राह्मणकुमार एवं वह वृद्धा, दोनों दक्षिणकी तरफ बढ़ने लगे। प्रथम राजपथपर आते ही वह ब्राह्मणकुमार तो पूर्वकी ओर चला गया तथा वृद्धाने वह पगडंडी पकड़ी, जो गिरिवर-स्रोतकी ओर जाती है। वृन्दादेवीका यह आदेश था कि रानीके महलसे किसी वृद्धाको इस तरफ आती देखकर तुरंत उसी क्षण मुझे खबर दे देना। इसलिये मैं पूरी शक्ति लगाकर वहाँसे उड़ा और यहाँ आकर आपको यह सूचना दे रहा हूँ। मैं इतनी तेजीसे उड़ा हूँ कि वह वृद्धा अभीतक तीन-सौ गज भी आगे नहीं बढ़ सकी होगी।

तोतेकी बात सुनकर रानीका मुख बिलकुल उदास हो जाता है। श्यामसुन्दर भी गम्भीर बन जाते हैं; पर रानीकी दशा देखकर अपनी गम्भीरता छिपाते हुए उठ पड़ते हैं। सखियाँ भी सब गम्भीर हो जाती हैं। प्यारे श्यामसुन्दर रानीको अपने हृदयसे लगा लेते हैं। रानी हृदयसे लगकर गम्भीर श्वास लेने लगती हैं। वृन्दा ललितासे कहती हैं—समय कम है, शीघ्रता करनी चाहिये।"

ललिता गम्भीर मुद्रामें श्यामसुन्दरको कुछ इशारा करती हैं तथा रानीको पकड़ लेती हैं। अब धीरे-धीरे प्रिया-प्रियतम निकुञ्जके पूर्वी

फाटकसे निकलकर रविश (छोटी सड़क)पर पूर्वकी ओर चलने लगते हैं। श्यामसुन्दर श्रीप्रियाको सँभाले हुए चल रहे हैं। प्यारे श्यामसुन्दरसे अब कुछ देरके लिये अलग होना पड़ेगा, इस विचारसे प्रियाका प्राण छटपटाने लगा है। श्यामसुन्दरके प्राण भी छटपटा रहे हैं; पर वे अपनी व्याकुलता छिपाये हुए चल रहे हैं कि जिससे मेरी प्रिया कहीं मुझे व्याकुल देखकर और भी व्याकुल न हो जाये। लगातार कुछ देर पूर्वकी ओर चलकर फिर वे दक्षिणकी ओर मुड़ पड़ते हैं तथा उसी दिशामें कुछ देर चलते रहते हैं। चलते-चलते ललिताकुञ्जकी दक्षिणी सीमाकी चहारदीवारी आ जाती है। यहाँ एक छोटा फाटक है, उससे निकलकर फिर पूर्वकी ओर कुछ दूर चलते हैं। अब ललिताकुञ्ज एवं विशाखाकुञ्जके बीचसे उत्तर-दक्षिणकी ओर जो सड़क जाती है, उसपर आ पहुँचते हैं। श्यामसुन्दर पुनः श्रीप्रियाको हृदयसे लगा लेते हैं तथा कुछ क्षण वे उनके मुखारविन्दकी ओर देखते हुए गम्भीर मुद्रामें प्रियासे कुछ दूर अलग हटकर खड़े हो जाते हैं। फिर उत्तरकी ओर चलने लगते हैं। रानी एवं सखियाँ चुपचाप खड़ी रहकर निर्निमेष नयनोंसे उधर ही देखती रहती हैं। श्यामसुन्दर बार-बार गर्दन घुमा-घुमाकर रानीकी ओर प्रेमभरी दृष्टिसे देखते जा रहे हैं। करीब एक फर्लांग उत्तरकी तरफ जाकर एक फाटकसे विशाखाकी कुञ्जमें प्रवेश करके आँखोंसे ओझल हो जाते हैं। रानी कुछ क्षण एकटक उसी दिशाकी ओर देखती रहती हैं। फिर ललिताके कंधेको पकड़कर दक्षिणकी ओर सूर्य-मन्दिरमें जानेके उद्देश्यसे चल पड़ती हैं।

॥ विजयेतां श्रीप्रियाप्रियतमौ ॥

सूर्य पूजन लीला

अतिशय रमणीय सुन्दर उद्यानमें पूर्वाभिमुख सूर्य-मन्दिर स्थित है। मन्दिर सुन्दर संगमरमर पत्थरोंका बना हुआ है। मन्दिरकी बाहरी दालानकी सीढ़ियोंपर सखी-मण्डली-सहित राधारानी विराजमान हैं। रानीका मुख पूर्व एवं दक्षिणके कोनेकी ओर है। वे दालानके एक खंभेसे पीठ टेके एवं सीढ़ियोंपर पैर लटकाये बैठी हैं। रानीकी दाहिनी तरफ चित्रा खड़ी हैं। अन्यान्य सखियाँ रानीको घेरे-सी रहकर कुछ सीढ़ियोंपर एवं कुछ दालानमें बैठी हैं। सीढ़ियोंके बिल्कुल नीचे संगमरमरके बेंचके आकारका आसन है। उसीपर ललिता उत्तरकी ओर मुख किये तथा पैर लटकाये बैठी हैं।

उद्यानमें तमाल, मौलिश्री, आम्र, कदम्ब आदिके हरे-हरे, बड़े-बड़े वृक्ष जगह-जगह लगे हुए हैं। स्थान-स्थानपर क्यारियोंमें नाना प्रकारके अतिशय सुन्दर एवं सुगन्धित रंग-बिरंगे पुष्प खिल रहे हैं, जिनपर भ्रमरों एवं मधुमक्खियोंकी टोली मँडरा रही है। उद्यान पक्षियोंके सुन्दर कलरवसे गुञ्जित हो रहा है। एक पक्षी अतिशय सुरीले कण्ठसे अविराम बोल रहा है। उसकी ओर ध्यान देनेपर ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो पक्षी प्यारभरे हृदयसे अलाप लेकर पुकार रहा है—गोपीनाथ! गोपीनाथ !! गोपीनाथ !!!

मन्दिरके सामनेसे पूर्वकी ओर सीधे एक चौड़ी रविश (छोटी सड़क) उद्यानके पूर्वी फाटकतक गयी हुई है तथा उससे कुछ कम चौड़ी रविश दक्षिणी एवं उत्तरी फाटकतक भी बनी हुई है। अतिशय सुन्दर मल्लिका एवं कुन्द-पुष्पोंकी लम्बी क्यारियाँ रविशके किनारे-किनारे लगी हुई हैं। मन्दिरके सामने सूर्यमुखी पुष्पोंकी एक-एक क्यारी सड़कके दोनों किनारोंपर शोभा पा रही है। सूर्यमुखी वृक्षोंकी कद तो छोटी है, पर उनमें इतने सुन्दर-सुन्दर एवं इतने बड़े-बड़े फूल लग रहे हैं कि देखनेसे

प्रतीत होता है मानो फूलके छोटे-छोटे थाल वृक्षोंपर सजा दिये गये हों।

रानीके मुखारविन्दपर गम्भीरता छायी हुई है। छोटे-छोटे प्रस्वेदकण कपोलोंपर झलमल करते हुए दीख पड़ रहे हैं। रानीके चरणोंके पास बैठी हुई विलासमञ्जरी पुष्पोंके बने हुए पंखेसे धीरे-धीरे हवा कर रही है।

उधर उद्यानके पूर्वी फाटकपर रूपमञ्जरी खड़ी है। रूपमञ्जरीके बगलमें एक और मञ्जरी खड़ी है। रूपमञ्जरी उसीके कंधेपर हाथ रखे हुए खड़ी है तथा उत्तर-दक्षिणकी ओर जो पगडंडी वनमें जाती है, उसीकी ओर कभी उत्तरकी तरफ, कभी दक्षिणकी तरफ बार-बार देख रही है। वह इस प्रतीक्षामें खड़ी है कि इस रास्तेसे ऋषियोंके शिष्य आते-जाते रहते हैं। कोई मिल जाये तो उसे प्रार्थना करके ले जाऊँ, जिससे रानीकी सूर्य-पूजाका कार्य सम्पन्न हो सके। यदि कोई ब्राह्मणकुमार नहीं मिला, फिर तो बाध्य होकर अपने-आप पूजा करनी ही पड़ेगी, पर मिल जाये तो अच्छी बात है। साथ ही ब्राह्मणकुमारकी बाट देखनेमें यह भी एक उद्देश्य है कि इस प्रकार देरी हो जायेगी और दिनका अधिकांश समय वनमें बीत जायेगा; क्योंकि वनमें रानीको सान्त्वना देनेमें सखियोंको ज्यादा सुविधा रहती है।

इसी समय उत्तरकी ओरसे एक ऋषिकुमार आता हुआ दिखायी पड़ता है। रूपमञ्जरी उसी ओर देखती रहती है। ऋषिकुमार निकट आ जाता है। वह देखनेमें बड़ा ही सुन्दर है। रंग साँवला है। काले-काले सुन्दर केश कंधोंपर पीछे लटक रहे हैं। आँखोंसे इतनी सरलता टपक रही है मानो वह ऋषिकुमार पाँच वर्षका भोला-भाला शिशु हो। ब्रह्मतेजसे मुख दप-दप कर रहा है। उम्र पंद्रह साल प्रतीत होती है। दोनों चरण इतने सुकोमल हैं मानो गुलाबकी पंखुड़ी हो।

रूपमञ्जरी उसे देखकर एकबार तो स्तब्ध हो जाती है, पर फिर कुछ सँभलकर उसकी ओर देखने लगती है। अब ऋषिकुमार और निकट आ जाता है। निकट आकर रुक जाता है एवं मधुरतम कण्ठसे पूछता है—देवि! क्या तुम बतला सकती हो कि महर्षि शाण्डिल्यके आश्रमकी ओर कौन-सी पगडंडी जायेगी?

रूपमञ्जरीने ऐसा मधुर कण्ठ कभी सुना ही नहीं था। वह इस ध्वनिसे मंत्र-मुग्ध-सी हो गयी, बड़ी मुश्किलसे बोल सकी—क्यों, आप कौन हैं ?

ऋषिकुमार—देवि ! मैं महर्षि शाण्डिल्यका शिष्य हूँ। गुरुदेवने मुझे प्रातःकाल पुष्प लानेके लिये वनमें भेजा था। आज्ञा थी कि बेटा ! सुन्दर-से-सुन्दर पीले रंगके पुष्प लाना। उत्तरकी तरफ वनमें आगे बढ़नेसे तुम्हें सुन्दर-से-सुन्दर पीले-पीले पुष्प मिलेंगे। मैं उनकी आज्ञासे चलकर वनमें बहुत दूर निकल गया। पुष्प तो मुझे मिल गये, पर राह भूल गया। घूम-फिरकर मैं यहीं चला आता हूँ। पता नहीं चलता, किस दिशामें जाऊँ, आश्रम किस ओर है, क्योंकि मुझे घूमते-घूमते दिग्भ्रम भी हो रहा है। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि सूर्य आज पश्चिमसे पूर्वकी ओर बढ़ रहे हैं। अबतक मैंने न तो कुछ खाया है न जल पी सका हूँ। पुष्पोंका दोना हाथमें लिये वनमें मारा-मारा फिर रहा हूँ।

ऋषिकुमारकी वाणीसे अमृत झर रहा है। रूपमञ्जरीके हृदयपर वे शब्द मानो अधिकार-से करते जा रहे हैं। रूपमञ्जरीके मनमें किसी अहैतुक अनिर्वचनीय सरसताका उदय होने लगता है। वह कहती है—ऋषिकुमार ! आप महर्षि शाण्डिल्यके शिष्य हैं; पर मैंने आपको कभी नहीं देखा, यह कैसी बात है ? महर्षि शाण्डिल्यके दर्शन तो प्रतिदिन हो जाते हैं। उनके आठ-दस शिष्योंको भी मैं बहुत अच्छी तरह पहचानती हूँ; पर आपको मैंने उनके साथ कभी नहीं देखा।

ऋषिकुमार—देवि ! इसलिये ही तो मैं आज राह भूला हूँ। महर्षि मुझपर अत्यधिक स्नेह करते हैं, हृदयके समस्त प्यारको लेकर मानो दिन-रात मुझे अपने हृदयमें छिपाये रखना चाहते हों। इसीलिये मुझे कभी भी आश्रमके बाहर जानेकी आज्ञा नहीं मिली। महर्षिके आश्रमके चारों ओर एक सुन्दर रमणीय उद्यान है। बस, उस उद्यानकी प्रत्येक वस्तुको जानता हूँ, उसके अणु-अणुसे परिचित हूँ; पर बाहर कभी नहीं निकला। हाँ, यह उन्हींसे सुना है कि वे प्रतिदिन नन्दरायजीके घर जाया करते हैं। मैंने कई बार प्रार्थना भी की कि गुरुदेव ! एक बार हमें भी साथ चलनेकी आज्ञा हो। पर वे कहते कि ना, ना, बेटा ! मेरा यह उद्यान तुम्हारे बाहर

चले जानेपर बिल्कुल सूना हो जायेगा। पता नहीं, विधाताने मेरे किस पुण्यका फल दिया है कि तुम मेरे शिष्य बने हो। पर कल रातमें गुरुदेवको कोई स्वप्न हुआ, उसीके फलस्वरूप उन्होंने मुझे हृदयसे लगाकर प्रातःकाल पुष्प लानेकी आज्ञा दी। अब मैं तो रास्ता भूल गया हूँ और वे मेरी प्रतीक्षामें अत्यन्त व्याकुल हो रहे होंगे। अतः शीघ्र रास्ता बता दो। मैं तुम्हारा बहुत कृतज्ञ होऊँगा।

इसी समय ललिता वहाँ आ पहुँचती हैं। रूपमञ्जरीको देर होते देखकर वे रानीके पाससे फाटककी ओर चली आयी थीं। वहाँ रूपमञ्जरीको एक ऋषिकुमारसे बातें करते देखकर वे खड़ी होकर सुन रही थीं। रूपमञ्जरी तो बातोंमें इतनी संलग्न हो रही थी कि ललिताको नहीं देख सकी, पर ऋषिकुमारकी दृष्टि उनपर पड़ चुकी थी। अब जब ऋषिकुमारने अपनी बात समाप्त की तथा रूपमञ्जरीकी ओर पथ दिखलानेके उद्देश्यसे ताकने लगा तो ललिता सामने चली आयीं।

ललिता घुटने टेककर ऋषिकुमारको प्रणाम करती हैं तथा कहती हैं—ऋषिकुमार! मैं आपको प्रणाम कर रही हूँ। मैंने आपकी सारी बातें सुन ली हैं। मैं अपनी एक खास दासी आपके साथ कर दूँगी। वह आपको महर्षि शाण्डिल्यके आश्रमतक पहुँचा आयेगी; पर मैं आपको बिना कुछ खिलाये-पिलाये नहीं जाने दूँगी। आप रास्ता भूलकर आश्रमसे बहुत दूर आ गये हैं। महर्षिका आश्रम यहाँ से तीन कोससे भी अधिक दूर है। आपका मुख सूख गया है। आप किंचित् कलेवा करके जल पी लें तथा किंचित् विश्राम कर लें, फिर मैं सब व्यवस्था कर दूँगी।

ऋषिकुमार—देवि! आप तो असम्भव-सी बातें कर रही हैं। भला, गुरुदेवकी आज्ञाके बिना मैं अन्न-जल ग्रहण करूँ, यह कैसे हो सकता है?

ऋषिकुमारने इतनी दृढ़तासे यह बात कही कि ललिता बिल्कुल झेंप-सी गयीं; पर ऋषिकुमारके मुखपर कुछ इतना विचित्र आकर्षण है कि ललिताका मन बरबस उसकी ओर खिंचता जा रहा है। ललिता कुछ सोचने लगती हैं। वे सोचती हैं कि ओह! यह ऋषिकुमार सचमुच कितना दृढ़ है! पर आह! इसे बिना कुछ खिलाये-पिलाये जाने देनेकी बातसे तो मेरे प्राण छटपटा रहे हैं। फिर क्या करूँ? अच्छा इसे

एक बार सखी राधाके पास ले चलूँ। वहाँ जैसा होगा, वैसा विचार कर लूँगी। यह सोचकर ललिता कहती हैं—अच्छी बात है, ऋषिकुमार! आपकी जैसी प्रसन्नता; पर वहाँ मन्दिरके पास मेरी सखियाँ हैं। कृपया आप वहाँ चल चलें। वहाँसे मैं सब व्यवस्था कर दूँगी। रास्ता उधरसे ही है।

ऋषिकुमार—पर देवि! विशेष विलम्ब नहीं हो, यह ध्यान रखना।

ललिता—बिल्कुल नहीं, शीघ्र-से-शीघ्र व्यवस्था कर दूँगी।

ललिता आगे-आगे चल पड़ती हैं, पीछे-पीछे ऋषिकुमार, रूपमञ्जरी एवं अन्य मञ्जरियाँ चल रही हैं। चलकर मन्दिरके पास जा पहुँचती हैं। ऋषिकुमारके सौन्दर्यको देखकर सभी सखियाँ उठ पड़ती हैं। यहाँतक कि रानी भी उसकी ओर देखने लग जाती हैं। इधरसे ऋषिकुमार आदि पहुँचे और तभी उद्यानके दक्षिणी फाटककी ओरसे एक वृद्धा आ पहुँचती है। वृद्धाको देखकर सभी सखियाँ एवं रानी शान्तिके साथ बड़े आदर एवं विनयकी मुद्रामें खड़ी हो जाती हैं। वृद्धाके शरीरपर उजले रंगकी बिना पाड़की साड़ी है। गलेमें तुलसीकी माला तथा दाहिने हाथमें एक लकड़ी है। उसके बाल प्रायः सफेद हो गये हैं, अवश्य ही मुखाकृतिपर केवल एक-दो झुर्रियाँ दीख पड़ रही हैं।

सीढ़ीके नीचे जिस आसनपर पहले ललिता बैठी थीं, उसीपर ऋषिकुमार बैठ जाता है। ऐसा प्रतीत होता है मानो वह बिल्कुल थक गया हो। वृद्धा आकर उसके बगलमें खड़ी हो जाती है; पर ऋषिकुमारकी दृष्टि सीधे उत्तरकी तरफ लगी हुई है, अतः वह नहीं देखता। वृद्धा सीढ़ियोंपर चढ़ती हुई ऊपर चली जाती है तथा धीरेसे ललिताको बुलाकर उनके कानमें कहती है—बेटी! यह ऋषिकुमार कौन है?

ललिता धीरेसे, अभी जो-जो बातें हुई थीं, सब वृद्धासे बतला देती हैं। वृद्धा आश्चर्यमें भरी सब सुन लेती है तथा ऋषिकुमारकी ओर देखती रहती है। फिर ललितासे कहती है—इनका नाम क्या है?

ललिता जवाब देती हैं—नाम तो नहीं पूछ पायी हूँ।

वृद्धा कहती है—पूछ तो सही।

ललिता बढ़कर ऋषिकुमारके पास चली जाती है तथा हाथ जोड़कर कहती है—ऋषिकुमार! हम लोगोंकी माँ आपका नाम जानना चाहती हैं।

ऋषिकुमार बड़ी गम्भीरतासे कहता है—हमें लोग ब्रह्मचारी मन्मथमोहन कहते हैं।

यह सुनते ही वृद्धा अतिशय शीघ्रतासे सीढ़ियोंसे चटपट उतर पड़ती है तथा 'अहो भाग्य! अहो भाग्य!!'—इस प्रकार चिल्लाती हुई ऋषिकुमारके चरणोंके पास जाकर गिर पड़ती है। फिर जल्दीसे ललितासे कहती है—बेटी! ऋषिकुमारके चरणोंकी धूलि बटोर ले। मैं फिर पीछे सब बात तुम लोगोंको बता हूँगी। ओह! धन्य हैं, धन्य हैं। ऋषिकुमार! विधाताने असीम कृपा की कि आपने अपने-आप दर्शन दे दिया।

वृद्धा चरणोंमें लिपट जानेके लिये आगे बढ़ती है, तभी ऋषिकुमार तुरंत उठकर कुछ पीछे हट जाता है तथा अतिशय सरलता एवं गम्भीरताके स्वरमें कहता है—माँ! आप क्या कर रही हैं! ब्रह्मचारीके लिये स्त्री-स्पर्श सर्वथा निषिद्ध है।

ऋषिकुमारके ये शब्द वृद्धाके हृदयमें जादूका-सा काम करते हैं। उसकी आँखोंसे आँसुओंकी धारा बहने लगती है। वृद्धा आँखें पोंछती हुई गद्गद कण्ठसे कहती है—तभी तो··· ···तभी तो··· ···कह रही हूँ कि आपका दर्शन बड़े भाग्यसे मुझे मिला है। अभी थोड़ी देर पहले आपके गुरुभाई मध्वानन्दजी ब्रह्मचारीसे मिलकर आपके विषयमें सब सुन चुकी हूँ।

ऋषिकुमार मध्वानन्दका नाम सुनते ही बड़े आश्चर्यकी मुद्रामें बोल उठता है—माँ! मध्वानन्द तुम्हें कहाँ मिला?

वृद्धा—आपके गुरुदेवने आपको खोज लानेके लिये उन्हें भेजा है। गुरुदेवने आज्ञा दी है कि जहाँ मन्मथमोहन मिले, वहीं पहले उसे कुछ खिला-पिला देना। वह भूखा-प्यासा होगा। उसे मेरी आज्ञा सुना देना कि तुरंत वह खा-पी ले, नहीं तो मैं बहुत दुःखी होऊँगा। इतना ही नहीं,

गुरुदेवने साथमें भगवत्प्रसाद एवं जल भी स्नेहवश भेजा है। मध्वानन्दजी थोड़ी देरमें स्वयं यहीं आ सकते हैं।

वृद्धाकी बात सुनकर ऋषिकुमार प्रसन्न हो जाता है एवं कहता है—माँ! उनकी तो हमपर अपार कृपा है ही। जो हो, अब तो हमें मध्वानन्दकी बाट देखनी पड़ेगी, नहीं तो वह मुझे ढूँढता हुआ भटकता रहेगा।

वृद्धा बड़ी उत्फुल्लताकी मुद्रामें कहती है—अवश्य, अवश्य, वे निश्चय ही आयेंगे। आपसे मिल गये होते तब तो शायद नहीं भी आते, पर जब अबतक वे आपसे नहीं मिले हैं तो वे अवश्य यहाँ आ ही रहे होंगे।

कुछ रुककर वृद्धा बड़ी विनयके साथ पुनः कहने लगती है—ऋषिकुमार! ब्रह्मचारी मध्वानन्दने हमपर बड़ी कृपा की है। उन्होंने मुझे आपकी बहुत-सी बातें बतायी हैं, इसीलिये आपके चरणोंमें कुछ निवेदन करना चाहती हूँ।

ऋषिकुमार सरल हँसी हँसकर कहता है—मध्वानन्द आधा पागल है। माँ! उसकी बातपर तुम विश्वास मत करना।

अब बड़े प्रेमसे वृद्धा एवं ऋषिकुमारमें बातें होने लगती हैं। वृद्धा भूमिका बाँधकर ऋषिकुमारको अपने घरमें होनेवाली द्वादशवर्षीय सूर्य-पूजामें आचार्य बननेके लिये आग्रह करना प्रारम्भ करती है। ऋषिकुमार सर्वथा असम्मति प्रकट करता है, पर वृद्धा तरह-तरहकी युक्ति रच-रचकर ऋषिकुमारको राजी करना चाहती है। ऋषिकुमार बड़ी कठिनतासे आज-आज पूजा करा देनेकी हाँमी भरता है। वृद्धा बार-बार प्रतीक्षा कर रही है कि मध्वानन्द ब्रह्मचारी आ जायें तो फिर मेरा काम बने। इसी समय एक सुन्दर बालक दक्षिणकी तरफसे आता है तथा वृद्धाको प्रणाम करके कहता है—माँ! आज हम लोगोंकी यमुना-पूजा प्रारम्भ होगी। एक मास लगातार पूजा होगी। इसीलिये मैं सीधे रायाणघाटसे आपके घर दौड़ा गया। वहीं सूचना मिली कि आप सूर्य-मन्दिरमें गयी हैं, इसलिये यहाँ आया हूँ। अब आज आपको खेत जाना हो तो तुरंत चली चलें। नावसे पार उतार दूँगा तथा एक घड़ीमें ही खेतसे वापस भी